॥ श्रीहरिः ॥

140

श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

एक जिज्ञासु

॥ श्रीहरिः ॥

निवेदन

भगवत्प्रेम-प्राप्ति और भगवान्‌से तादात्म्य स्थापित करनेमें भक्ति-संगीतका महत्त्वपूर्ण स्थान है। मीराँके भजन, सूर-तुलसीके पद और महाप्रभु चैतन्यकी प्रेममयी सस्वर संकीर्तन-साधना आज भी सर्वसामान्यको आकृष्ट करने और भाव-तन्मयता प्रदान करनेमें सक्षम है। तभी तो भावमय भजनोंका एकान्त सेवन, सामूहिक गायन अथवा सस्वर नामकीर्तन प्रेम-भक्ति-साधनाका एक महत्त्वपूर्ण माध्यम और सुगम साधन माना जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक भगवान् श्रीराम तथा भगवान् श्रीकृष्णके पद्यमय गुणानुवाद एवं लीला-प्रसङ्गोंसहित कुछ स्फुट भावमय भजनोंका संग्रह है। इसके पहले यह 'श्रीरामलीला-भजनावली' और 'श्रीकृष्णलीला-भजनावली' के नामसे दो अलग-अलग भागोंमें प्रकाशित हो चुकी है। अब 'श्रीराम-कृष्णलीला-भजनावली' के नामसे वे दोनों भाग कुछ संशोधन और परिवर्द्धनके साथ आपकी सेवामें अर्पित हैं। कुछ नये पद जो परिशिष्टके रूपमें पुस्तकके अन्तमें दिये गये थे, उन पद्योंको यथास्थान पद्योंके क्रममें जोड़ दिया गया है। एक जिज्ञासुद्वारा संकलित एवं कुछ स्वरचित भजनोंका यह संग्रह सरल हिन्दी एवं समझनेयोग्य राजस्थानी भाषामें है, जिसपर सुललित व्रजभाषा-शैलीका भी प्रभाव है। इन भजनोंको बार-बार पढ़ने एवं सस्वर भावसहित गायन करनेपर प्रेम और आनन्दकी अनुभूति सम्भव है।

आशा है, भगवत्प्रेमी महानुभाव, श्रद्धालु माताएँ, भावमयी देवियोंसहित सरलहृदय बालकोंके लिये भी यह भजनावली अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध होगी। अतः सभीसे इससे विशेष लाभ उठानेकी प्रार्थना है।

—प्रकाशक

अर्पण

मेरे प्यारे प्रभो!

आपकी ही शक्ति, आपकी ही सामग्री और आपकी ही समझके द्वारा, आपका ही गुणानुवाद कथन करनेके बहाने, गँवारू भाषामें अन्ट-सन्ट-जैसी भी तुकबन्दी मिलान करनेकी यह बाल-चपलता हुई।

आप इस अपनी ही प्रिय वस्तुको अपने अभय पादपद्मोंमें सहर्ष स्वीकार करके दासपर अति प्रसन्न हो जाइये।

ऐसा क्यों?

मैं आपका हूँ, इसलिये!

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीरामलीला-भजनावली

पद-सूची

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीकृष्णलीला-भजनावली

पद-सूची

आरती

ॐ जय जानकिनाथा, हो प्रभु जय श्री रघुनाथा।
दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता॥ ॐ॥

तुम रघुनाथ हमारे, प्राण पिता माता।
तुम हो सजन सँगाती, भक्ति मुक्ति दाता॥ ॐ॥

चौरासी प्रभु फन्द छुड़ावो, मेटो यम त्रासा।
निश दिन प्रभु मोहि राखो, अपने संग साथा॥ ॐ॥

सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, संग चारौं भैया।
जगमग ज्योति विराजत, शोभा अति लहिया॥ ॐ॥

हनुमत नाद बजावत, नेवर ठुमकाता।
कंचन थाल आरती, करत कौशल्या माता॥ ॐ॥

किरिट मुकुट कर धनुष विराजत, शोभा अति भारी।
मनीराम दरशन कर, तुलसिदास दरशन कर,
पल-पल बलिहारी॥ ॐ॥

जय जानकिनाथा हो प्रभु, जय श्री रघुनाथा।
हो प्रभु जय सीता माता, हो प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता,
हो प्रभु जय चारौं भ्राता, हो प्रभु जय हनुमत दासा,
दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता॥ ॐ॥

श्रीभागवतजीकी आरती

श्री भागवत मुकति की दाता, जगत की माता।
भवसागर की नौका है जी, कृष्ण मिलन का मौका है जी॥ १ ॥
ब्रह्माजी बीज दियो नारद नें, नारद वृक्ष लगायो है जी।
वेदव्यास जी करी है पालना, दीन्हा मुनि शुकदेव ने जी॥ २ ॥
श्री भागवत जी के द्वादस डाला, तीन सौ पैंतीस टहनी है जी।
सहस अठारह साखा कहिजे, पान पुषब बिन गिनती का जी॥ ३ ॥
कहे परिक्षित सुनो मुनीजी, किन्ह बिध परगट कीन्ही है जी।
जिन्ह बाँची तिन्ह मोहि बताओ, फेर न पावौं मौका है जी॥ ४ ॥
बरनत सुक मुनि सुनो परिक्षित, गंगा के घाट बँचाई है जी।
गऊकरन धुँधुँकारी कारन, सपताह बाँच सुनाई है जी॥ ५ ॥
ग्यान विराग भगति का बेटा, ज्यांने परगट देखी है जी।
सब मिल देवी देवता पधार्‌या, कृष्ण नाम धुन लागी है जी॥ ६ ॥
सहस अठासी रिषियन्ह माहीं, सोहत मुनि सुकदेव है जी।
हात जोड़कर करी है प्रार्थना, चरनाँ सीस नवाया है जी॥ ७ ॥
सात दिनाँ तक सुनी परिक्षित, सुनकर ध्यान लगाया है जी।
बैठ विमान बैकुण्ठ सिधार्‌या, फूलाँ मेह बरषाया है जी॥ ८ ॥
जो भागवत सुने नर नारी, मुकती भगती पावे है जी।
कृपा करो श्रीकृष्ण मुरारी, पार करो अब नौका है जी॥ ९ ॥

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीरामलीला-भजनावली

(शिव-पार्वती-विवाह)

(१)

देखो री सखी रँग बनड़ो त्रिपुरारी।
पारबती की सखियाँ सहेली, हिल मिल गावे गारी॥ टेर॥
भषम रमाइ बाघंबर पहर्यो, गल मुँडमाला धारी।
कर तिरशूल बजावत डमरू बैलन की असवारी॥ १ ॥
भूत पिशाच बराती बणग्या, नाचत दे दे तारी।
सरप गले बिच फूँ फूँ करत है, डर भागे नर नारी॥ २ ॥
शीश जटा बिच गंग विराजे, भाल चंद्र छबि भारी।
निरखत ही सब पाप नशाये, महिमा अपरमपारी॥ ३ ॥

(२) तर्ज—मूँदड़ी

थाँने किस बिध गावाँ गारी रायेवर एकला जी।
हिलमिल गावे सखियाँ सारी सिवजी एकला जी॥ टेर ॥
रुच-रुच जीमो जी त्रिपुरारी, थाँ पर पल पल म्हे बलिहारी,
थाँने जनम दियो कुण नारी, थाँरा बाप कठे महतारी॥ बैठया॥
थाँरे भाई ना भौजाई, थाँरे चाची नहिं है ताई,
थाँरे बहन नहीं माँ जाई, म्हारे लागो आप जँवाई॥ रहवो॥
थाँरे नानी नहिं है नाना, थाँरे सब दिन एक समाना,
थेतो सन्तांसूं नहिं छाना, थे तो करो रामरस पाना॥ बैठया॥
थांरे भूवा नहिं है मौसी, थाँरा जच्छ कुबेर पड़ौसी,
थांने जाणे पन्डित जोशी, थांने भज्याँ सरब सुख होसी॥ राये ॥
थांरे चाचा नहीं भतीजा, थांरे ना कोई फूँफा जीजा,
थांरा ज्ञाननेत्र है तीजा, थांने निरख-निरख कर रीझां॥ राये ॥

जीमण बैठ्या सकल-बराती, सुण-सुण खुशियाँ नही समाती,
भोजन परुस रया बहु भाँती, मंगल गीत अप्सरा गाती॥ राये ॥

(३) तर्ज—गोपीचन्द लावणी

लाडलड़ी गौरी सेवा नित कीजो भोलानाथ की।
लाडलड़ी बेटी पूजा नित कीजो भोलानाथ की॥ टेर॥
मैना पारबतीने अपनी गोदी में बैठावे
हृदय लगाय हात सिर पर धर पतिव्रत धर्म सिखावे है॥ लाड ॥ १ ॥
पतीदेव परमेश्वर थांरा पती है प्राणाधार
पती शीश की चुड़ामणी है पती गले को हार हे॥ लाड॥ २ ॥
धरम करम में रहो संगिनी हित की संमत दीजो
प्रथम जिमावो पतीदेवको फिर भोजन कर लीजो हे॥ लाड॥ ३ ॥
पती कहे सो करो निरन्तर पती की रुखमें चालो
अपनी चाह कछू मत राखो बात कभी मत टालो हे॥ लाड॥ ४ ॥
तन मन वचन प्राण अरपण कर रहो पतीके लार
दान पुण्य तीरथ व्रत संयम, सकल धरमरो सार हे॥ लाड॥ ५ ॥

(४) तर्ज—थे कहो बाबाजी सांची

म्हारी पारबतीरा पिवजी एक अरज सुनो थे शिवजी॥ टेर॥
हिमवंत मेनका राणी, यूं बोले गद्‌गद बाणी।
गिरजा चरणांरी दासी, स्वीकार करो अविनासी॥ १ ॥
म्हारी छोटी सी है लाली, अति लाड कोडसों पाली।
या संग आपके चाली, प्रभु आप करो रखवाली॥ २ ॥
एक दिन नारद ऋषि आया, गिरजाका भाग्य सराया।
या शिवशंकर वर पासी, या जगत् मात कहलासी॥ ३ ॥
जब सुणी गुरुकी बाणी, तपस्या करनेकी ठानी।
या सूखा पत्ता खाया अति दुरबल हो गइ काया॥ ४ ॥

एक महर कृपाकी कीजो, मत कठिन परीक्षा लीजो।
सुनि सास ससुरकी बाणी, हरषित भया अवढर दानी॥ ५॥

(५) तर्ज—गुमानीड़ा ख्याली

म्हारो हेलो, म्हारो हेलो, जगतपति झेलो,
सकलरा स्वामी! जगतरा जामी! देवाँ दल शरणे आयो॥ टेर ॥
म्हे तो हार्‌या, म्हे तो हार्‌या, रावणरा मार्‌या॥ सकल॥
यो तो पापी, यो तो पापी, हिंसा ने थिरथापी॥ सकल॥
या तो धरती, या तो धरती, पुकारे थांने मरती॥ सकल॥
प्रभु आवो, प्रभु आवो, म्हारी विपत्ति मिटावो॥ सकल॥
म्हारी पीड़ा, म्हारी पीड़ा, मिटावो करो क्रीड़ा॥ सकल॥

(६) तर्ज—डरपो मती रे

डरपो मती, म्हे तो थाँरी सहाय करस्यां, डरपो मती॥ टेर॥
भजन कियो दशरथ कौशल्या, अवधपुरी अवतार धरस्यां॥ १॥
जनकघरां महामाया जनमे, शिव धनु तोड़ उणाने वरस्यां॥ २॥
ले बनवास करां सब कारज, राक्षसियारी धुलाई करस्यां॥ ३॥
सकल देव बनचर तन धारो, म्हे थाँरे सामिल रहस्यां॥ ४॥

राम-जन्म

(७)

मात कौशल्या घर आनन्द छायो हे,
तिरलोकीनाथ सुत बण आयो हे,
सहेल्यो हे, मंगल गावो हे॥ टेर॥
ऊंची तो चढ़ डागलिए, थाल बजावो हे,
गुरूजीने बेगा बुलावो ये सहेल्यो हे॥ मंगल॥ १॥
माणक मोतीड़ाँरो चौक पुरावो हे,
सुबरण कलश सजावो हे सहेल्यो हे॥ मंगल॥ २॥
मात कौशल्याजीने पाटे बिठाओ हे,
सोलह शृंगार सजाओ हे सहेल्यो हे॥ मंगल॥ ३॥

मात कौशल्याजीने पीलो ओढ़ावो हे,
गहना रतनांरा पहनावो हे सहेल्यो हे ॥ मंगल ॥ ४ ॥
बाजा बजावणियांने नेग दिरावो हे,
अन्न धन रतन लुंटावो हे सहेल्यो हे ॥ मंगल ॥ ५ ॥

(८) तर्ज—सहेल्यां हे आम्बो मोरीयो

सहेल्यो हे आम्बो मोरीयो।
मोर्‌यो मोर्‌यो हे, दशरथजी रे द्वार ॥ स० ॥ टेर ॥
आ तो फूली कौशल्या मावड़ी,
फूल्या फूल्या जी दशरथ अवधेश ॥ स० ॥ १ ॥
ओ तो फूल्या अवधरा नर नारी,
फूल्या फूल्या जी जड़-चेतन जीव ॥ स० ॥ २ ॥
म्हारा संत वैरागी फूलीया,
प्रगट्यो है जी जग प्रेम प्रभाव ॥ स० ॥ ३ ॥
काईं सुख वरणू दशरथजीरो,
मैं तो गावूं हे कौशिल्यारी गोद ॥ स० ॥ ४ ॥
ऐ तो च्यारूँ लला चिरँजीवज्यो,
शिवजीरा हे हिवड़ेरा है हंस ॥ स० ॥ ५ ॥

(९) तर्ज—माता सेडलरे दरबार

राजा दशरथ रे दरबार, बाजा बाज रया।
तिथि नौमी मंगलवार, बाजा बाज रया ॥ टेर ॥
भगवान लिया अवतार, बाजा० प्रगट्या जग रा करतार, बाजा०
माता लिछमी रा भरतार, बाजा० बन्या छोटा सा राजकुमार, बाजा०
कियो सब जग रो उपकार, बाजा० उतरे सब धरती रो भार, बाजा०
आया निरखण ने नर नार, बाजा० सँग आया है ले परिवार, बाजा०
आया ब्राह्मण संत अपार, बाजा० आया देवरिषी मुनि द्वार, बाजा०

आया शिव ब्रह्मादिक द्वार, बाजा० सब बोलरया जै-जैकार, बाजा०
धरणीं पर छाई बहार, बाजा० बाजे ढ़ोलक शंख नगार, बाजा०
सँग झाँझर की झनकार, बाजा० बाँधो घर-घर बंदनवार, बाजा०
करो जीमण की मनुहार, बाजा० बरषाओ पुषप अपार, बाजा०

(१०) तर्ज—पनिहारी जोधपुरी

चैत सुदी नवमी तिथि रघुनन्दनजी, प्रगट्या रामकृपाल राघवजी। १।
शिव ब्रह्मा इन्द्रादिकाँ रघुनन्दनजी, अस्तुति रचे रसाल राघवजी। २।
प्रेममई प्रकृति हुई रघुनन्दनजी, आनन्द छायो अपार राघवजी। ३।
हरषहुयो सब लोकमें रघुनन्दनजी, सुखीसकल संसार राघवजी। ४।
देवलोक दुंदुभी घुरी रघुनन्दनजी, बरषे पुषप अपार राघवजी। ५।
परम महोत्सव आजरो रघुनन्दनजी, वाणी बरण्यो न जाय राघवजी। ६।

(११) तर्ज—घूघरी

चालो सखियाँ दशरथजी रे द्वार,
अनोखी चरचा म्हे सुणी जी म्हारा राम॥ टेर॥
दशरथजीरे प्रगट भया सुत च्यार,
भरपूर बधाई म्हे लेस्यां जी म्हारा राम॥ १॥
नख शिखसूं सब सज सोलह शृंगार,
कोयल सी मीठी गा रही जी म्हारा राम॥ २॥
दहि दुरवा गोरोचन सुवरण थाल,
ले राज दुवारे आगई जी म्हारा राम॥ ३॥
हिवड़े माहीं हरष्या अवधनरेश,
महलासुं हेटा ऊतर्याजी म्हारा राम॥ ४॥
मोहर रतनरा खोल दिया भण्डार,
कोई भावे जितरा लेरया जी म्हारा राम॥ ५॥

गज रथ घोड़ा और दूझन्ती गाय,
विपरांने नृपती देरयाजी म्हारा राम॥ ६॥
सब मिल ब्राह्मण देवे है आसीस,
बन्दीजन विरद उचारियाजी म्हारा राम॥ ७॥
बधज्यो जी दशरथजी थाँरी बेल,
म्हारी मनस्या पूरण थे करी जी म्हारा राम॥ ८॥

(१२) तर्ज—हरे रामा

चारौं ललवा प्रगट भये आज, अवधमें लडवा बटे।
चारौं भैया प्रगट भये आज, अवधमें लडवा बटे॥ टेर॥
लडवा बटे रे, ढ़ोल धुरे रे, झीनी-झीनी उड़े रे गुलाल॥ १ ॥
बानरवाल बँधावो मेरी बहना, परदे लगावो जरीदार॥ २ ॥
मोतियन चौक पुरावो मेरी बहना, सुवरणके कलश सजाय॥ ३ ॥
केशर कस्तूरी की भरदो तलैयाँ, बरसादो मूसलधार॥ ४ ॥
गैयाके दूधकी खीर घुटावो, ब्राह्मण जीमावो अपार॥ ५ ॥
छटी पुजावो गीत सब गावो, मोहरों की करदो उछाल॥ ६॥

(१३)

जीओ जीओ लला, मेरे चार लला,
तोर करेंगे भगवान भला॥ टेर॥
पाँव पैंजनियां नाचे, थैया, थैया, तोतरी बोली में बोले मैया मैया॥ १ ॥
पाँव पैंजनियां नाचे थैया, थैया, भरत पुकारे भैया भैया॥ २ ॥
गोदी में ना आवे किलकार करत, रामजी पुकारे भरत भरत॥ ३ ॥
हिल मिल खेले सँग सखन सखन, रामजी पुकारे लखन लखन॥ ४ ॥
बोली नहीं आवे हिय प्रेम लसे, शत्रुहन रामजी को निरखि हँसे॥ ५ ॥

(१४) तर्ज—कीर्तन धुन

दशरथजीके चारों लाल दिन-दिन नीके लागे॥ टेर ॥
केकईके घर बँटत बधैया, कौशल्याके घूमत निशान॥ दिन०॥
केकई बाँटे मोहर असरफी, कौशल्या हीरा-मोती-लाल॥ दिन०॥
केकई बाँटे शाल-दुशाला, कौशल्या बाँटत रूमाल॥ दिन०॥
केकई बाँटे नगर बतासा, कौशल्या बाँटे नागर पान॥ दिन०॥
लखन-शत्रुहन सुमित्रा जाये, भरत है केकई के लाल॥ दिन०॥
तुलसीदास भजो भगवाना, प्रगटे कौशल्याजी के राम॥ दिन०॥

(१५) तर्ज—नैनोंमें नीन्द भर आई,

खेलत चारों भाई अवध माहीं॥ टेर॥
चारि जतनके खेल बनाये। फूलन गेंद बनाई॥ अवध०॥
हात झुंझनियाँ पाँव पैंजनियां। खेलत ताता थेई॥ अवध०॥
शीश मुकुट मकराकृतकुण्डल। मोतियन माल सुहाई॥ अवध०॥
तीन लोककी सकल संपदा। अवधपुरी चलि आई॥ अवध०॥
शुक सनकादिक अरु ब्रह्मादिक।शेष सहस मुख गाई॥ अवध०॥
निर्मल जल सरजूको पावन। शीतल पवन सुहाई॥ अवध०॥
तुलसीदास आश रघुवरकी। हरष-हरष जस गाई॥ अवध०॥

(१६) तर्ज—काईं बाऊँ काशीजी में

कहवे डाढ़ी सुण डाढ़ण एक बात कहूँ अनमोल।
म्हारे सँगमें चालणेरो करले पहली कोल॥
कहवे डाढ़ण सुण हो डाढ़ी, चालूँ थाँरे साथ।
इतरी खुशी भई के कारण, कहो मरमरी बात॥
डाढ़ण भाग खुलग्या ये,
राजादशरथजीरे बेटा च्यार हूग्या ये॥ टेर॥

मोहराँरा रतनांरा अब तो भरलेस्याँ भण्डार।
देरी मत कर बेगीसी अब हो ज्या म्हारे लार।
पुगांला सूरज ऊग्याँ हे॥ १॥
हाथी घोड़ा ऊँट लेस्याँ बकरी भेड़ अपार।
अण गिणतीरी गायाँ लेस्याँ, बलद पचास हजार।
राजनें मुजरो करस्याँ हे॥ २॥
चरुड़ा भर भर लेस्याँ, आपां मिसरी मेवा दाख।
हेली लेस्याँ नोहरा लेस्याँ खेती बीघा लाख।
धानरा कोठा भरस्याँ हे॥ ३॥
लेस्याँ लेस्याँ करतां बांरी छोड़ां कोनी लार।
खोज्यासी तो और लेता रहस्यां बारम्बार।
सदा गुण गाता रहस्यां हे॥ ४॥
बरतण भांडा लोटा थाली कट्टोरी गिलास।
रेशमरा बणियोड़ा लेस्याँ ढ़ोलिया पच्चास।
लदाकर घर लेज्यास्याँ हे॥ ५॥
चोली कबजा धोती लहँगा सोड़ सोड़िया साठ।
ठाकर ठकुराणीस्यूं आपां रहवां कोनी घाट।
ठाटस्यूं मौज उड़ास्यां हे॥ ६॥
गोटेदार अँगरखी लेस्याँ धोती लाल किनार।
मखमलरा तो जूता लेस्याँ साफो जरीदार।
दुपट्टो चोखो लेस्याँ हे॥ ७॥
च्यारूं राजकवँरने देख्यां बिन वापिस नहिं आवाँ।
मुजरो करस्याँ भेंट लेस्याँ बार-बार घर जावाँ।
आँखियां सफल करांला हे॥ ८॥

(१७) तर्ज—थे तो आरोगोजी मदनगोपाल

दायण आई हे कौशल्या थांरे द्वार, खाली हातां नहीं जाऊँ॥ टेर॥
मैं तो दायण सूरज कुलरी पीढ्यांसूं रहि आय।
पोतड़िया धोवणनें थाँरे घरपर आई चलाय।
आशा मोटी लेकर आई सरजू पार॥ खाली॥ १॥
आंगणियेमें रमता देख्या, च्यारूँ राजकुमार।
नहीं गरभसूँ जनम्या ए तो प्रगट्या जग करतार।
ए तो सारी ही सृष्टीरा सिरजनहार॥ खाली॥ २॥
मैं तो थाँरी दाई माई थे म्हारा जजमान।
पहलो नेग चुकावो देवो भगतीरो वरदान।
थाँरे चरणां शीश नवाऊँ बारम्बार॥ खाली॥ ३॥
अँखियां शीतल करूँ लालनें टुक-टुक रहूँ निहार।
नवधा भगतीरो पहनूँगी गलमें नौ लख हार।
म्हाने जुग-जुग माहीं दीज्यो नांय बिसार॥ खाली॥ ४॥

(१८)

नायणको नेग दिरावो जी म्हारे मनकी रली पुरावो॥ टेर॥
रघुकुल की नायण बाजां, म्हे बरतण थांरा मांजां
रतनांरो हार घड़ावो जी॥ म्हारे॥ १॥
एक गाय दिरावो आछी, संग छोटीसी एक बाछी।
सोनेंरा सींग मँढावो जी॥ म्हारे॥ २॥
म्हे तो थांरे हि भोजन पावां अब और कठे म्हे जावां।
थाँराहि वस्तर पहिरावो जी॥ म्हारे॥ ३॥
म्हे तो घर-घरका मिलज्यावाँ नित थांरी लीला गावाँ।
एक सत्सँग भवन बणावो जी॥ म्हारे॥ ४॥
प्रभु फेरां थाँरी मालां, मत लीज्यो म्हांसूं टाला।
भगतीरो दान दिरावो जी॥ म्हारे॥ ५॥

(१९)

कौशल्या तूं बड़ भागण हे।
अखिल भुवन रा नाथ की तूं बनगइ जामण हे॥ टेर॥
जो सत चित आनन्द घन हरि व्यापक कण कण हे।
इतरा मोटा छोटा सा बन खेले है आंगण हे॥
आसी बिस्वामित्र मुनि थांरे पुतराँने लेवण हे।
बिघन करत है जग्य में ज्यांरे पापी असुर गण हे॥
असुरां ने मार गिरावसी थांरा रघुवर लछमण हे।
मिथिलापुर में जावसी कियो राजा जनक प्रण हे॥
मारग में गौतम की नारी गई पत्थर बन हे।
चरन छुहाई पठावसी पतिलोक सहित तन हे॥
धनुवो तोड़ गिरावसी थांरो सुत रघुनंदन हे।
जनक लली ने ब्याहसी साँवल बनड़ो बन हे॥

(२०) तर्ज—द्रोपदी खड़ी सभा के

सजनी कौन शहर के राजकुंअर ये कहाँसे आए री॥ टेर॥
मिथिलाकी सखियां महलोंसे शीश झुकाये री।
राम-लखनको निरख-निरख मन मोद बढ़ाये री॥ १॥
कौन मात बड़ भागन ऐसी, जिन यह जाये री।
कौन पिता के लाल यही, सबके मन भाये री॥ २॥
एक सखी रघुवर को निरखे यों बतलावे री।
यह वर तो सीताके लायक देव मनावे री॥ ३॥
एकटक रही निहार पलक ना हटत हटाये री।
इतनेमें दोउ श्याम गौर कछु दूर सिधाये री॥ ४॥
मिथिलापुर के नर-नारिन के नैन चुराये री।
जहाँ जहाँ पग धरे परम आनन्द बरसाये री॥ ५॥

(२१) तर्ज—सूवटा जंगलको बासी

बागमें उजियाली छाई,
सीतां सखियनरे संग गवरज्या पूजणनें आई॥ टेर॥
भाग संग सखियांरो जाग्यो,
सरवरिये न्हाकर पूजा कीन्ही सुन्दर वर मांग्यो।
गुरू आज्ञासूं रघुराई,
उपवनमें आया पुषब लेणनें सँग लक्ष्मण भाई॥ बाग में० ॥ १॥
सखी एक कुञ्जनरे ओले,
जब निरख्या रघुकुलचन्द बावरीसी इत-उत डोले।
निकट जब सीताके आई,
सब सखियाँ पूछे बात बीचमें सनमुख बैठाई॥ बाग में० ॥ २॥
सखी के हाल हुयो थारो,
क्यूं फिर गई थारी नैण पुतलियाँ कुण जादू डार्‌यो।
सखी मैं बात कहूं काईं,
मुखसूं ना वरणी जाय आज अनमोल निधी पाई॥ बाग में० ॥ ३॥
गई में देखन फुलवारी,
दोय निरख्या राजकुमार तुरत सुध भूल गई सारी।
सलोना सुन्दर दोऊ भाई,
घड़घड़कर देई लगाय विधाता सारी चतुराई॥ बाग में०॥ ४॥
सहेल्यां बोल उठी सारी,
कल आया देखन शहर मोह लीन्हा सब नर-नारी।
विधाता करसी मन चाही,
वे श्याम किशोर धनुष तोड़ेला फरक नहीं राई॥ बाग में० ॥ ५॥
मगन भई सीता सुकुमारी,
जब सुनी सखीकी बात प्रेमरस उमड़ पड्यो भारी।

दरश बिन अँखियाँ अकुलाई,
कब निरखूं श्याम स्वरूप फरूके नैण भुजा बाँई॥ बाग में० ॥ ६॥
धीरज धर वैदेही आली,
सीतानें सखियाँ बाँह पकड़कर सँगमें ले चाली।
छबी रघुबर की दरशाई,
कुण लखे पुरबली प्रीति सियाजी सुधबुध बिसराई॥ बाग में० ॥ ७॥

(२२) तर्ज—चनणाँ

गिरिजा पूजण जी, सियाजी, चालिया जी कोई,
सखी सहेल्याँ साथ, सील स्वरूपा जी, टहलरया बाग में जी॥
मंगल गावे जी, सहेल्याँ सुन्दरीजी कोई,
गोरी पूजन हेत, मधुर मनोहर जी, रसीली रागमें जी॥
इण अवसरमें जी कुंअरवर आईयाजी कोई,
गुरु आज्ञा सिर धार, पुषब लेणनें जी, जनकजी रे बाग में जी॥
एक सहेली जी, सियाजी सूं बीछड़ी जी जिण,
जोया राजकुमार, हिय हुलसाई जी सियाजी सूं कह रही जी॥

(२३) तर्ज—इण सरवरियेरी पाल

हा ये प्यारी! इण उपवन में आज,
कुंवर वर पावणाजी म्हारा राज॥
हाँ ये सखी साँवल गौर स्वरूप,
घणा रलियावणा जी म्हारा राज॥
हाँ ये सखी आनन्द मंगल रूप,
हियारा हुलसावणाजी म्हारा राज॥
हाँ ये प्यारी प्रेम पुजारीरा देव,
भला मन भावण जी म्हारा राज॥

हाँ ये सखी वे बड़भागी जीव,
निरख्या यांनें नैणसूं जी म्हारा राज॥
हाँ ये प्यारी देख लताकी ओट,
समझावे सखी सैनसू जी म्हारा राज॥

(२४) तर्ज—जलालजीरे

माता हे म्हे तो राजरा, दरशण करबा आया हे।
जगजननी हे माय! म्हे तो राजरा० ॥ १ ॥
माता हे थांरा गुण गण, वेद पुराणामें गाया हे।
जगजननी हे माय! थांरा गुणगण० ॥ २ ॥
माता हे सकल सृष्टि, सुखकरणी छत्तर छाया हे।
जगजननी हे माय! सकल सृष्टि० ॥ ३ ॥
माता हे मनरा मनोरथ पूरण म्हारा कीजो हे।
जगजननी हे माय! मनरा मनोरथ० ॥ ४ ॥
माता हे रघुवर रे चरणांरी दासी कीजो हे।
जगजननी हे माय! रघुवर रे० ॥ ५ ॥

(२५) तर्ज—कहां के पथिक कहां कीन्हों गवनवा

फुलवा लिए दोय नृपके कुंअरवा॥ टेर॥
इक श्यामल इक गौर मृदुल अति
लगत हमारीसी छोटी उमरवा॥ १ ॥
हौं निरखन गई उपवन शोभा,
दृष्टि परत सखि भूली डगरवा॥ २ ॥
निरखो री आली जनककिशोरी
करलो री निज नयन सफलवा॥ ३ ॥
जिन्ह मोहिनी मिथिला पर डारी,
कल एहि देखन आये सहरवा॥ ४ ॥

निरखि लतन की ओट जनक लली,
नयन्ह सिथिल भये पलक न टरवा॥ ५॥

(२६) तर्ज—कहाँ के पथिक

सुन लक्ष्मण यह जनक-किशोरी,
करत प्रकाश फिरत उपवनमें,
आई सखियन संग पूजन गौरी॥ १॥
निरखत मेरे निरमल मनमें,
अजब प्रभाव पर्‍यो बरजोरी॥ २॥
रघुवंशिन महं कोउ नहीं ऐसो,
चलत कुमारग सत्-पथ तोरी॥ ३॥
कारन कवन बिधिहि सब जाने,
दाहिनी अंखियां ये फरकत मोरी॥ ४॥

(२७) तर्ज—कसुमो

राजा जनकजी डूंडो पिटवायो, राजा जनकजी हेलो फिरवायो।
जोधा सब कोई आवो जी है नूतो॥ टेर॥
जितरा धरती पर सब राजा, हेलो मार बजा देवो बाजा।
सबने खबर जणावो जी है नूतो॥ १॥
जो शिव धनुष तोड़ दिखलावे, जयमाला सीता पहिरावे
क्यूं नहिं लाभ कमावो जी, है नूतो॥ २॥
ओ नूतो नहीं खीर खावणरो, ओ नूतो नहिं गीत गावणरो
बल अपणू दिखलावो जी है नूतो॥ ३॥

(२८) तर्ज—भज बालकृष्ण गोपाल

ओ धनुष बड़ो बिकराल रघुबर छोटो सो॥ टेर॥
कमल जिसो तन रामरो, ओ धनुष वज्रसो जाण,॥ रघु०॥

बड़ो कठिन प्रण पिता कियो, कोई रंच न कियो विचार, ॥ रघु० ॥
छोटो छोटो मत कहो, ओ पूर्ण ब्रह्म अवतार, ॥ रघु० ॥
सूरज छोटोसो लगे, सब जगमें करे प्रकाश, ॥ रघु० ॥
छोटो-दूजको चन्द्रमा, सब दुनियाँ जोड़े हात, ॥ रघु० ॥
धनुष चढ़ो चाहे मत चढ़ो, म्हारो राम भंवर भरतार, ॥ रघु० ॥
रघुवर धनुष चढ़ावसी कोइ इणमें फेर न फार, ॥ रघु० ॥

धनुष-यग्य-शाखोचार

(२९)

परथम सुमिरूँ सारदा, गौरी पुत्र गणेस।
कोटि बिघ्न टाले सदा बंदउँ उमा महेस॥
धनुष जग्य उपलच्छ को, बरणूँ साखोचार।
नाम लेत रघुनाथ को, उबरे सब नर नार॥
रच्यो स्वयंबर जनकजी हेलो दियो फिराय।
जो तोड़े सिव धनुष को, सीता देऊँ ब्याह॥
सुणत सभा के बीचमें, आया बीर अनेक।
कुण जाणे किण भाग्य में, संग सिया को लेख॥
कोई मूँछ मरोड़ता, कोई करे सिणगार।
कोई छाती ताण के, उचके बारमबार॥
कोई नृप पंचाङ्ग में, देख रयो तकदीर।
कोई दरपण हाथ ले, निरख रयो तसबीर॥
कोई दाँत घसीट तो, कोई ठोके ताल।
कोई मनावे देवता, कब पहरूँ जयमाल॥
एक बीर उठ चल पड़्यो, भोत दिखायो जोर।
पिंडल्याँ धूजण लाग गी, देख धनुष की ओर॥
दूजो दोड़्यो क्रोध सूँ, कसकर भींची जाड़।
हाथ लगायो धनुष के, राफाँ दीन्ही फाड़॥

तीजो नाक फुलाय के, दोड़्यो कर फूँकार।
धनुष देखकर चढ़ गई, डिगरी च्यार बुखार॥
चोथो चाल्यो सुगन ले, पोथी पतड़ो साथ।
धनुष देखकर आगई, आँख्याँ आडी रात॥
पंचम इष्ट मनाय के उठ्यो पायचा मार।
मारग माहीं गिर पड़्यो दाँत टूटग्या च्यार॥
छट्ठो कमर कसी घणीं, उठे उठ्यो नहिं जाय।
देवो सहारो भाइयाँ, आयो करणें ब्याह॥
अण गिणती रा बीर है, किण बिध करूँ बखाण।
थोड़ी सी ल्यो बानगी, परखो सौ मण धान॥
इण बिध जोधा आप की, करी फजीती आप।
पच पच रड़काँ काढ़ली, रहग्या राग अलाप॥
कइ मिल जोधा साथ में, लग्यां उठावण चाप।
धनुष हिलायो ना हिल्यो, आखिर बैठ्या धाप॥
सब की गरदण झुक गई, लाग रही धकधूण।
च्यारूँ तरफ निजर करे, धनुष उठावे कूण॥
तब उठ बोल्या जनकजी, बीर न जगमें कोय।
बचन सुणत श्रीजनक के, कोप लखण कूँ होय॥
सेन करी श्रीरामजी, मन में राखो धीर।
गुरु को सीस नवाय के, धनुष लियो रघुबीर॥
नृप असुरन को रामजी, सकल तेज हत कीन्ह।
धनुष तोड़ टुकड़ा कर्‌या, बर माला तब लीन्ह॥
हरष हुयो तिहुँ लोक में, सुखी हुया नर नार।
देव पुषब बरषा करे, बोले जै जै कार॥

धनुष भंज

(३०)

गुरु चरणाँ में सीस नवा के, रघुवर धनुष उठायो जी,
नारायणजी परमेसरजी ॥ टेर ॥
लेत चढ़ावत कोई न देख्यो, झट पट तोड़ गिरायो जी ॥ ना० ॥
तीन लोक अरु भुवन चतुर दस, सबद सुनत थररायो जी ॥ ना० ॥
धरणीं डगमग डोलन लागी, सेस नाग चकरायो जी ॥ ना० ॥
चीख मारता जीव जंगल रा, हाको हाक मचायो जी ॥ ना० ॥
कच्छ मच्छ अति चिमकण लाग्या, सबद कठेसूं आयो जी ॥ ना० ॥
देव असुर गण बिकल हुया, कानां पर हाथ दबायो जी ॥ ना० ॥
सूरबीर सब धूजण लाग्या, ऊपर मूंडो बायो जी ॥ ना० ॥
धनुष भंग की बात सुणी तो, जैजैकार मचायो जी ॥ ना० ॥

(३१) तर्ज—जय रघुनन्दन जय सियाराम

तोड़ दीया तोड़ दीया तोड़ दीया रे,
रामजीने धनुवा तोड़ दीया रे ॥ टेर ॥
देश-देशके राजा आये, सबका नीचे मुख मोड़ दीया रे ॥ १ ॥
उठा न धनुष हारगए जोधा, सबका घमंड निचोड़ दीया रे ॥ २ ॥
चिन्ता जनकराजकी मेटी, सियाजीसे बन्धन जोड़लीया रे ॥ ३ ॥

(३२) तर्ज—वनमें देख्या दोय

सांवरी सूरत म्हारे मन में बसी।
मनमें बसी हो म्हारे दिलमें बसी ॥ टेर ॥
छोटे-छोटे चरन कमल दल लोचन,
एजी वे तो धनुष उठावन कमर कसी ॥ १ ॥
तोड़्यो हैं धनुष किया दोय टुकड़ा,
एजी सब भूपन के मन संक धसी ॥ २ ॥

जानकी हात लिये वर माला,
एजी वा तो रघुवर ने पहनाय हंसी ॥ ३ ॥
तुलसीदास आस रघुवर की,
एजी वाँके चरन कमल में सुरता बसी ॥ ४ ॥

(३३) तर्ज—भज बालकृष्ण गोपाल

झुकज्यावो राजकुमार, झुकणू पड़सी जी ॥ टेर ॥
जयमाला ले हातमें, म्हारी सीता रहि पहनाय ॥ १ ॥
म्हारी सीता छोटीसी, थे बड़ा घणा सरकार ॥ २ ॥
म्हारी सीता भोलीसी, थे चतुरांरा सिरदार ॥ ३ ॥
म्हारी सीता गोरीसी, थे श्याम बरण रघुराज ॥ ४ ॥
जनकपुरीकी नारियां, कोई हँस-हँस गावें गारि ॥ ५ ॥
दूर खड़या लक्ष्मण तके, वे टेड़ी नजर पसार ॥ ६ ॥
देखत-देखत झुकगया, वे तीन लोकरा नाथ ॥ ७ ॥
जयमाला पहना दई, तब हरष्यो सारो साथ ॥ ८ ॥

(३४) तर्ज—एक रणत भंवरसूं आया विनायक

तोड़यो धनुष रघुनाथ जद राजा जनक हरषाइया।
पाती तो लिख भेजी अवधपुर दूत लेय पठाइया॥
पाती तो पढ़ दशरथजी हरष्या राण्याँनें बाँच सुणाइया।
सुन भरत शत्रूघनजी पुलक्या आज भया मन चाइया॥
खुश खबरि सुण उमड़ी अवध नर-नारी मंगल गाइया।
महलां बजारां हाट गलियां नगर सुभग सजाइया॥
गणपतिरी पूजा प्रथम करि गिरिजा महेश मनाइया॥

(३५)

प्यारे राम बना, रघुनाथ बना, रघुकुल के बना।
जरा धीरे धीरे पांव मेलो लला ॥ टेर ॥

जामा रेशम पिताम्बरका धारो बना,
दुपटा कन्धेपे टेढ़ा सँवारो बना।
ठण्डी नजरोंसे हमको निहारो बना॥ जरा० ॥ १ ॥
मोर मस्तकपे सीधा धरावो बना,
तनपे रतनोंके गहने सजाओ बना।
केशर चंदनके तिलक लगावो बना॥ जरा० ॥ २ ॥
नैण कमलोंमें कजरा लगावो बना,
मुखमें ताम्बुलका बीरा चबाओ बना।
छोटे हातनमें महन्दी लगावो बना॥ जरा० ॥ ३ ॥
दायें कन्धेपे तरकस कसावो बना,
बायें कन्धेपे धनुवा लगावो बना।
चढ़के घोड़ेपे छम-छम नचावो बना॥ जरा० ॥ ४ ॥
मिथिला नगरीकी गलियोंमें जावो बना,
नारी पुरुषनको दर्शन दिखावो बना।
ब्याह करके अवधपुर पधारो बना॥ जरा० ॥ ५ ॥

(३६) तर्ज—पोढ़ो स्वामी द्वारका

रामल म्हारो बनड़ो बणसी आज,
रामू म्हारो दुलहो बणसी आज॥ टेर॥
मात कौशल्या मंगल गावें, इत उत कर रही काज॥ १ ॥
जनकपुरीसों पाती जी आई, सजलेवो मंगल साज॥ २ ॥
जनक सभा में धनुवो तोड़्यो, भूप सकल गया लाज॥ ३ ॥
मात कौशल्यारा कंठ बैठया, धीमीसी आवे है आवाज॥ ४ ॥
ब्राह्मण मिल सब मन्त्र उचारे, जुड़रयो सबही समाज॥ ५ ॥

(३७) तर्ज—सासू निरख जंवाई हे

सासू निरख जँवाई हे, सियावर साँवरो।
ओ तो है जन रंजन हे, निरंजन नांवरो॥ १ ॥

ओ तो सहज सलूणू हे, है सरल सुभावरो।
गोतम त्रिय तारी हे, है प्रगट प्रभावरो॥ २॥
जग-जीतणहारो हे, दीखणमें ही डावड़ो।
सिव-धनुष चढ़ायो हे, राख्यो प्रण रावरो॥ ३॥
हियरो उजियालो हे, प्राणांरो प्राण सो।
निधि है नयणांरी हे, है प्रेम-प्रमाण-सो॥ ४॥
ए तो भाग बड़ा है हे, भला मन भावणा।
परमेसर प्यारा हे, पधार्‌या है पावणा॥ ५॥

(३८) तर्ज—तोरण आयो रायेवर

सुधड़ सलोनू सखी साँवल बनड़ो आयो राज।
जनकपुरीरे नर नार्‌याँरे मन भायो राज॥
धन हो कौशल्या समधण श्याम वरण सुत जायो राज।
निरख्या जद राम बनांने कामदेव शरमायो राज॥
सासू सुनयना हिवड़े हरष घणेरो छायो राज।
सीता सतवन्ती बेटी साँवल वर तूं पायो राज॥
सुणो हे सहेल्याँ बनड़ो कामण गारो आयो राज।
मुनी-यज्ञरी कर रखवारी, पसगर सहित ताड़का मारी॥
गौतम नार अहिल्या तारी, संग मुनीरे आया।
तोड़यो धनुषने सारो राज समाज लजायो राज॥
इसड़ा कामण म्हारे रघुवरजीनें सोहे॥

(३९) तर्ज—हो जी बना घुड़ला थे भला ल्याय

हाँ ये सखी राजा जनकजीरी पोल,
नवल बनु आयो ये हाँ ये, हाँ ये॥ टेर॥
हाँ ये सखी जनकपुरीरा नर-नारि, साराँरे मन भायो ये॥ १ ॥

हाँ ये सखी धन ज्याँरा मायर बाप, सुन्दर सुत जायो ये॥ २ ॥
हाँ ये सखी तारी गोतमजीरी नारि, चरण परसायो ये॥ ३ ॥
हाँ ये सखी तोड़्यो धनुष उठाय, नृपति हरषायो ये॥ ४ ॥
हाँ ये सखी धन-धन जनककुमारि, साँवल वर पायो ये॥ ५ ॥
हाँ ये सखी निरख बनारी मरोड़, मदन शरमायो ये॥ ६ ॥

(४०)

मिथिलापुर माहीं झाँकी अनोखी दुलहा राम की॥ टेर॥
तिरछा नैण अलक घुंघरारी तिलक भाल पर आला।
सीस मुकुट काना में कुण्डल रतन मणीं री माला जी॥ १ ॥
कटि पिताम्बर अचकन ऊपर बेल बनी जरितारी।
तरकस धनुष दुपट्टे ऊपर झलकत कोर किनारी जी॥ २ ॥
पांव नुपुर हाताँ में कंकण, मुंदरी महँदी न्यारी।
छत्र चँवर माथे पर सोहे, अजब खिली गुल क्यारी जी॥ ३ ॥
जीन-जड़ाव जड़्यो सुबरण रो, मोत्यां जड़ी लगाम।
घोड़े के पग घूघंर बाजे, दुलहा पूरण काम जी॥ ४ ॥
मधुर-मधुर शहनैया बाजे, पड़े नगाराँ चोट।
झाँक रही मिथिला की सखियाँ, कर घूंघट की ओट जी॥ ५ ॥
ऐसी कोण अभागण आँनि, निरखण ने नहिं आवे।
देख छबी रघुवर की सजनीं, हियो उछाला खावे जी॥ ६ ॥
नगर निवासी और देवता, घेर लिया चहुँ फेर।
पुष्पन की माला बरषावे, हुयो सड़क पर ढ़ेर जी॥ ७ ॥
सास सुनयना निरखण चाली सज सोला सिनगार।
गान करत कोयल सी मीठी, कर रहिं मँगलाचार जी॥ ८ ॥
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, सज घोड़े असवार।
जनक राज घर तोरन मार्‌यो, चारौं राज कुमार जी॥ ९ ॥

(४१)

बनु म्हांने प्यारो लागे हे, माँ मोरी दशरथ राज कुमार
बनु म्हांने प्यारो लागे हे॥ टेर॥
रतन जड़ित रो सेहरो हे, माँ मोरी कुण्डल झलकत कान॥ १ ॥
मोतियन चौक पुराय लो हे, माँ मोरी सुबरन कलश सजाय॥ २ ॥
हाथी घोड़ा पालकी हे, माँ मोरी राजा जनकजी री पोल॥ ३ ॥
'तुलसीदास' की बीनती हे, माँ ये वांरा चरण कमल चित लाय॥ ४ ॥

(४२) तर्ज—द्रोपदी खड़ी सभाके

म्हारी सीतारो वर श्याम लाडो पूठरो घणूं।
पूठरो घणूं ये बालो सोहणूं घणूं॥ टेर॥
आली, सीलरो स्वभावरो तो सूधलो घणूं।
सखी, चाँद-सूरज लाज्याँ मारे, ऊजलो घणूं॥ १ ॥
सखी, मन्द हँसनसूं मुलके बालो मीठो ही घणूं।
आली, इण बनड़ारी बोली माहीं प्रेम है घणूं॥ २ ॥
सखी, कोमल-कोमल अंग बनाको फूलांस्यूं घणूं।
आली, सभा बीच में धनुवो तोड़्यो सूरमों घणूं॥ ३ ॥
सखी, छोटा-मोटा सब प्राण्यारो प्यारो है घणूं।
आली, गावे च्यारूं वेद जगत्सों न्यारो है घणूं॥ ४ ॥
सखी, एक बार ही देख्याँ चित चढ़ज्यावे है घणूं।
आली, ऐसो कामणगारो, चोखो लागे है घणूं॥ ५ ॥

(४३) तर्ज—जँवाई म्हाने ब्हाला लागे

प्यारा लागे हे रघुवर म्हांने प्यारा लागे हे।
हाँ ये म्हारी सिया सुकुमारी रा स्याम॥ रघु० ॥
प्यारा लागे हे, भरत म्हांने बाला लागे हे।
हाँ ये म्हारीं माण्डवी रा भरतार॥ भरत० ॥

प्यारा लागे हे लछमन म्हांने बाला लागे हे।
हाँ ये म्हारी उरमिल रा आधार॥ लछमन०॥
प्यारा लागे हे सत्रुघन म्हांने बाला लागे हे।
हाँ ये म्हारी श्रुतिकीरती रा कंत॥ सत्रुघन०॥

(४४) तर्ज—भजोरे भैयाराम

सजनी आज सियाजी, कैसी सुघड़ बनी॥ टेर॥
मात सुनयना टुक-टुक निरखे, हिवड़े उमंग घणी॥ १ ॥
नवल शृंगार करो मेरी सजनी, मिलकर सबहि जनी॥ २ ॥
अंग-अंग बीच गहना शोभित, चमकत रतनमणी॥ ३ ॥
चरण कमल बिच पायल झमके, मीठी मधुर ध्वनी॥ ४ ॥
देवर लक्ष्मण भरत शत्रुघन, पिव रघुनाथ धनी॥ ५ ॥
मिथिला वासी सब तृन तोरत, धन-धन जग जननी॥ ६ ॥

(४५) पोढ़ो स्वामी द्वारका

सिया प्यारी धरिये मांग सिन्दूर
सिया प्यारी भरिये मांग सिन्दूर॥ टेर॥
राजा जनक जी की कुंअरि लाड़िली जग की जीवन मूर॥ १ ॥
करुणानिधि प्रभु अर्पण करते, धारण करियो जरूर॥ २ ॥
देख शीश पर हात पियाको, प्रेम बढ़्यो भरपूर॥ ३ ॥
एक-एक की छवि निरखण को, नयन भये मजबूर॥ ४ ॥
शोभा लखि सुर नर मुनि मोहे, मदन-भयो मद चूर॥ ५॥
"सुतसियालाल" शीश धरि राखी, युगलचरण की धूर॥ ६ ॥

(४६) तर्ज—उमरांव

रघुवरजी थाँरी सूरत प्यारी लागे म्हारा श्याम।
उमरावजी हो बनड़ा॥ टेर॥

शीश किलंगी पागड़ी, रतन जड़ित सिर पैंच।
कुन्डल झलकत कानमें, ले सबको मन खैंच॥
रघुनन्दन थाँरी चितवन प्यारी लागे म्हारा श्याम॥ १ ॥
गल कन्ठो हीराँ जड़्यो, गज मोतियन की माल।
बींटी महँदी काँगणी, शोभा बनी रसाल॥
सियावरजी थाँरो लटको प्यारो लागे म्हारा श्याम॥ २ ॥
अचकन झिलमिल कर रही, देरही अजब बहार।
दुपटो जरिकी बेलको, झलकत कौर किनार॥
दशरथ सुत थाँरी चलगत प्यारी लागे म्हारा श्याम॥ ३ ॥
बनड़ीकी शोभा घणी, म्हासूं कही जाय।
प्रगट भई घर जनकके श्रीमुख दियो दिखाय॥
केशरिया थाँरी जोड़ी प्यारी लागे म्हारा श्याम॥ ४ ॥

श्रीसीतारामजीरे चरणाँमें भरतजीरो प्रेम

(४७) तर्ज—गजल

मिथिला नगरी के सुन्दर मन्डप माँही।
सोहे दशरथके लाला चारौं भाई॥
दुलहा बन करके बैठ्या चारौं भाई॥ टेर॥
फेरा लेकर मन्डपके बाहर आया।
कोहबर के खातिर सखियाँ तुरंत बुलाया।
दुलहा-दुलहिन की ऐसी सुन्दर जोड़ी।
लख कामदेव की नारि रती तृण तोड़ी॥
मिथिलाकी महिला निरख-निरख सुख पावे।
कर-कर विनोद रघुनन्दनसों बतलावे॥
मन-ही-मन सखियाँ फूली नांय समाई॥ सोहे०॥ १ ॥

प्रभु चतुराईसूं ऐसी बाणी बोले।
बोली ना उपजे सब सखियाँ चुप होले॥
तब लक्ष्मीनिधिकी नारि सिद्धि चलि आई।
रघुवरजीको छलने की रची उपाई॥
सीताजीके चरणाँरी जूती ल्याई।
एक जरीदार कपड़ेमें दी लिपटाई।
कमरेके भीतर चौकीपर धर दीन्ही।
माला पहराकर फूलाँसूं भर दीन्ही॥
कर धूप दीप नैवेद्य आरती गाई॥ सोहे०॥ २ ॥
बोली रघुवरसे मन्दिरमें प्रभु आवो।
कुल-देवीकी पूजा कर शीश झुकावो॥
तब च्याँरूँ भाई देखणरे मिस आया।
लख गया रामजी भाई लख नहिं पाया॥
बोल्या रघुवर म्हे रघुवंशी कहलावां।
तिरलोकीमें भी किससे नायँ ठगावां॥
च्याँरूँ भायांने सिद्धि कहे समझाई।
कुलदेव रूठणेसूं है नहीं भलाई॥
म्हे अरज कराँ थे लेवो देव मनाई॥ सोहे०॥ ३ ॥
सुण लखन शत्रुघन बोल्या दोन्यूं भाई।
भाईसा रो नहीं हुकम करां म्हें कांईं॥
तब भरतलालसूं बोल्या श्रीरघुराई।
तूं देख भरत कपड़ेरे भीतर कांईं॥
छल करलेवे मिथिलाकी चतुर लुगाई।
विश्वास नहीं करणू इनको रे भाई॥

सुण भरतलालजी कपड़ो दियो हटाई।
सीताजीरे चरणांरी जूती पाई॥
हँस पड़ी सिद्धि सीताजीकी भौजाई॥ सोहे०॥ ४ ॥
देखत ही जूती भरत दण्डवत कीन्ही।
परिकम्पा करके उठा शीशपर लीन्ही॥
चल पड्या भरतजी प्रेम समाधी लागी।
रघुवरजी बोल्या ठहर भरत बड़भागी॥
हिवड़ो उमड्यो रोमाञ्च हुयो अति भारी।
लखि चकित रह गई मिथिलापुरकी नारी॥
तब भरतलालको रघुवर चेत कराया।
पीताम्बरसे मुख पौंछ निकट बैठाया॥
प्रभु फेर्‍यो सिर पर हाथ अंग लिपटाई॥ सोहे०॥ ५ ॥
कहे लक्ष्मीनिधिकी नारि आज म्हे हारी।
हे भरतलालजी जूती देवो हमारी॥
तब भरत कहे थे खाली हाथ पधारो।
इण जूतीमें तो प्राण बसत है म्हारो॥
मिल गई आज मोहि जनम-जनम की पूंजी।
मिल सके न थाँनें आश करो कोई दूजी॥
लख प्रेम भरतरो सखियाँ शीश झुकाई।
ठगणे आई जो खुद ही गई ठगाई॥
जो सुणे भरतको चरित भक्ति दृढ़ पाई॥ सोहे०॥ ६ ॥

(४८) तर्ज—जड़ावदार कंगणू

खोले रघुवीर खुलत नायँ कंगणू॥ टेर॥
सियाजीके बलसूंजी, ओजी लाला ताड़कानें मारी।
सियाजीके बलसे धनुष-बाण धरणू॥ १ ॥

सियाजीके बलसूंजी, ओजी लाला शिला तिराई।
सियाजीके बल मिथिलामें पाँव धरणू॥ २ ॥
सियाजीके बलसूंजी, ओजी लाला धनुवो तोड़्यो।
सियाजीके बल राजावाँरो मान हरणू॥ ३ ॥
जनकपुरीकी जी, ओजी लाला हँसत नवेली।
सियाजीने सुमिरो तो खुल ज्यावे कंगणू॥ ४ ॥
कहो कुण हार्‍या ये, सैयो मोरी कहो कुण जीत्या।
सियाजी की, कृपा भई खुल गयो कंगणू॥ ५ ॥

(४९) तर्ज—पंछी बावरिया

रुच जीमो सरकार हो रघुवर साँवरिया।
थाँने नई सुनावाँ गारि हो, रघुवर साँवरिया॥ टेर॥
कागा थाँरा भगत कहीजे, रींछ-बानरा यार॥ रघु०॥ १ ॥
निज भगताँरी करो चाकरी, ढोवो सगलो भार॥ रघु०॥ २ ॥
भीख माँगता लाज न आई, गया बलीके द्वार॥ रघु०॥ ३ ॥
तीन पेन्डमें सब जग नाप्यो, छलनेमें हुँसियार॥ रघु०॥ ४ ॥
पुरब जनममें मामू मार्‍यो, जानत सब संसार॥ रघु०॥ ५ ॥
भरत-शत्रुघन साधू दरशे, लखन करे तकरार॥ रघु०॥ ६ ॥
कही सुणी प्रभु माफ करीज्यो, दीज्यो नायँ बिसार॥ रघु०॥ ७ ॥

कवित्त

आजकी बात सुनो सजनी, मनमें उमग्यो अति आनन्द भारी।
जीमण बैठी बरात, जबै, तब नारि चढ़ी मिथिलेश अटारी॥
जब रामको रूप निहारत ही, वह मोहगई सब गावन हारी।
भूलगई अवधेशको नाम, अरु देन लगी मिथिलेशको गारी॥

(५०)

मैं तो भूल गइ भूल गइ भूल गइ माय! दुल्हा राम की देख छबी।
सुधि भूल गइ भूलगइ भूलगइ माय, रघुनंदनकी देख छबी॥ टेर॥
गारी देत जनक राजाको, दशरथजीको भूलगइ नाम॥ दुल्हा० ॥
गारी देत सुनयनाजीको, कौशल्याजीको भूल गइ नाम॥ रघु० ॥
गारी देत सताननजीको, वशिष्ठजीको भूल गइ नाम॥ दुल्हा० ॥
गारी देत अपने भैया को, रामजीके भैयाको भूलगइ नाम॥ रघु० ॥
गारी देत मिथिला बासिन्हको, बरातियोंका भूल गइ नाम॥ दुल्हा० ॥
गारी देन लगी रघुवर को, सँगमें लेय सियाजी को नाम॥ दुल्हा० ॥
हाँसी करत अवधके बासी, शरमकी मारी पलट्यो है नाम॥ दुल्हा० ॥

(५१) तर्ज—रेजीकी साड़ी मँगाद्यो जी

रघुराज बनाने रिझास्यां जी, नवरंग गारी गास्यां
थे तो जीमो रामजी गोटा,
थाँरी जानमें गजानन मोटा जी॥ नव॥ १॥
थे तो जीमो रामजी लपसी,
थाँरी जानमें शिवजी तपसी जी॥ नव॥ २॥
थे तो जीमो रामजी चावल,
थाँरे नारद सरीसा रावल जी॥ नव॥ ३॥
थे तो जीमो रामजी सीरो,
थाँरे भरत सरीसो बीरो जी॥ नव॥ ४॥
थे तो जीमो रामजी घेवर,
म्हारी बाईसारे लक्ष्मण देवर जी॥ नव॥ ५॥
थे तो जीमो रामजी लाडू,
थे तो च्यारूँ भाई साडू जी॥ नव॥ ६॥
थे तो जीमो रामजी पेठा,
थे तो राजा दशरथजीका बेटा जी॥ नव॥ ७॥

थे तो जीमो रामजी नुकती,
थाँने भज्यासूं होज्यावे मुकती जी॥ नव॥ ८॥
थे तो जीमो रामजी पेड़ा,
म्हारा पार लगावो बेड़ा जी॥ नव॥ ९॥
थे तो जीमो रामजी खाजा,
थे तो तीनलोकरा राजा जी॥ नव॥ १०॥

(५२) तर्ज—पनिहारी

राम बनासा म्हारी सीया सुकुमारी ने चरणाँरी दासी कीज्यो जी॥ टेर॥
म्हाँरी बाई सीता भोली भाली, माफ गुनाह सब कीज्यो जी।
भूल-चूक अपराध बणे तो, रेकारो मत दीज्यो जी॥ १॥
सुघड़ सलौना श्याम साँवरिया, अरज हमारी सुन लीज्यो जी।
सीतानें लेवण मिस बेगा, मिथिला आता रीज्यो जी॥ २॥
म्हे नुगरी थाँने भूल, भी ज्यावाँ, आप बिसर मति जाज्यो जी।
बेगा-बेगा म्हाने दरशण दीज्यो, नैण शीतल म्हारा कीज्यो जी॥ ३॥
जावो जठे म्हारी सीतानें थे, संगमें सदा रख लीज्यो जी।
पाहुणा सियारा म्हारा सुघड़ मनोरथ, आप पूरण कर दीज्यो जी॥ ४॥

(५३) तर्ज—उमराव

रघुवरजी! थांरा दरसणरी बलिहारी म्हारा स्याम॥ टेर॥
धनुष भँवारा बांकड़ा, नैण तुम्हारा तीर।
इणासूं जे घायल हुया, वे नहिं धरसी धीर॥
रघुवरजी! फिर थे धनुष-बाण क्यूं धारो॥ म्हारा स्याम॥
राम पधार्‌या पावणा, काईं करूँ मनवार।
आपो ही अरपण करूँ, तन-मन-धन सब वार॥
सियावरजी! थांरा चरणासूं चित लाग्यो॥ म्हारा स्याम!

मनसानें कर माछली, नेह तुम्हारो नीर।
छिन भर ही छूटे नहीं, रँग थांरो रघुवीर॥
रघुवरजी! म्हारी इण बिध लगन लगावो॥ म्हारा स्याम॥
पणिहारी भूले नहीं, सिरपर घड़ेको ज्ञान।
यूं म्हाने बणियो रहो, निसिदिन थांरो ध्यान॥
रघुवरजी! म्हारी साँची सुरत लगावो॥ म्हारा स्याम॥

(५४) तर्ज—कोयलड़ी

इतरो पिताजीरो हेत, सिया बाई सिध चाल्या जी॥ टेर॥
थे आभूषण गोदकी जी, थे हिवड़ारो हार, सियाबाई॥ १ ॥
थे हो प्रेम की मूरती जी, थे जिवड़ारी ज्योति, सियाबाई॥ २ ॥
थे नयणांरी पूतली जी, थे सुखड़ारी खान, सियाबाई॥ ३ ॥
आयो सनेही साँवरो जी, लेग्यो टोली मांसूं टाल, सियाबाई॥ ४ ॥
माता-पिता ब्याकुल घणाजी, बिलखे सो परिवार, सियाबाई॥ ५ ॥
बिकल हुया शुक सारीका जी, चूगे न पीवत नीर, सियाबाई॥ ६ ॥
घणां नहीं राखां सासरे जी, लेस्यां बेगा बुलाय, सियाबाई॥ ७ ॥

(५५) तर्ज—रसिया

प्यारा राम बना रघुनाथ सदा थे राजी रहिज्योजी।
राजी रहिज्यो जी सदा थे कुशल रहिज्योजी॥ टेर॥
होय भेली मिथिलाकी नार, गाय रहि सज सोलह सिणगार,
सुनो थे विनती राजकुमार,
विनती म्हारी ध्यानसें, सुनो बना श्रीराम।
अवध जाय नित कीजियो, एक हमारो काम॥
सुबह-दोफाराँ-शाम याद म्हानें करता रीज्योजी॥ १ ॥

सखी सब आंसूड़ा ढ़लकाय, थोड़ा दिन ठहरोजी रघुराय,
लाल देख्या बिन रयो न जाय।
हठ करनेसूं डर रही, मत होज्यो नाराज।
म्हे तो भोली नारियाँ, आप चतुर रघुराज॥
पगाँ लागणा मात कौशल्याजीने कहिज्योजी॥ २ ॥
जानकीने लेय मिथिला साथ, आवता रहिज्योजी रघुनाथ,
जिमास्यां उजला-उजला भात।
फुरसत लेय पधारज्यो, आपहिकी, ससुराल।
थोड़ासा दिन राखस्याँ, विदा कराँ तत्काल॥
मनोकामना आप हमारी पूरण कीज्योजी॥ ३ ॥
गंगा-जमुना जबतक बहसी, सूरजरो धूप धरा सहसी,
अमर थांरी जुगल जोड़ी रहसी,
जोड़ी जुगल अमर रहे, सब मिल दे आसीस।
माफ करीज्यो साँवरा, कबहु न करज्यो रीस॥
सीताबाईरा श्याम सदा सुख पाता रहिज्योजी॥ ४ ॥

(५६)

म्हारी बाइ सूँ सदाई राजी रीज्यो जी बना।
म्हारी सिया सूं सदाइ राजी० ॥
कोई कड़वी बात मत कीज्योजी बना॥ म्हारी०
चतुराँ सूं भी चूक पड़े है, दासी ने उदासी मत कीज्यो जी बना॥ १ ॥
नरम गरम प्रभु भोजन पाज्यो, ठहर-ठहर जल पीज्यो जी बना॥ २ ॥
उपवन में जब घूमन जावो, पाँव उभाना मत रीज्यो जी बना॥ ३ ॥
सुनोजी बनाजी एक अरज हमारी, मिलके बिछुड़ मत जाज्यो जी बना॥ ४ ॥

(५७)

रघुवर नणदोइसा, कामण करगई जी थांरी मन्द हँसी।
गजबी नणदोइसा, कामण कर गई जी थांरी मन्द हँसी॥ टेर॥
देख हुई बेचैन, तीखा नैण, हो सुखदैण थांरी,
हियमाहीं कसके चितवन बाणकसी॥ १॥
यूं ही होट गुलाबी, ताम्बुल चाबी, आ ही और खराबी,
जुबती जन निरखत हो गई बावरि सी॥ २॥
पतली कमर लचीली, भौंह कटीली, हो अलबेला थांरी,
सूरत मनमोहन मनमें आन बसी॥ ३॥
कैयाँ गावाँ गारी, अवध बिहारी, सुध-बुध भूल्या सारी,
हियमाहीं डस गई जुलफ्याँ नागणसी॥ ४॥
बरजो लोग हजार, चालाँ लार, अवधपुर में बसज्यावां,
करस्यां पहुनाई म्हासूं बनत जिसी॥ ५॥

(५८) तर्ज—मुमल

थे तो चालो म्हारी बहना हालोनी, साँवरिये प्यारेरे देश।
थे तो चालो म्हारी बहना हालोनी, सियावर प्यारेरे देश॥ टेर॥
अवधपुरीरी गलियनमें बसज्यावस्याँ,
अवधपुरीरी काँकड़में बसज्यावस्याँ।
म्हे तो तीन बगत सरजूजीरे तटपर न्हायस्याँ॥ थेतो॥ १ ॥
म्हारी सियाजीनें कर-कर कोड बुलायस्याँ,
म्हे तो घुल-घुल बाँसों, मनड़ेरी बाताँ पूछस्याँ॥ थेतो॥ २ ॥
इण साँवरियानें छप्पन भोग जिमायस्याँ,
इण रघुवरजीने छप्पन भोग जिमायस्याँ।
म्हे तो रंग रसीला गीत साँवरियेरा गायस्याँ॥ थेतो॥ ३ ॥

म्हारी सियाजीनें जो कोई मेणा देयसी,
म्हारी सियाजीनें जो कोई मोसा देयसी।
म्हे तो सब मिल वानें दोय की च्यार सुणायस्याँ॥ थेतो॥ ४॥
अवधपुरीमें रहवे है संत सुजानजी, रहवे है संत सुजानजी।
म्हारे साँवरियारी चरचा सुणबानें चालस्याँ॥ थेतो॥ ५॥

(५९) तर्ज—जलालजी

माता हे! किण कारण म्हारा पुज्य पिता दुख पावे हे?
म्हारी केकयि माय!
सुखरा सागर, दुखमें देख्या न जावे हे! ए माय माता हे!
मुकुट कठेहि गलमाल कठे न ठिकाणो हे! म्हारी केकयि माय!
किण कुमणा सूं! कारण बेग बतावो हे! ए माय माता हे!
म्हानें देख्यां फूल्या नांय समावे हे! म्हारी केकयि माय!
किण कारण वे आज नहीं बतलावे हे! ए माय माता हे!
बतलाणू तो दूर न सामाँ ही जोवे हे म्हारी केकयि माय!
नयण भर्‌या, म्हारे देख हिये दुख होवे हे! ए माय माता हे!

(६०) तर्ज—सावणरी तीजाँ जोधपुरी

मनमुसका कर रघुवर बोल्या, ऐसो दिन कब आसी हे माय॥ १॥
भरतलालसो भाई हमारो, राज्य अवधरो पासी हे माय॥ २॥
हुकुम पितारो सम्मति थाँरी, बेगो बणू बनवासी हे माय॥ ३॥
ऋषिमुनियाँरा दरशण पाऊं, सबहि काम सरज्यासी हे माय॥ ४॥
सब बातांसो है हित मेरो, साँच कहूँ सुखरासी हे माय॥ ५॥
मूरख ऐसो कूण जगत में, तज इमरत विष खासी हे माय॥ ६॥
मात एक मोहे दुख अति भारी, थां बिन कूण बतासी हे माय॥ ७॥
थोड़ी सी सुण बात पिताजी, किस विध भया उदासी हे माय॥ ८॥
काईं बड़ो अपराध है म्हारो, काईं कर्‌याँ मिट जासी हे माय॥ ९॥

(६१) तर्ज—पनिहारी

पितु प्रण पालन आप पधारो सा,
सँग अरधंग्या ले नारी।
प्रान पियाजी म्हाँनें सँगमें लेजावो हो,
आप धरम रा व्रत धारी॥ १॥
जैसे जल बिन नदियाँ सूखी, रैन चन्द्र बिना अँधियारी।
प्रान बिना जस देही सूनी, पीव बिना ऐसें घर नारी॥ २॥
सौंप दई मिथिलेस आपकूं, जुग-जुग की दासी थाँरी।
अब क्यूं म्हानें छोड़ सिधावो हो, हात जोड़ बिनती म्हारी॥ ३॥

(६२) तर्ज—खेलन दो गनगौर

नां चालो बन लार सुंदरी थे तो ना चालो बन लार।
हाँ ये बनमें है बिपति अपार, प्रिया हे थे तो ना चालो० ॥ १॥
ले चालो बन लार पियाजी म्हाँने ले चालो बन लार।
ओजी म्हारा आतम रा आधार, पियाजी म्हाँने ले चालो० ॥ २॥
सुख लायक सुकुमार सुंदरी थे तो सुखलायक सुकुमार।
हाँ ये बन में दु:ख बिकट अपार, प्रिया हे थे तो ना चालो० ॥ ३॥
सारा सुख संसार, पियाजी ए तो सारा सुख संसार।
हाँ जी वे तो आप बिना छे असार, पियाजी म्हाँने ले चालो० ॥ ४॥
विषम आहार बिहार, सुंदरी, बठे बरषा तपत बयार।
हाँ ये बन है खाँडे की धार, प्रिया हे थे तो ना चालो० ॥ ५॥
सुरगाँरा बिमल बिहार, पियाजी ए तो सुरगाँरा विमल बिहार।
हाँजी बिना कंत नरक रा है द्वार, पियाजी म्हाँने ले चालो० ॥ ६॥

ऊगे सुरज हजार, पियाजी ए तो ऊगे सुरज हजार।
हाँ जी तो भी आप बिना छे अँधार, पियाजी म्हाँने ले चालो०॥ ७॥
नेह निभावन हार पियाजी थे तो नेह निभावन हार।
ओजी म्हारा भव भव रा भरतार पियाजी म्हाँने०॥ ८॥

(६३) तर्ज—सत्यनारायण भगवान् लाज राखो मेरी

एक सीख हमारी सुनो हे राजकुमारी।
घर रहो कहूं मैं मानो बात हमारी॥
घर रहकर करज्यो सास-ससुर पद पूजा॥
कोई इणसूं बढ़कर और धरम नहिं दूजा॥
जब मात करे मोहि याद बिकल हो ज्यावे।
थांरे बिन बाँने धीरज कूण बन्धावे॥
मैं सौ-सौ सोगन्द खाऊं झूट नहिं भाखूं।
माताजीरे हित घर पर थांनें राखूं॥
घर रहणेसूं आज्ञापालन होज्यासी।
सब धरमांरो फल बिना कष्ट मिलज्यासी॥
हट करणेस्यूं दुख पाणू पड़सी भारी॥ घर०॥ १॥
मैं पितु आज्ञा पालन कर बेगों आवूं।
दिन जात लगे नहिं बार सुणो समझाऊँ॥
बन माहीं थाँने कष्ट उठाणू पड़सी।
कोमल कोमल चरणामें काँटा गड़सी॥
बड़ि-बड़ि परबतरी गुफा नदी नद नाला।
सिंग हाथी गीदड़ बाघ रींछ है काला॥
जंगलमें राक्षस फिरता ही आज्यावे।
नर-नारी सूना देख पकड़ लेज्यावे॥
वे बड़ा निर्दयी नेक दया नहिं आवे।

देखत मिनखाँने तुरत पकड़ खाज्यावे॥
थे बात न समझो बिलकुल भोली नारी॥ घर०॥ २॥
सुण सीख पियाकी गरदण नीची करली।
सीता अँसुवनस्यूँ दोन्यू अँखियाँ भरली॥
सासूरा चरण पकड़कर माफी माँगी।
दोउ हात जोड़ स्वामी स्यूं कहबा लागी॥
मम प्राणनाथ थे शिक्षा दीन्ही चोखी।
पण है लाचारी धारण करणी ओखी॥
मैं खूब समझकर सोचलई मन माहीं।
मोसे बिछडनरी बात सही नहिं जाई॥
बनका दुख स्वामी आप भोत दरशाया।
डर भय विषाद परिताप अनेक बताया॥
सगला दुख सूं पिव बिछड़नरो दुख भारी॥ घर० ३॥
निज माता-पिता-बहन अरु प्यारा भाई।
सासू सुसरा गुरु कुटुम्ब पुत्र समुदाई॥
सबसूं एक नातो प्राण पतीरे लारें।
पति बिना कुटुम्ब घर-बार अगन ज्यूं जारे॥
सब भोग रोगसा भाररूप सब गहणा।
पिव छोड्याँ म्हारा प्राण नहीं अब रहणा॥
यूं कहत पड़ी धरणीपर मुरछा आई।
सीतानें व्याकुल देख कहे रघुराई॥
बन चालो म्हारे साथ करो मत देरी।
तब संग दुई रघुवर चरणांरी चेरी॥
धन-धन त्रिभुवनमें सीता पतिव्रत नारी॥ घर०॥ ४॥

(६४)

मोहि दियो पिता बनवास आज मैं बनमें जाऊँगो॥ टेर॥
हुयो तात को हुकम मात मैं बचन निभाऊँगो।
चवदह बरस बिताकर बनमें फिर घर आऊँगो॥ १ ॥
तपसी भेष बनाय सीस पर जटा रखाऊँगो।
बलकल पहिर ओढ़ मृग छाला अति सुख पाऊंगो॥ २ ॥
नदी किनारे बन पत्तन की कुटी छवाऊँगो।
षटरष भोजन त्याग कन्द अरु बनफल खाऊँगो॥ ३ ॥
रिषि मुनियों के आश्रम जाकर दरशन पाऊँगो।
भरतलाल कूँ अवधपुरी को भूप बनाऊँगो॥ ४ ॥

(६५)

हुकम हुयो म्हारे सुसराजी सा रो, बरस चतुरदस बन चारी।
प्रान पियाजी म्हारा बनमें पधारे हो, रह न सकूं किणबिध न्यारी॥ १ ॥
चित लाग्यो म्हारो पिव चरणन में, कर न सकी सेवा थाँरी।
हुकम करो सासूजी सँग वाँरे जाऊँसा, भवन रहण रुचि नहिं म्हारी॥ २ ॥
धन्य बहू थाँरा मात पिता नें, कोशल्या कह महतारी।
अचल सुहाग बन्यो रहे थाँरो, या आसीस है नित म्हारी॥ ३ ॥

(६६) तर्ज—म्हात्मा गाँधी आया

हाँ पतिव्रत पालनहारी, धन्य-धन्य धरती पर नारी।
धन्य धन्य वो देश जठे वा आप पधारी रे॥ पतिव्रत॥ १ ॥
धन्य वंश जिणमें वा जाई, धन ससुराल जठे परणाई।
धन्य पुरुष जिणने वा ब्याही,
पीहर और ससुराल बसत दोनों कुल तारी रे॥ पतिव्रत॥ २ ॥
पतिके प्रेम रहे नित राती, मात-पिता मनमोद बढ़ाती।
सास-ससुरनें सुख उपजाती,
प्रेम, चन्द्र-चन्द्रिका, शील-सूरज उजियारी रे॥ पतिव्रत॥ ३ ॥

(६७) तर्ज—चलत

राम बन को जायेंगे तो हम भी संगमें जायेंगे।
राम के दर्शन बिन हम तो, जीना भी नहिं चाहेंगे॥ टेर॥
भूख तो लगेगी भैया, भोजन कैसे पावोगे॥
रामजी का दर्शन करके, दिलकी भूख मिटायेंगे॥ १ ॥
प्यास तो लगेगी भैया, पानी कहाँ से लावोगे।
रामजी का दर्शन करके, दिल की प्यास बुझायेंगे॥ २ ॥
नींद तो आवेगी भैया, सैया कहाँ से लावोगे।
रामजी का सुमिरन करके, सारी रात जगायेंगे॥ ३ ॥
भय भी लगेगा भैया, कहाँ-कहाँ भगजावोगे।
राम के चरणों को तज कर, और कहीं नहिं जायेंगे॥ ४ ॥
राम वापिस आयेंगे तो, हम भी वापिस आयेंगे।
अवधपुरी की गली-गली में, सीताराम गायेंगे॥ ५ ॥

(६८) तर्ज—दाँतण

हर-हर उभ्या हरिजी भागिरथीरे तीर,
सीताजी लिछमणजी ज्यारे साथमें।
हर-हर नाम हरीरो सुमर्‌याँ उतरे पार,
केवटसूं नीहोरा हरिजी कर रया॥
हर-हर केवट भाइरे करदे म्हानें पार,
वनमाहीं जावणरी जल्दी होय रही।
हर-हर न्यावड़ली तूं नेड़ी म्हारे ल्याव,
बेगोसो तू म्हानें पार उतार दे॥
हर-हर बोल्यो केवट सुणज्यो रघुराज,
चरणांरी रज धोयां पार उतारस्यूं॥
हर-हर पत्थररी बण उडगी ऋषिरी नार,
म्हारी तो नैया है कोमल काठ की।

हर-हर न्यावड़ली उड़ ज्यावे रघुनाथ,
दूजी नांय कमाई म्हारे पासमें॥
हर-हर हँस बोल्या किरपालू रघुनाथ,
जी चाहे सो कर ले पार उतार दे।
हर-हर केवटरी तो बणगी सारी बात,
बेगोसो कठौतो जल भर ल्याईयो॥
हर-हर लीन्हा हरिरा चरण पखार,
अम्बरस्यूं फूलाँरी बरषा होय रही।
हर-हर ले चरणामृत सारो परीवार,
नातीड़ा पितरांनें पार लगाईया॥
हर-हर परथम केवट उतर्‌यो भवस्यूं पार,
तब रघुवरने गंगा पार उतारीया॥

(६९) तर्ज—म्हारी सहाय करेगो रे

केवट तूं करदे पार ल्यादे थारी नावड़ली।
थांने ओलख लियाजी सरकार, मैं कैसे लाऊँ नावड़ली॥ टेर॥
चरणांरी रज पसरत थांरी, पत्थर उड़ भई नार॥ मैं कैसे॥
म्हारी तो कोमल काठकी नैया, उड़त लगे नहिं बार॥ मैं कैसे॥
नाव उड्यां रोजी नहिं चाले, भोत बड़ो है परिवार॥ मैं कैसे॥
हुकम करो तो चरण पखारूँ, झट खेवूं पतवार,
तुरत लावू नावड़ली॥
तब हँसकर रघुवरजी बोल्या, ले भाई चरण पखार,
ल्यादे थारी नावड़ली॥
केवट तुरत कठौतो ल्यायो, धोवत लगायरयो बार,
मैं लाऊं अब नावड़ली॥
कुटुम्ब सहित चरणामृत लीन्हो, पितर दिया सब तार,
बिठाऊं थांने नावड़ली॥

केवट प्रभुको पार उतारत, बरसत पुषब अपार,
फूलासूं भरी नावड़ली॥
सीताराम लखन मुसकावे, केवट बड़ोरे हुंसियार,
यो मोड़ी लायो नावड़ली॥

(७०) तर्ज—गोतीचन्द लड़का

उतराई ले ले सुन रे माँझीका थांरी न्यावकी।
शरमाँ मत मारो बालक हूँ थांरो केवट यूं कहे॥ टेर॥
मात सियाजी अँगुलीसूं जब मुंदरी तुरत उतारी।
ले रघुवर केवटने देवे, केवट दुख भयो भारीजी॥ १ ॥
पकड़ चरण तब केवट बोल्यो, सुनो राम रघुराई।
थांरी म्हारी जात न न्यारी, ल्यूं कैसे उतराईजी॥ २ ॥
धोबी सों धोबी नहिं लेवे कपड़ो लेत धुलाई।
नाईसों नाई नहिं लेवे शीश केश कतराईजी॥ ३ ॥
थे केवट हो भवसागरका, म्हारे नदी तलाई।
जब मैं आऊं घाट आपरे, दीज्यो पार लगाईजी॥ ४ ॥
लख केवटकी प्रीत राम लक्ष्मण सीता मन भाई।
वर दीन्हो भगतीरो प्रभुजी, आगे लई विदाईजी॥ ५ ॥

(७१) तर्ज—हमारा दुख दूर करना

डगरियामें जावता म्हे देख्या बनवासी॥ टेर॥
देख्या नहीं सुन्या नहिं आली ऐसा बनवासी।
जिवड़ेरी तो जलण सदाकी, देखत ही मिटज्यासी॥ १ ॥
श्याम सलौना सबसों आगे, सँगमें वांरी दासी।
पीछे से एक गौरासा सुकुमार सुबरण राशी॥ २ ॥
कर सारंग धनुषकी शोभा, मस्तक बान्ध जटासी।
देख अचम्भो आवे ज्यारे, मुखपर नहीं उदासी॥ ३ ॥

कुणसा मात-पिता जो याँने, बणा दिया बनवासी।
जींवतड़ा वे किस विध रहसी, तड़फ-तड़फ मरज्यासी॥ ४ ॥
एक सखी तब यूं उठ बोली, पुरी अवधका बासी।
पिता बचनरे कारण बनमें, चवदह बरस बितासी॥ ५ ॥

(७२) तर्ज—राणृजी रूसे तो

बन में देख्या दोय बनवासी।
वाँरो मुख देख्याँ सुख पासी हे माय॥ बन० १॥
भोजपत्र के वस्तर पहिरे,
एजी वे तो अपने नगर होता आसी हे माय॥ बन० २॥
नैणासूं हे सखी निरखण लायक,
एजी वांने कौन किया बनवासी हे माय॥ बन० ३॥
धिन वाँरा मात-पिता वाँरा धिन है,
एजी वे तो हिवड़ो फाट मरज्यासी हे माय॥ बन० ४ ॥
तुलसीदास आस रघुवरकी,
एजी वाँरा चरणकंवल चित लासी हे माय॥ बन० ५॥

(७३) तर्ज—डगरियामें

भरत ननिहालसे, आये दोनों भैया॥ टेर ॥
राज-पाठ सब सूना लागे, बिलखत घोड़े-गैयाँ।
बाग बगीचे सूख गये हैं, फीकी रोशनैयाँ॥ भ० १॥
कहाँ हमारे पिता बिराजे, कहाँ है दोनों भैया।
कहाँ गये हैं भाई मेरे, कहाँ सीता भौजैया॥ भ० २॥
पिता तुम्हारे स्वर्ग सिधाये, रुदन करत है मैया।
राम-लखन बन माहिं सिधाये, सँग सीता भौजैया॥ भ० ३॥

पिता छोड़ क्यों स्वर्ग सिधाये, रुदन करत क्यों मैया।
भैया क्यों वनमाहिं सिधाये, किस कारण भौजैया॥ भ० ४॥
पिता राम-बिन स्वर्ग सिधाये, शोक-मगन दोऊ मैया।
मम कारन बन राम सिधाये, पतिव्रत सें भौजैया॥ भ० ५॥
भरत कहत है सुनरी मैया, यह क्या कुमति कमैया।
राज पाठ अरु मैं रघुवरका, राम-दरशको जैया॥ भ० ६॥

(७४) तर्ज—घूघरी

आय भरत जब सुण्यो राम बनवास,
केकइसूं खिजकर बोलीया, ए खोटी माय।
जनमत ही क्यूं विष नहिं दीन्हों मोय,
माता बण अपजस क्यूं लीयो, ऐ खोटी माय।
पीपलनें तूँ जड़स्यूं दियो उखाड़,
पत्ताँमें पाणी सींचीयो, ए खोटी माय।
जल मछलीरे जीवणरो हित सोच,
तूँ जल सगलो खाली कियो, ए खोटी माय।
वर माँगत मुख दरद भयो नहिं तोय,
जीभड़ली गल क्यूं नाँ गीरी, ए खोटी माय।
फाट कलेजो हुया नहीं दो टूक,
थारे मुखमें कीड़ा ना पड़्या, ए खोटी माय।
ईसड़ा जगमें जीव न देख्या कोय,
म्हारा रघुवर प्यारा ना लगे, ए खोटी माय।

(७५) तर्ज—जलालजी

माता हे! जग जीवणनें सुख अवसर दुख दीन्हों हे,
मति हीणी हे माय!
रतन फेंककर जतन कँकरको कीन्हों हे! माय॥ १ ॥

माता हे! अमरित जाण हलाहल म्हानें पायो हे॥ मति०॥
प्राण कढ़ाय शरीर में साज सजायो हे! ए माय॥ २ ॥
माता हे! राम बिना आराम हराम ही जाणू हे॥ मति०॥
सम्पति आफत सुखनें दुख कर मानूं हे! ए माय॥ ३ ॥
माता हे! ज्यां चरणारी रज इंद्रादिक चावे हे॥ मति०॥
धिक थांने रघुनन्दन नाँय सुहावे हे! ए माय॥ ४ ॥
माता हे! राम-चरण-पंकजमें डूब्यो रहस्यूं हे॥ मति०॥
अवध पधारण जाय प्रभुने कहस्यूं हे! ए माय॥ ५ ॥

(७६)

बिना श्रीराम के देखे नहीं दिल को करारी है॥ टेर॥
हमारी मातु की करनी, सकल दुनियाँ से न्यारी है।
बिमुख जिन्ह राम से कीन्हा, एसी जननी हमारी है॥ १ ॥
भरतजी लौटे घरनीं पर, दृगन से नीर जारी है।
सुना जब तात का मरना, मानो बरछी सी मारी है॥ २ ॥
नहीं हम राज्य के भूखे, नहीं धरनी पियारी है।
लगी रघुवंश में अगनी, अवध सारी उजारी है॥ ३ ॥
सभी को राम-घर चलना, सुबह करनी तैयारी है।
पडूँ रघुनाथ के पैयाँ, यही तुलसी बिचारी है॥ ४ ॥

(७७) म्हारो मन लाग्यो रघुवरमें

प्राणनाथ रघुनाथ प्रभूका, दर्शण बिन जिय जावे हो राम॥ १॥
पुरी अयोध्या सूनीरे लागे, कब रघुवर घर आवे हो राम॥ २॥
राम बिना म्हारो हिवड़ो रे फाटे, हूँस घणेरी आवे हो राम॥ ३॥
अन्न नहिं भावे, जल नहिं भावे, नीन्दड़ली नहिं आवे हो राम॥ ४॥

हिचकी रे ऊपर हिचकी आवे, और न बात सुहावे हो राम॥ ५॥
कर बिनती रघुवरजीनें ल्याऊँ, उजड़ी अवध बसावे हो राम॥ ६॥
चित्रकूटरे मारग माहीं, भरत उपाला जावे हो राम॥ ७॥
गुह निषादके संग भरतजी, हात मिलायाँ जावे हो राम॥ ८॥
रघुवरजीरा चरण चिन्हकी, ले रज शीश चढ़ावे हो राम॥ ९॥
याद करे जब मातारी करणी, पग पाछा पड़ज्यावे हो राम॥ १०॥
भगतीरे बल धरत पाँवड़ो, धीरज मनमें आवे हो राम॥ ११॥
उमड़पड़े जब भाव प्रभुको, दौड़-दौड़ कर जावे हो राम॥ १२॥
मारग माहीं लोग भरतका, दरशण करबा धावे हो राम॥ १३॥
देख-देख कर प्रेम भरतरो, देव पुषब बरसावे हो राम॥ १४॥

(७८) तर्ज—पनिहारी बीकानेरी

प्यारा भाईसा म्हारा अवध पधारोसा,
अरज सुनो प्रभु रघुराई॥ टेर॥
आप बिना म्हानें कल ना पड़े जी, जीवन धन-जन सुखदाई।
आप बिना सब भवन अलूणा, प्रजा रही सारी अकुलाई॥
आप बिना सब अवधपुरी जी, उजड़ पड़ी यूं मुरझाई।
जैसे जल बिन सरवर सूको, प्यासो पंछी फिर जाई॥
थोड़ीसी अरजी घणीकर मानोसा, अरज करे छोटो भाई।
सेवक शरण पड़्यो चरणन में, नाथ करो निज मन चाही॥
करत दण्डवत देख भरतको, दौड़ पड़्या, त्रिभुवनराई।
तरकस धनुष गिर्‌या धरणीपर, पकड़ भुजा गया लिपटाई॥
देख प्रीतकी रीत प्रभू की, देव रया सब घबराई।
देवगुरु उपदेश दियो है, पुषब रया तब बरषाई॥

(७९) तर्ज—गिरधारी बीरा भात भरणने

रघुनन्दन प्यारा दरशण देवणनें बेगा आईज्यो।
हो स्वामी म्हारा प्यासा पंछीने मत तरसाईज्यो॥ टेर॥
बचन पितारा पालो सत पथ चालो धरम संभालो स्वामी!
छोटे भाईरो प्यार निभाईज्यो॥ १ ॥
चवदह बरस बिताओ उणरे दूजे दिन ही आवो स्वामी!
पल भर ही फिर मत देर लगाईज्यो॥ २ ॥
आप दयामय स्वामी अन्तरजामी बारम्बार नमामी!
जलता जिवड़ारी जलन मिटाईज्यो॥ ३ ॥

(८०) तर्ज—पनिहारी जोधपुरी

प्रभु चरणांरी पाँवड़ी हो रघुनन्दन जी!
दीन्हा म्हानें दीनदयाल राघव जी!
हूं जाणू जीवन-जड़ी हो रघुनन्दन जी!
राखूं म्हारे हिवड़े लगाय, राघव जी!
सम्पति मो मन सूमकी हो रघुनन्दन जी!
चित-चातक-घन-बूंद, राघवजी!
मिली अंधनें आँखियाँ हो रघुनन्दनजी!
रंक तणी धनरास, राघव जी!
सिंघासण सोहे घणो हो रघुनन्दनजी!
छत्र-चमर छवि देय, राघव जी!

(८१) तर्ज—हाँ म्हातमा गाँधी आया

हाँ राम राजा बनवासी, अखिलानन्द आप अविनासी।
पूरण प्रेम प्रभाव भरी, प्रभुता परकासी रे॥ राम०॥
पुष्प भूषण प्रभु आप बणावे, जनकसुता के अंग सजावे।
देख छबी सौ क्रोड़ रती दरशे ज्यूं दासी रे॥ राम०॥

राम रूप घनश्याम विराजे, सीता द्युति दामणि-सी साजे।
नाचे दादुर मोर, हुवे रसकी बरसासी रे॥ राम०॥
इन्द्रादिक दरशणनें आवे, प्रभु-मुख निरख परम सुख पावे।
धन्य धरा जिणपर बसिया बैकुन्ठ निवासी रे॥ राम०॥

(८२) तर्ज—पनजी मुन्डे बोल

बोल बोल म्हारे हिवड़ेरा जिवड़ा
कांई थारी मरजी रे, तपसी मून्डे बोल॥ टेर॥
सुन्दर रूप जवानी तनपर बन में किण बिध आया रे।
क्यों जग का सुख छोड़ उदासी भेष बणाया रे॥ तपसी०॥
थारे जिसो पुरुष नहिं सुन्दर, म्हारे जिसी न नारी रे।
या जोड़ी जग माँय विधाता, एक उतारी रे॥ तपसी०॥
तीन लोकरो राजा रावण, सो है म्हारो भाई रे।
म्हाँसूं नेह निभाय पाय, पूरण प्रभुताई रे॥ तपसी०॥

(८३) तर्ज—रघुवर छोटोसो

लक्ष्मण छोटोसो! भाँमण! तूं कर भरतार।
म्हाँसूं छोटो बन्धुवो, कोई सुन्दर रूप अपार॥ बान्धव०॥
श्याम-बरण पण है नहीं, वो गौर-बरण दीदार॥ बान्धव०॥
म्हारे तो संग सुन्दरी, कोई नहिं उणरे संग नार॥ बान्धव०॥

(८४) तर्ज—सारंग

नचीतो कैयाँ बेठ्यो रे मासी जाया बीर।
मासी जाया बीर थारे घर की खाई खीर॥ नचीतो०॥ टेर॥
पंचवटी दोय बालक आया राम-लखन रणधीर।
वांरे सँग एक सुन्दर नारी, रहवे परण कुटीर॥ नचीतो०॥

मैं पहुंची जद लक्ष्मण म्हारा, नाक-कान दिया चीर।
खर-दूषण-त्रिसिरा अरु मार्‌या, सहस चतुरदस वीर॥ नचीतो० ॥
नाक-कान में चटका रे चाले, जबर भई है म्हारे पीर।
आपाँ दोन्यू बहन-भायाँरो सुख-दुख माँही सीर॥ नचीतो० ॥

(८५) तर्ज—सारंग

मत रो ए भोली बहनड़ली अब मारूँ राजकुमारनें।
मारूँ राजकुमारनें, हरल्याऊँ उनकी नारनें॥ मत० ॥ टेर॥
सोच-फिकर अब मत कर बाई लाग्यो है पुचकारणें।
नाक-कान कटग्या तौ कटग्या निमसकार हुणहारनें॥ १ ॥
खर-दूषण-त्रिसिरानें मार्‌या, ऐसो कुण संसारमें।
चवदह सहस बली सब मार्‌या, रावण पड़्यो विचारमें॥ २ ॥
जो तिरलोकी नाथ अवतर्‌या, देवाँ रे हित कारणे।
बाँसू वैर करूँ मरस्यूं तो, तारूँ सब परिवारनें॥ ३ ॥

(८६)

मिरग रूप मारीच निसाचर रघुवर सर सूं मार्‌यो है।
लछमण म्हारी मदद करीजे मरतो इतो पुकार्‌यो है॥ टेर॥
हठ कर सिया लखन नें भेजत पाछे रावण आयो है।
जोगी बन कर भीछा माँगी सियानें लेय सिधायो है॥ १ ॥
कुररी ज्यूं बिललाय जानकी सुनत गीध-पति धायो है।
बेटी-बेटी कह कर दोड़्यो तब रावण चकरायो है॥ २ ॥
मार चोंच घायल अति कीन्हो दसमुख मुरछा खायो है।
ले गोदी सीता ने धायो बल अपणूं दिखलायो है॥ ३ ॥
उठ रावण तलवार उखाड़ी काट्या पंख गिरायो है।
अटक्या प्रान उड़ीकत प्रभु को दरसन बिना तिसायो है॥ ४ ॥

(८७)

थे तो हेरो हेरो हिवड़े रा बासी प्रभु रसिया,
हिरण गयो एक सोने रो॥ टेर॥
ओ तो सुघड़ सुहायो छबि छायो प्रभु रसिया॥ हि०॥
ओ तो कंचन घड़ियो रतन जड़ियो प्रभु रसिया॥ हि०॥
देख्या हिरन घणा ही ऐसो नाहीं प्रभु रसिया॥ हि०॥
याकी चरम सुहाइ मन भाई प्रभु रसिया॥ हि०॥
थे तो धनु सर धारो मिरगो मारो प्रभु रसिया॥ हि०॥

(८८)

पाछा फिर प्रभु जोवण लाग्या, खाली आश्रम पाया है।
सिया-सिया कह बिलपण लाग्या, च्यारूँ तरफ सिधाया है॥ टेर॥
जड़ अरु चेतन जीव-जन्तु से, पूछत नायँ अघाया है।
बिकल होय अति खोजण लाग्या, लक्ष्मण धीर बंधाया है॥ १ ॥
खोजत-खोजत नजर पड़्या है, गीध जटायू जोया है।
धीर-धुरन्धर धीरज छोड़्या बालक की ज्यों रोया है॥ २ ॥
झाड़ बदन ही रेत जटास्यूं, गोदी के चिपकाया है।
गीधराज मन-मुदित भया है, खोया सुत ज्यूं पाया है॥ ३ ॥
अविरल भगती माँग प्रभुसें, तब हरि-धाम पठाया है।
धन्य-धन्य करुणामय स्वामी, अजब आपकी माया है॥ ४ ॥

(८९) तर्ज—बीकानेररी पणिहारी

बनका निवासी कोई डगर बतावो जी, पूछत लक्ष्मण रघुराई॥ टेर॥
जिण डगर्‌यां एक भिलनीं बसे जी, टूटी-सी कुटिया छाई।
जिण डगरी का चुण चुण कंकड़, कर रहि नित म्हारी पहुणाई॥ १ ॥

सुण-सुण बनका रिषि मुनि आया, प्रभु-चरणन गया लिपटाई।
म्हारे आश्रम आप पधारोसा, म्हे देस्याँ थांने पहुंचाई॥ २ ॥
म्हे तो प्रथम घर शबरीरे जास्याँ जी, कहन लग्या त्रिभुवनराई।
म्हारे तो मनमें ऐसी-ऐसी आवे रे, उड़कर पहुंचाँ अब जाई॥ ३ ॥
लख शबरीसूं नेह प्रभूको, ऋषि-मुनि मन रया सकुचाई।
पतित-उधारन तुरन्त पधारया, शबरी—घर दोन्यूं भाई॥ ४ ॥

(९०) तर्ज—आसी आसी हरि घणे भरोसे

आया आया आया! म्हारे राम-लखन घर आया॥ टेर ॥
जब देख्या रघुवर आता, ज्यारे सँग में लक्ष्मण भ्राता।
वा दौड़ी-दौड़ी आई, हरि-चरण गई लिपटाई॥ घर० ॥
उठ-उठ ये शबरी माई, यूं कहन लग्या रघुराई।
तनकी सुध-बुध बिसराई, उठ प्रेममें गई समाई॥ घर० ॥
घर पर प्रभुको ले आई, तुमड़ी में जल भर लाई।
हरिचरण पखारण लागी, धन-धन शबरी बड़भागी॥ घर० ॥
आसण पर दिया बिठाई, छबड़ीमें फल भर लाई।
चुन-चुनकर प्रभु को देवे, हरि माँग-माँग कर लेवे॥ घर० ॥
सुन-सुन रे लक्ष्मण भाई, ले मीठा फल तूं खाई।
म्हे बन-बनमें फिर आया, नहीं इस्या तो भोजन पाया॥ घर० ॥

(९१)

लछिमन भैया आज के सवादे मीठा बौर॥ टेर॥
इस दुनियाँ में फल बहु खाये, इन्ह की है रचना और॥ १ ॥
कोई कोई बौर भैया बहुत ही मोठो जिन्हकी है खाँड़ी कौर॥ २ ॥
कबहुक देती मात कौशल्या, इन्हमें है रस कछु और॥ ३ ॥
कहे रघुवर जी सुनहे शबरी, थोड़ा थोड़ा दीजे म्हाने और॥ ४ ॥
'तुलसीदास' हँसि-हँसि फल खाये दशरथ नन्दकिशोर॥ ५ ॥

(९२) तर्ज—हाँरे बाला इण

हाँ जी रामजी! पंपा सरोवर री पाल,
प्रभुजी आया पाहुणाँ जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! लछमन भैया छे साथ
प्रभु रे मन भावणाँ जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! जनक सुता नहिं संग,
जिणासूं बिलखां घणाँ जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! कोयल चातक मौर
प्रभु रा गुण गा रया जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! प्रगट्यो है प्रेम प्रभाव,
सुखी सब जीवड़ा जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! सरबर किया है सिनांन,
आगे हरि हालिया जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! मगमें मिल्या हनुमान,
भेज्या सुगरीवरा जी म्हारा राम!
हाँ जी रामजी! निरख्या है नैणाँ सूं नाथ,
जतन जाणूँ जीवरा जी म्हारा राम!

(९३) तर्ज—जलालजीरे

माता हे! हूँ तो हनुमत अँजनी मातरो जायो हे,
जगजननी हे माय!
आनन्द घन रघुनन्दन दास कहायो हे, ए माय॥ १॥
माता हे! श्यामसुन्दर रो देण संदेसो आयो हे, जग०॥
कुशल कृपानिधि थाँनें कुशल कहायो हे, ए माय॥ २॥

माता हे! आ मुन्दड़ी प्रभु दीन्ही नेह-निशानी हे, जग०॥
पाछी माँगी है थांरी सुख-सहनाणी हे, ए माय॥ ३॥
माता हे! आप बिना वाँरो चित चिन्तासूं छायो हे, जग०॥
नीन्द निसा नहिं दिन भोजन नहिं भायो हे, ए माय॥ ४॥
माता हे! श्यामसलूनो अतिहि अलूनो लागे हे, जग०॥
तो चिन्ता में जोगी ज्यूं निसि जागे हे, ए माय॥ ५॥
माता हे! थांरे कारण बन-बन जल-थल जोवे हे, जग०॥
बार ही बार बिरहमें व्याकुल होवे हे, ए माय॥ ६॥

(९४)

नाहिं पीछान्यो रे कपि बीरा, तेरो दुरबल बहुत शरीरा॥ टेर॥
ना तनें देख्यो पुरी अयोध्या, ना सरयू के तीरा।
केहि बिधि हुयो राम को सेवक बन महँ तूँ बलबीरा॥ १ ॥
सौ जोजन मरिजाद सिन्धु की, किस बिध उतर्‌यो तीरा।
द्वार द्वार पर राछस कहिये, जिन्ह के बिकट शरीरा॥ २ ॥
प्रभु प्रताप से लंका कूद्यो, उतर्‌यो सागर तीरा।
भक्त विभीषण पतो बतायो, मिटी सकल तन पीरा॥ ३ ॥
अब मत सोच करो मेरी माता, आवत है रघुवीरा।
निश्चर मारि तोहि लै जैहैं, गावत दास कबीरा॥ ४ ॥

(९५) तर्ज—घूघरी

जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
बरनन कर हरि के रूप को रे हनुमान॥
लाजै माता रती पती सत कोटि,
निरख्यां ही हरि के रूपने हे मेरी माय॥

जे तूँ बानर है रघुवर को दास,
बरनन कर हरि के रंग को रे हनुमान॥
स्वामी माता साँवल उजला रंग,
मरकतमणि सी छबि सोहणीं हे मेरी माय॥
जे तूँ बानर है रघुवर को दास,
बरनन कर हरि के भेष को रे हनुमान॥
स्वामी माता धरिया मुनिवर भेष,
धरती रो भार उतारसी हे मेरी माय॥
जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
बरनन कर हरि के बंस को रे हनुमान॥
स्वामी माता रघुकुल दशरथ लाल,
उजियाला सूरज बंस का हे मेरी माय॥
जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
बरनन कर प्रभु के सील को रे हनुमान॥
आवे माता देव अपसरा कोटि,
मन प्रभु को कबहू ना डिगे हे मेरी माय॥
जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
बरनन कर बल रघुबीर को रे हनुमान॥
होवे माता प्रभु की टेढ़ी भौंहँ,
तिरलोकी में कोउ ना बचे हे मेरी माय॥
जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
कुण रहवे प्रभु के साथ में रे हनुमान॥
सँगमें माता रहवे लछमन बीर,
छोटा भाई रघुबीर का हे मेरी माय॥

जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
बरनन कर प्रभु के भाव को रे हनुमान॥
स्वामी माता कर कर थाँने याद,
छन छन महँ ब्याकुल हो रया हे मेरी माय॥
जे तूँ बानर है रघुबर को दास,
कुण जस गावे रघुबीर को रे हनुमान॥
जस तो माता गावै चारौं बेद,
ब्रह्मा शिव पार न पा सके हे मेरी माय॥

(९६) तर्ज—धमाल

बानर बाँकोरे लंका नगरीमें मच गयो हाको रे॥ टेर॥
मात सियाजी कहवे बेटा, फल खाई तूं पाको रे।
इतने माहीं कूद्या हनुमत, मार फदाको रे॥ १ ॥
रूँख उखाड़ पटक धरणीपर, भोग लगाय फलांको रे।
रखवाला जब पकड़ण लाग्या, दियो झड़ाको रे॥ २ ॥
राक्षसिया अरड़ावे सारा काल आगयो म्हाँको रे।
मुंहपर मार पड़े मुक्काँरी, फाड़े बाको रे॥ ३ ॥
हात टांग तोड़े सिर फोड़े, घट फोड़े ज्यूं पाको रे।
उथल-पुथल सब कर्‌यो बगीचो बिगड़्यो खाको रे॥ ४ ॥
उजड़ी पड़ी अशोक वाटिका, ज्यूं मारग सड़कांको रे।
लुक छिपकर कई घरमें घुसग्या, पड़ गयो फाको रे॥ ५ ॥
जाय पुकार करी रावणस्यूं, दिन खोटो असुरांको रे।
कपी आय एक घुस्यो बागमें जबर लड़ाको रे॥ ६ ॥
भेज्यो अक्षयकुमार भिड़णनें, हणुमत सामों झांक्यो रे।
एक लातकी पड़ी असुरपर पी गयो नाको रे॥ ७ ॥

धन-धन रे रघुबरका प्यारा, अतुलित बल है थाँको रे।
तूं ही जग में मुकुटमणी है, हरि-भगतांको रे॥ ८ ॥

(९७) तर्ज—धमाल

देखो भाई रे! हनुमान बली ने लंक जलाई रे॥ टेर ॥
अंग भंग करद्यो बानरको, रावण जुगत बताई रे।
कपड़ो तेल लपेट पूंछ पर, आग लगाई रे॥ दे० १ ॥
घी अरु तेल घट्यो लंकाको, इतरी पूंछ बढ़ाई रे।
मार फलाँग चढ्या छत ऊपर, चकरि घुमाई रे॥ दे० २ ॥
लपट भयंकर उठी आगकी, धूवाँ धोर मचाई रे।
ज्यूं असुराँरे प्रलयकालकी, होली आई रे॥ दे० ३ ॥
बानर नहीं बलाय आ पड़्यो, राक्षसियाँ घबराई रे।
जलबलती रोती चिरलाती, दोड़ लगाई रे॥ दे० ४ ॥
कोई कहे छोरीका बापू, हाय मरी दुख पाई रे।
तन ढकणेंरा कपड़ा बलग्या, सोड़ रजाई रे॥ दे० ५ ॥
कोई कहे यो बानर कोनी, देव करी कपटाई रे।
कोई कहे साधूनें छेड़्यो ल्यो फल पाई रे॥ दे० ६ ॥
सरर-सरर सरणाटा करती, पवन चली पुरवाई रे।
फर-फर करता पंछी उड़ग्या, आँच न आई रे॥ दे० ७ ॥
एक विभीषणरो घर छोड्यो, सारी लंक जलाई रे।
कूद पड़्या समंदरमें हणुमत, पूंछ बुझाई रे॥ दे० ८ ॥
आय खड़्या सीताके सनमुख, हणुमत आज्ञा पाई रे।
आशिर्वाद दियो माता तब, लेई विदाई रे॥ दे० ९ ॥

(९८)

कुटुम्ब तजि शरण राम तेरी आयो।
तजि गढ़ लंक महल अरु मंदिर, नाम सुनत उठि धायो॥ टेर ॥

भरी सभा में रावण बैठो, चरन प्रहार चलायो।
मूरख अंध कह्यो नहिं मान्यो, बार बार समझायो॥ १ ॥
आवत ही लंका पति कीन्हो, हरि हँसि कण्ठ लगायो।
जनम जनम के मिटे पराभव, राम दरश जब पायो॥ २ ॥
हे रघुनाथ अनाथ के बन्धु, दीन जानि अपनायो।
'तुलसीदास' रघुवर की शरणें, भक्ति अभय पद पायो॥ ३ ॥

(९९) तर्ज—पींपली

मंदोदरि रावण सूं कह रही, जी होजी पिया!
राखो म्हारे चुड़ले री लाज, बैर बिरोध हरीसूं मत करो जी॥ १॥
लंकापर बानर घिर आइया जी, होजी थाँरी लंका लेसी लूँट,
साँची बात पिया म्हारी मानलो जी॥ २॥
हँस रावण अभिमानी कह रयो जी, हाँये तूँ तो!
समझ बिना री नार, छोटा सा तपस्याँ सूँ डर रही हे॥ ३॥
मेघनाद सा सुत म्हारे अति बली जी, हाँ ये म्हारे!
कुम्भकरण सा बीर, छिनमें जीते जब संसार ने हे॥ ४॥
तपस्याँ ने छोटा मत जाणज्यो जी, हाँ जी वे तो!
अखिल भुवन रा नाथ छिन महँ जीते सब संसार ने जी॥ ५॥

(१००) तर्ज—तुम देखो लोगो भूल-भुलैया,

मन्दोदरी रानी देख तमाशो म्हारो तड़के।
राम अरु लक्ष्मण दोनों भाई, लाऊं हथकड़ी जड़के॥ टेर॥
कुम्भकरणसे भाई मेरे, मेघनाद से लड़के।
चाहे सन्मुख यम चढ़ आवे, हात करुँ चढ़-बढ़के॥ १ ॥
तेंतिस क्रोड़ देव वश म्हारे, मौत कुआमें लटके।
पवन भवन में देत बुहारी इन्द्र लाय जल छिड़के॥ २ ॥

एकबार जो काल भी आवे, युद्ध करूं लड़भिड़के।
अली कहे प्रभु अन्तरयामी, हिरदामें हरि धड़के॥ ३ ॥

(१०१) तर्ज—दिलकी आंख उघाड़

भैया रैन बीत रहि सारी लक्ष्मण अब तो मुख से बोल॥ टेर॥
तुम सूते सुख सेज बिछाई, फोज सैन्य सारी घबराई।
असुरनके घर बँटत बधाई, बाजत जंगी ढोल॥ १ ॥
हनूमान प्यारे तुम धावो, ला सुखेनको नबज दिखावो।
जामवन्त नल नील पठावो, करो चहूं दिशि गोल॥ २ ॥
आय सुखेन बात समझावे, है कोई वीर सजीवन लावे।
सूरज किरण उगन नहिं पावे, पड़े न किससे तोल॥ ३ ॥
महावीर संजिवनि लाये, वैद्य सुखेन घोलकर प्याये।
तुलसी लक्ष्मण तुरत जिवाये, लीन्ही आंखें खोल॥ ४ ॥

(१०२) तर्ज—लावनी

बल वैभवमें मुझसे तुममें, देखी ना अधिकाई है।
किस कारन हे राम युद्धमें विजय आपने पाई है॥ टेर॥
उत्तम विप्रवंश मेरा, तुम रघुवंशी बनवासी हो।
मेरे अंग विलास पूर्ण, तुम तापस वेष उदासी हो॥
बन-बन डोल रहे घर बिन तुम वृक्षोंके नीचे डेरा।
ब्रह्मा निर्मित गिरि त्रिकूटपर, लंकासा यह गढ़ मेरा॥
चारौं तरफ सुरक्षा के हित, सुदृढ़ सिन्धुसी खाई है॥ किस॥ १ ॥
बीस भुजा दस शीश मेरे, तुम द्वैभुज शीश नहीं दूजा।
ईष्ट देव शंकर दोनों के, शीश काट कर मैं पूजा॥
तुमने उन पर कभी खून की बून्द न एक चढ़ाई है॥ किस॥ २ ॥

मेरी पुलिस सतर्क सिंघिका, प्रबल लंकिनीसी नारी।
स्वर्ण और मणियों के महलों, से मन्डित नगरी सारी॥
तुम जीवन भर में सोने की, कुटिया नहीं छवाई है॥ किस॥ ३॥
मैं हिंसक पापी नर-भोजी, जगकी करी बुराई है।
कर-कर मदिरा पान नशेमें, सारी उम्र बिताई है॥
चरित हीन मेरा जीवन था आज समझमें आई है।
इसीलिये हे राम युद्ध में विजय आपने पाई है॥ ४॥
सदाचार से युक्त संयमी मेरा विभीषण भाई है।
देकर जिसे लात की ठौकर मुझे शरम नहिं आई है॥
आप भरत की प्रीत जगत में चन्द्र छटा ज्यों छाई है॥ इसी ॥ ५॥
मैं अपने गुरुदेव शम्भु का आसन दिया डुलाई है।
मात पिता की करी न सेवा, दीन्हा कष्ट महाई है॥
तुमने माता पिता गुरु की पद-रज सीस चढ़ाई है॥ इसी ॥ ६॥
मैं था लम्पट नीच कुकरमी तकि तकि तिया पराई है।
लड़-लड़ कर हर हर कर मैंने निज घर लाय बिठाई है॥
सपने में तुम पर नारी पर दृष्टि नहीं उठाई है।
इसीलिये हे राम युद्ध में विजय आपने पाई है॥ ७॥

(१०३) तर्ज—कुरजाँ

बरस चतुरदस बीचमें, बाकी रयो दिन एक,
रघुवर प्यारा बेगा आवो जी॥ टेर॥
पूजत प्रभुजीरी पावड़्याँ, नैणाँमें ढ़लि आयो नीर,
भाईसा म्हारा अवध पधारो जी॥ १ ॥
हिवड़े हलचल हो रही, रोक्यां रुकत नहीं प्राण,
रघुवर प्यारा टेक निभावो जी॥ २ ॥

धन-धन माता जानकी, धन प्यारा लछिमन भ्रात,
रघुवर थांनें सँगमहँ लीन्हा जी॥ ३ ॥
फरकत अँखियाँ दाहिनी सगुन सुहावन होय,
रघुवर प्यारा दरश दिखाओ जी॥ ४ ॥
अवध लगे अलखावणी, आप बिना रघुनाथ,
भाईसा थांरो राज सँभालो जी॥ ५ ॥

(१०४) तर्ज— जन्में श्रीकृष्ण मुरार

श्रीराम घणे अनुराग भायाँसूं भेंटिया।
मातावाँ मन मोद विरह-दुख मेटिया॥
सबसूं मिलिया धाय गुरुजीनें पूजिया।
सबका बिरह मिटाय कुशल सुख बूझिया॥
माता कहे हरषाय गया दुख आज है।
आनन्द भरया भन्डार सरया सब काज है॥
अम्ब कहे हे लाल! कहो बनकी बातड़ी।
किण बिध बीत्या दिवस कटी कैसे रातड़ी॥
असुर घणां बिकराल कहो कैसे मारिया।
संतन-सुख उपजाय देवाँ दुख टालिया॥
राम कहे सुण माय! लखन परतापसूं।
कर सारा दुख दूर मिल्या अब आपसूं॥
बानर रीछां मात मदत वाह-वाह करी।
कबहू न बिसरी जाय इणांरी चाकरी॥
भरत! कहूं केहि भांति मदत हनुमानकी।
जो न हुतो महाबीर ल्यातो कुण जाँनकी॥

बनका वेष उतार अंग सिणगारिया।
अवध सजाई सरब आमोद बधारिया॥
घर-घर मँगलचार आनंद बधावणा।
गावे मंगल गीत हरष उपजावणा॥

(१०५)

भरत भैया कपि से उरिन हम नाहीं॥ टेर॥
सौ जोजन मरिजाद सिन्धु की कूद गयो छन माहीं।
लंका जारि सिया सुधि लायो, गर्व नहीं मन माहीं॥ १ ॥
शक्ति बाण लग्यो लछमन के, शोर भयो दल माहीं।
द्रोनांगिरि कर पर धरि लायो, भोर होन नहिं पाई॥ २ ॥
अहि रावण की भुजा उखारी, पेठि गयो मठ माहीं।
जे कहुँ भैया हनुमत नहिं होतो, कौन लातो जग माहीं॥ ३ ॥
आग्या भंग कबहुँ नहिं कीन्हीं, जहँ पठयउँ तहँ जाई।
'तुलसीदास' मारुत सुत महिमा, निज मुख करत बड़ाई॥ ४ ॥

(१०६) तर्ज—म्हारा मोहनलाल जागोजी

चवदह वर्षांसूं म्हारे लगियो उमावो जी,
ओजी प्रभु बेगासा तिलक करावो,
म्हारे मनड़ेरो आनन्द बढ़ावो॥
म्हारा रघुवरलाल न्हावो जी॥ टेर॥
भाई भारतजीरी जट्टा सुलझावो जी,
ओजी बाँनें अपनें हातांसूं नहलावो,
वाँरे वस्त्र आभूषण सजावो॥ म्हारा०॥ १ ॥
सासू मिल सीताजीनें स्नान करावो जी,
ओजी साड़ी गहणां हीराँरा पहनावो,
साड़ी गहणां गजमोत्यांरा पहनावो॥ म्हारा०॥ २ ॥

रतन सिंहासन प्यारा रघुवर आवो जी,
ओजी बायें अंग सियाजीनें बिठावो,
बायें अंग बैदेहीनें बिठावो॥ म्हारा०॥ ३ ॥
सुरभि गऊरो ताजा घिरत मंगावो जी,
ओजी दही दुर्बा गोरोचन मंगावो,
कूंकूं केशर चन्दन चिरचावो॥ म्हारा०॥ ४ ॥
पहली तिलक म्हारा गुरुजी लगावो जी,
ओजी सारा विप्रांसूं तिलक करावो,
वानें छप्पन भोग जिमावो॥ म्हारा०॥ ५ ॥

(१०७) तर्ज—लाड जँवाई मिजमानी

अवधपुर उमड़्यो आज नोपत बाज रही।
घर आया लक्ष्मण राम बधाई लेस्याँ आज नोपत बाज रही॥ टेर॥
सखि बीत्या चवदह साल, प्रभुके दरश बिना।
म्हारा अब घर आया सिया राम॥ अवधपुर०॥ १ ॥
सखि हरषित दादुर मौर, चातक हरष रया।
कोई कोयल शबद सुनाय॥ अवधपुर०॥ २ ॥
सखि फूल्या कदम्ब-तमाल, दाड़िम फूल रही।
कोई भ्रमर करत गुञ्जार॥ अवधपुर०॥ ३ ॥
सखि रतन सिंहासन राम, बाँयें अंग वैदेही।
कोई जुड़ रयो सबही समाज॥ अवधपुर०॥ ४ ॥
सखि भरत-शत्रुघन भ्रात, लक्ष्मण पास खड़्या।
कोई हनुमत चँवर ढुलाय॥ अवधपुर०॥ ५ ॥
सखि रघुवरजीरे हात धनुवो सोह रयो।
कोई सियाजी के चीर सुरंग॥ अवधपुर०॥ ६ ॥

सखि सियाजी रो गौर सरूप श्यामल रघुवरको।
कोई शोभा वरणि न जाय॥ अवधपुर०॥ ७ ॥
सखि माता करत दुलार सव मन मोद भरी।
कोई आरति रहि है उतार॥ अवधपुर०॥ ८ ॥
सखि उमड़्यो देव समाज, नभमें भीड़ भई।
सब देव पुषव वरसाय॥ अवधपुर०॥ ९ ॥

(१०८) तर्ज—वधावो सन्तांरो

सैयाँ सियावर घर आया हे!
अवध नगर रलियामणो, सुख सम्पत छाया हे ! सैयाँ०॥ टेर॥
बचन पितारा पालन चवदह, वरस विताया हे!
सुर हार्‌या असुराँ कने, जुध आप जिताया हे ! सैयाँ०॥ १ ॥
बिरहा री रैण विताकर प्रभु, दिनकर दरशाया हे!
आँधानें आँख्याँ दिवी, जन मृतक जिवाया हे ! सैयाँ०॥ २ ॥
सूखानें हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हे!
प्रेमानन्द पियूषरा, बादल वरसाया हे! सैयाँ०॥ ३ ॥
देव पुष्प वरसा करे, वाजा मधुर वजाया हे!
राज विराज्या रामजी, सुख साज सजाया हे! सैयाँ०॥ ४ ॥

(१०९) तर्ज—पनिहारी वीकानेरी

राज्य सिंहासन राम विराजे, संग सोहे सीता माई।
निकट विप्र गुरु भ्राता सेवक, हनुमत है चरणा माहीं॥
ब्रह्मा विष्णू शंकर गणपति, सुरपति चन्द्र सूरज आदी।
सकल देव दरसणनें आया हो, संत मण्डल सँग सनकादी॥
किन्नर अरु गन्धर्व गाय गुण, निपुण अपसरा नाच रही।
मधुर-मधुर नभ दुन्दुभि बाजे हो, पुषपन की झड़ लाग रही॥

(११०) तर्ज—पनिहारी बीकानेरी

परम ब्रह्म परमेश्वर पूरण, सत्-चित् आनन्दमय स्वामी।
म्हे तो प्रभुजी! थांरो हुकम उठावाँ हो, थे सबका अंतरजामी॥ टेर॥
अलख निरंजन अज अविकारी, व्यापरया सब जग माहीं।
आपहि की गति मति कुण जाणे हो, नमो-नमो नित हे स्वामी॥ १ ॥
शेष शारदा पार न पावे जी, महिमा वरण सकत नाहीं।
भगत-बछल! भगताँ रे कारण, प्रगट हुवो जुग-जुग माहीं॥ २ ॥
अस्तुति कर सब देव सिधाया, जय-जय की अति धुन छाई।
घर-घर दीपमालिका सोहे, राज विराज्या रघुराई॥ ३ ॥

(१११)

घर आया है लक्ष्मण राम अयोध्या फूल रही॥ टेर ॥
बागज फूल बगीचा फूल्या, फूल रही बनराय॥ राम॥
पूरी अयोध्या ऐसी फूली, फूली कौशल्या हरिकी माय॥ १ ॥
पहले भाई भरतसूं मिलिया, पीछे केकइ माय॥ राम॥
अवधपुरीका सबसूं मिलिया, मिलिया कौशल्या हरिकी माय॥ २ ॥
सुरै गायको गोबर मँगावो, घर आंगन निपवावो॥ राम॥
माणक मोत्यां चौक पुरावो, कुम्भ कलश पधरावो॥ ३ ॥
सीताराम सिंहासन बैठा, लक्ष्मण चँवर ढुलावे॥ राम॥
गुरु वशिष्ठजी पूजा कीन्हीं, सखियाँ मंगल गावे॥ ४ ॥
अवधपुरी की सब वर नारी, धरे कलशपर झारी॥ राम॥
भर-भर मुट्ठी मोहर अँवारे, सूरतकी बलिहारी॥ ५ ॥
मात कौशल्या पूछन लागी, कहो लंककी बात॥ राम॥
किस विध तो गढ़ लंका जीती किस विध लाया सीता जाय॥ ६ ॥

हाट-बाट लक्ष्मणनें रोक्या, ओघट रोक्या राम॥ राम॥
दरवाजा लक्ष्मणनें रोक्या, कूद पड़े जी हनुमान॥ ७ ॥
रावण मार राम घर आये, घर-घर बँटत बधाई॥ राम॥
मात कौशल्या करत आरती, तुलसीदास जस गाई॥ ८ ॥

(११२) तर्ज—वानर बाँको रे

आनन्द आयो रे रघुवरजी म्हाँ पर रंग बरषायो रे,
आनन्द आयो रे सियावरजी म्हाँ पर रंग बरषायो रे
आनन्द आयो रे॥ टेर ॥
सुरसति गणपति शिव पारवती, ऐसो साज सजायो रे।
रामायण अरु सत्संगत को जोग मिलायो रे॥ आ०॥
हरि-भगती मुकतीरो म्हानें, मारग सुगम बतायो रे।
छोटा-मोटा सब अधिकारी, ढ़ोल घुरायो रे॥ आ०॥
रामचरितरो रसियो हनुमत, आसण आया लगायो रे।
गुपत भेषमें ताल बजावे, (माता) अंजनीरो जायो रे॥ आ०॥
क्रोड़ उपाय कर्‌याँ नहिं छूटे, ऐसो रंग जमायो रे।
पाप करमरो कूड़ो कचरो धोय बहायो रे॥ आ०॥
रघुवरजी रे राजतिलक रो, उच्छव आज मनायो रे।
नभमें देव पुषब बरषावे, मंगल छायो रे॥ आ०॥

(११३)

तुलसी मगन भये राम गुन गाय के॥
राम गुन गाय के प्रभु के गुन गाय के॥ टेर॥
कोई खावे लड्डू पेड़ा बरफी मँगाय के।
साधू पावे भिच्छा हरिके भोग लगाय के॥ १ ॥

कोई पीवे भाँग तमाखूं चट्टू चाय के॥
साधू पीवे राम रस गंगाजी में न्हाय के॥ २ ॥
कोई तो दुसाले ओढ़े कसीदा कढ़ाय के॥
साधू ओढ़े काला कंबल भसम रमाय के॥ ३ ॥
कोई पौढ़े खाट पै बिछौना सजवाय के॥
साधू पौढ़े धरती पै चट्टिया बिछाय के॥ ४ ॥
कोई जागे दोपहरी में सूरज चढ़ाय के॥
साधू जागे आधी रैण ठाकुर को लडाय के॥ ५ ॥
कोई तो अकड़ चाले उपर मुख बाय के॥
साधू चाले नीचे नजर कीड़ी को बचाय के॥ ६ ॥
कोई तो तमासा देखे टिकट कटाय के॥
साधू देखे ठाकुरजीको हृदय में बिठाय के॥ ७ ॥

(११४)

सियारानी का अचल सुहाग रहे,
राजा राम के सर पर ताज रहे॥ टेर॥
जब तक पृथ्वी अहि-शीश रहे,
ब्रह्मा शंकर जगदीश रहे,
नभ में शशि-सूर्य प्रकाश रहे,
तब तक मम हियमें वास रहे॥ १ ॥
नित बना रहे नित बनी रहे,
नित बना बनी में बनी रहे,
प्रेमीजन का बड़भाग्य रहे,
नित युगल-चरण अनुराग रहे॥ २ ॥

नित कनक बिहारि विराज रहे
नित सखियों का भी समाज रहे,
नित झांकी का यह साज रहे,
ज्यों का त्यों जैसा आज रहे॥ ३ ॥

(११५)

शिक्षा दे रही जी हमको रामायण अति भारी॥ टेर ॥
गृहस्थाश्रम में रहकर प्यारे मत परणो बहु नारी।
बृद्ध अवस्था में दशरथ की कैकइ बात बिगारी॥ १ ॥
राज्य छोड़ बन गये रामजी पितु आग्या सिरधारी।
अब तो पिता की मूँछ उखाड़न की करते तैयारी॥ २ ॥
रंगमहल के सर्व सुखों पर जिसने ठोकर मारी।
बनमें रही पती के सँगमें सतवंती सिय नारी॥ ३ ॥
विपति समय में संग राम के लछमन करि तैयारी।
अब तो बैर करे भाई से, रहे मुकदमा जारी॥ ४ ॥
लछमन सीस झुका सीता को कहता था महतारी।
हाय आजकल तो भाभी से छोड़ी शिष्टाचारी॥ ५ ॥
राज तिलक की गेंद बनाकर खेलन लगे खिलारी।
इधर रामजी उधर भरतजी दोनों ठोकर मारी॥ ६ ॥
चरन पादुका धरी सिंहासन ये ही बात बिचारी।
साधू बन के रहा भरत, नहिं हुआ राज्य अधिकारी॥ ७ ॥
तन मन से अति सेवा की थी हनूमान बल धारी।
अब तो मुख पर करे प्रसंसा पीछे देवे गारी॥ ८ ॥
लोभ और तलवार देखि नहिं सियाने हिम्मत हारी।
तनक लोभ में धर्म गमावे हाय आजकल नारी॥ ९ ॥

पंडित था लंकेश बुद्धि में तेज बहुत बल धारी।
काम क्रोध मद लोभ मोह से राक्षस भया अनाड़ी॥ १० ॥
भक्त विभीषण ने भाई की संगति बुरी बिचारी।
अच्छी संगति में तुम जावो कहता बेद पुकारी॥ ११ ॥

(११६)

रघुबीर मोरी सजनी प्यारा लगे॥ टेर॥
सरजू के तीर अयोध्या नगरी, चौकी पै हनुमत बीर॥ १ ॥
छोटे-छोटे तरकस छोटी धनुहियाँ, छोटेसे लछमन बीर॥ २ ॥
रामजी के सोहे केशरिया जामो, सियाजी के दखनीं चीर॥ ३ ॥
'कान्हरदास' कहे दरशन हित, भई संतन की भीर॥ ४ ॥

(११७)

सुनो मेरी मावड़ी जनकजी री डावड़ी
सब जिवड़ाँ रो दुख दूर करदे।
म्हारी थोड़ीसीक अरज मंजूर कर दे॥ टेर॥
करो इतरी पूरती, किरपा की थे मूरती,
कियो सब माफ कसूर कर दे॥ १ ॥
परम सयानी सिया महारानी,
राम-भगती में भरपूर कर दे॥ २ ॥
दूजी बाताँ टालदे कपूतड़ाँ ने पालदे,
राम नाम नशे माहीं चूर करदे॥ ३ ॥
भेजो जठे जाऊँ जोड़ी रा गुण गाऊँ,
सब संताँरी पग धूर करदे॥ ४ ॥

परिशिष्ट

श्रीराम-जन्मोत्सव

(११८)

नौमी के दिन बजत नगारा, प्रगट भया रघुराई।
चैत्र मास मधु मास सुरंगो, बसंत रितु छबि छाई॥ १ ॥
अवधपुरी में आनन्द छायो, घर घर बटत बधाई।
सरजूजी में उठत हिलौरा सीतल पवन सुहाई॥ २ ॥
मुदित भई कौशल्या माता सुख बरन्यो नहिं जाई।
कुशल कौशलाधीश सबन्हि कहुं देत बस्तु मनचाई॥ ३ ॥
नाचत गावत देव अपसरा पुषप रहे बरषाई।
ले बीना नारद रिषि नाचे रघुकुल को जस गाई॥ ४ ॥
ब्रह्मा नाचे शंकर नाचे संतन सँग समुदाई।
बेद मंत्र सब बिप्र उचारे जय जय घोष मचाई॥ ५ ॥

(११९)

रघुनंदन प्रान हमारा मुनि यह क्या वचन उचारा॥ टेर॥
जो माँगो देश खजाना, मन भावत लीजे दाना।
मेरा जीवन इनके लारा॥ १ ॥
यह बनत न बात गोसाईं, मन मानत मेरा नाहीं।
मेरा राम है प्राण आधारा॥ २ ॥
कहाँ वे निश्चर बलवाना, कहँ यह बालक अनजाना।
अब तुमहीं करो विचारा॥ ३ ॥
यों तुलसिदास यश गावे, नृप मुनिवर को समझावे।
यह बालक बहुत कुमारा॥ ४ ॥

(१२०)

धनुष यग्य जनकपुरीमें राम जाना चाहिये।
जाय के दरशन जनक को भी दिखाना चाहिये॥ टेर॥
एक तो चरनों की रज से है अहिल्या तारनी।
दूसरे दुख जानकी का भी मिटाना चाहिये॥ १॥
लाज अब राजा जनक की है तुम्हारे हातमें।
जो किया उसने है प्रन उसको निभाना चाहिये॥ २॥
घोर शंकट में पड़ी है नन्दिनी मिथिलेश की।
धनुष को चल कर स्वयंवर में उठाना चाहिये॥ ३॥
कष्ट मुनियों के तुम्हीने दूर रघुनन्दन किये।
जानकी को भी कृपा कर वर के लाना चाहिये॥ ४॥
सूर्यकुल के सूर्य हो तुम प्रान प्रिय सब जगत के।
वीरता रघुवंश की चल कर दिखाना चाहिये॥ ५॥

(१२१)

मुनिजी कौन ये राज किशोर।
रूप अनूप कमल दल लोचन, श्याम गौर चित्त चोर।
दृगन्ह बसी छबि जुगल मनोहर, निरखत चन्द्र चकोर।
नयन थके छबि देखत मेरे, टुक टुक इन्ह की ओर।
धन्य भाग यह आये जनकपुर, श्यामल गौर किशोर।
रंगभूमि महँ लाओ कुँअर दोउ, बिनय करूँ कर जोर।

(१२२)

रतनारे नैना बाँके, मुनि सँग बालक काके॥ टेर॥
रवि ससि कौटि बदनकी सोभा, स्याम गौर तन जाके।
रामचन्द्र कौसल्या जाये, दसरथ नाम पिता के॥ १॥

क्रीट मुकुट मकराकृति कुण्डल, धनुप बाण कर जाके।
गौतम ऋषि की नारि अहिल्या, तारी चरन छुहाके॥ २ ॥
ऋषि का यग्य पूर्ण कर प्रभुजी, आये जनक राजा के।
चिन्ता सबकी मेटी रघुवर, कारज करन सिया के॥ ३ ॥
सखियन के सँग चली जानकी, पूजा करन उमा के।
तुलसीदास आस रघुवर की, लेख लिखा बिधना के॥ ४ ॥

(१२३)

रायेवर घूमरया छे जी।
जनकपुरी की अली गली में घूम रया छे जी॥ टेर॥
सखियन के संग चली जानकी, गौरी पूजन काज।
हात जोड़ कर करूँ बीनती, बर दीजो रघुराज॥ १ ॥
राम लखन दोउ खड़्या बाग में, पुष्पन दौनां हाथ।
सीताजी को रूप देख कर, सुध भूल्या रघुनाथ॥ २ ॥
सुरत सलौनी साँवरा थाँरा, घूँघरवारा केस।
म्हे थांने पूछां राजवी थे, बसो किणाँ रे देस॥ ३ ॥
बिस्वामित्र मुनी संग आया, पुरी अयोध्या गाँव।
दशरथजीरा कुंअर लाडला राम लखन है नांव॥ ४ ॥
मिथिलापुर में जग्य रचायो, तोरण आया भूप।
जनकराज जी सुधबुध भूल्या, निरख राम रो रूप॥ ५ ॥
तुलसी प्रभु को मंगल गावे, निरखत दुलहा राम।
सबकी आसा पूरण कीन्हीं, जनकराज के धाम॥ ६ ॥

(१२४)

सुन्दर सखी दो कुमार, कुमार मैंने देखे॥ टेर॥
हातों में फूलों का गजरा भी सोहे, सुन्दर गले में सोहे हार॥
सुन्दर सलौने बाँके रसीले, मोह लिये नर नार॥

मुनियों का यग्य इन्होंने रचाया, दीनो की सुनते पुकार॥
भगतों के जीवन संतों के प्यारे, सबके हैं प्रान आधार॥
करुना के सागर दशरथ दुलारे, सब इनसें करते हैं प्यार॥
पल भर में अपने चरनों की रज से, नारी अहिल्या दी तार॥

(१२५)

हम पर चलाय दियो टोना, किशोर गोर साँवरे सलौना॥ टेर॥
राम लखन को जनकपुर में देखा, ज्यों नीलम अरु सोना॥ १ ॥
राम लखन को फूल बगिया में देखा, हातन में लिये फूल दौना॥ २ ॥
रामजी को देख मैं घुँघट पट कीनो, खुला रहा एक कोना॥ ३ ॥
मृदु मुसुकाय राम मोहि देखत, हो गया जो कुछ होना॥ ४ ॥

(१२६)

देखा स्वरूप राम का सीता ठिठक गई।
विजली सी लगी दमकने आँखें झपक गई॥ टेर॥
जाती थी वह पूज के गिरिराज किशोरी।
रघुनंदन की छबि देख के सुकुमारी रुक गई॥ १ ॥
दौना लिये हैं पुष्प के कछु दूर में खड़े।
फूलों के तनक भार से कलई लचक गई॥ २ ॥
जिस भाँती सहज भाव से सुकुमार जो खड़े।
फूलों में महक छा गई कलियाँ चटक गई॥ ३ ॥
देखी विदेह नंदिनी के प्रेम की छटा।
चंचल सखी सहेलियाँ चुपके खिसक गई॥ ४ ॥

(१२७)

सुन्दर वदन देखि रघुवर को, कह सखियन सौं जनक दुलारी।
चाप तनहु न तनहु मोरी सजनी, मैं अपने मन यह ही बिचारी।

बिसवा बीस बरूँ रघुवर को, नातर रहौंगी निपट कँवारी।
ठाढ़ी सीता सोच करत है, हमरे पिता कियो प्रन भारी।
कठिन धनुष शिवशंकरजी को, कोमल गात उमर अति बारी।
मैं अपनो पति जान सखी री, डारिदई मन वरमाला री।
मिथ्या भूप सकल चलि आये, जाओ जी घर तजि आस हमारी।
तोड़ो धनुष जनक प्रन राख्यो, मगन भये सब नर अरु नारी।
'तुलसीदास' सुनहु कमला पति, नित चितवहु प्रभु ओर हमारी।

(१२८)

हे रघुवंशी रघुवीर विनय सुनो मेरी।
मोहि करो नाथ तव चरन कमल की चेरी॥ टेर॥
सब वीर सभा के चाप देखि कर हारे,
करुनानिधान मिथिलेश बिकल बेचारे।
तुम चरन कमल से नारि अहिल्या तारी,
क्या रहेगी करुनासिन्धु जानकी क्वांरी।
तुम दरशन बिनु मेरी अँखियाँ है प्यासी,
मुज दीन हीन को नाथ करो निज दासी।
मुख कमल तुम्हारा निरखन चहत किशोरी,
किस भाँति निहारे तव मुख चन्द्र चकोरी।

(१२९)

धीरे चलो सुकुमार, कुमार सिया प्यारी॥ टेर॥
बेला भी गूँथा चमेली भी गूँथी, बिच बिच गूँथा अनार,
अनार सिया प्यारी॥ १ ॥
संग सियाजु के सखियाँ सोहे, हाथोंमें लिये जयमाल
कुमार सिया प्यारी॥ २ ॥

कर कमलन से हार पहनायो, चरनो में जावें बलिहार,
कुमार सिया प्यारी॥ ३ ॥

(१३०)

आई आई आज बरात, लेकर अवधपुरी के साथ
रिषि मुनि खड़्या जोड़कर हात, देव जयकार मनावे है॥ टेर॥
मँगसर सुदी पंचमी आई, जा दिन ब्याह कियो रघुराई,
घर घर बट रही आज बधाई सखियां मंगल गावे है॥ १ ॥
लागी गली गली में भीड़ दुलहा मुसकावे रघुबीर,
मिटगइ जनम जनम की पीर प्रेम का आँसू आवे है॥ २ ॥
बाजे बाजा ढ़ोल अपार पंडित गावे शाखोचार,
रघुवर बन्या गले का हार खुशियाँ नायँ समावे है॥ ३ ॥
म्हे तो जनकपुरी में जावां मिथिलेश्वरि का दरशन पावां,
ज्याँने बहू बनाकर ल्यावा धरती भाग्य सरावे है॥ ४ ॥
आवो बनो बराती सारा म्हे रघुवर का रघुवर म्हारा,
सेवक भँवर गाय कर हारा पल पल शीश झुकावे है॥ ५ ॥

(१३१)

बनासा म्हारा म्हे तो थाँरा दरसण करबा आई हो,
दशरथजी रा लाल, माता कोशल्या रा लाल, म्हारा दीनदयाल।
रूप माधुरी निरख निरख सुख पाई हो दयाल।
बनासा म्हारा श्याम बरण ने देख घटा घिर आई हो,
सूरज किरणा सोने री बरसाई हो दयाल।
बनासा म्हारा बीच सभामें लीना धनुष चढ़ाई हो,
सूरबीर नृप देख रया घबराई हो दयाल।

बनासा म्हारा तोड़्यो धनुष जनकजी की व्यथा मिटाई हो,
धन्य भाग म्हांने मिलग्या आप जँवाई हो दयाला।
बनासा म्हारा जयमाला ले हात सिया जी मुसकाई हो,
चतुर सिरोमणि रघुवर ने पहनाई हो दयाल।
बनासा म्हारा राजा जनकजी बाँटी है खूब बधाई हो,
सकल देवता पुषप रया बरषाई हो दयाल।

(१३२)

माता कौसल्या को जायो हे, बनो लूम झूम आयो॥ टेर॥
बागो अतलस को झीणों, ओ तो चंद्र किरण छबि छायो हे॥ १ ॥
बनो तुरँग चढ्यो अति सोहे, जोड़े रा जानी ल्यायो हे॥ २ ॥
ए तो धन दसरथ कौसल्या, ज्याँने निज गोद खिलायो हे॥ ३ ॥
धन जनक किसोरी सीता, आली ऐसो वर पायो हे॥ ४ ॥
सखि कौटि मदन तन सोभा, निरखत निज भाग सरायो हे॥ ५ ॥
लखि तुलसिदास हिय हरषे, सखियाँ मिल मंगल गायो हे॥ ६ ॥

(१३३)

सहेल्याँ म्हाँने रघुवर बनो लागे प्यारो॥ टेर॥
कहा कहूँ वाँरे मुख की सोभा, फूल्यो फूल हजारो॥ १ ॥
सीस मुकुट केसरिया बागो, गल मोतियन को हारो॥ २ ॥
जनक नगर में ब्याहन आयो, दसरथ राज दुलारो॥ ३ ॥
ललनासखी मोय निरखन दीज्यो, जीवन प्रान हमारो॥ ४ ॥

(१३४)

गुणाँ रा गाढ़ा रहिज्यो हो रघुवरजी बनड़ा॥ टेर॥
जनकपुरी सों पतियाँ भेजी, जाय अवधपुर दीज्यो॥ १ ॥
रघुवर लक्ष्मण भरत सत्रुघन, इतरी अरज म्हारी सुणज्यो॥ २ ॥

प्रेम भरी रँग रस की बातां, थाँरी माता ने मत कहिज्यो॥ ३ ॥
ललनासखी कर जोर कहत, म्हारी सीता ने सुख दीज्यो॥ ४ ॥

(१३५)

सहेल्याँ म्हे तो बाइजी रे लारे जास्याँ॥ टेर॥
राजेस्वरी मिथिलेस कुँअरि ने, बाइजी कह बतलास्याँ॥ १ ॥
दसरथ सुत नणदोइसा वाँने, गारी गाय सुणास्याँ।
अवध नगर की गलियन माहीं, दायजवाल कहास्याँ॥ २ ॥
जे कोई बाइजी ने मैणा देवे, एक की आठ सुणास्याँ।
जे कोई बाइजी सूं कड़वा बोले, मिथिला को जोर दिखास्याँ॥ ३ ॥
जनकपुरी ने याद करे तो, छानें खबर पहुँचास्याँ।
सीयासखी की याही वीनती, नितप्रति लाड लडास्याँ॥ ४ ॥

(१३६)

बना थाँरी ओल्यूँड़ी म्हाँने आवे।
अरज करत मिथिला की महिला, जो प्रभुके मन भावे॥ टेर॥
नैणाँ दरस तृपत नहिं मानत, हिवड़ो भरि भरि आवे।
के ले चालो सियाजी के सँगमें, और कछू नहीं भावे॥ १ ॥
प्रेम मगन भये सब पुरवासी, नयणा न नीर समावे।
चलत बरात न भावत काहू, बिरह बिकल पछितावे॥ २ ॥
मिलत जनक हिय भरि दशरथ सों, करि विनती सिर नावे।
आये अवध वर वास मध्य करि, विरद दयासखि गावे॥ ३ ॥

(१३७)

जब तुम्हीं चलें बनवास हमें दे त्रास,
हो राम दुलारा, दुनियाँ में कौन हमारा॥ टेर॥
कैकई बहुत पछितायेगी, करनी का वह फल पायेगी,
वन भेज रही मेरी आँखों का तारा॥ १ ॥

धोखेमें मुजको घेर लिया, आशाओं पर जल फेर दिया,
क्या किया बचन दे दिया बचन दे हारा॥ २ ॥
पुरवासी जब सुन पायेंगे रो रो कर सब मर जायेंगे,
हे कुल कलंकिनी तुमनें अवध उजारा॥ ३ ॥
आँखों से पानी बहता है, रो रो कर दशरथ कहता है,
ले प्रान मगर मत भेज प्रान का प्यारा॥ ४॥

(१३८)

काहे डरत तुम आगे लावो नैया॥ टेर॥
चरन छुहत प्रभु पथरी भी तरगई।
कैसे बचेगी मेरी काठ की नैया॥ १ ॥
यह तो वचन थे गौतम रिषि के।
काठ की जाय तो सोने की मढ़ैया॥ २ ॥
सोने की नैया प्रभु जलमें न तरती।
मुजको भली है मेरी काठ की नैया॥ ३ ॥

(१३९)

सुनो रघुनाथ तुमको पार अब कैसे लगाऊँ मैं।
चढ़ाकर के तुम्हें यह नाव क्या अपनी गमाऊँ मैं॥ टेर॥
हजारौं है यहाँ केवट, हजारौं नाव है जल में,
बुलालो और केवट को, नहीं अब नाव लाऊँ मैं॥ १ ॥
उडी चरनों के रज कन से, शिला पाषाण की भारी,
अगर जो उड गई नैया, कहो कैसे बचाऊँ मैं॥ २ ॥
अगर दो चार होती तो, भले ही एक उड जाती,
न रहवे एक भी नौका, कमाकर कैसे खाऊँ मैं॥ ३ ॥
करूँगा पार मैं इस शर्त पर मन्जूर तुम कर लो।
चरन पहले पखारूँगा, तुम्हें पीछें चढ़ाऊँ मैं॥ ४ ॥

(१४०)

मेरे रघुवरजी उतरेंगे पार, गंगा मैया धीरे बहो॥ टेर॥
हे गंगा मैया तेरी दुहैया, मैं माझी मेरी काठकी नैया।
बैठेंगे मेरे सरकार॥ १ ॥
नैया हमारी डगमग डोले, बीच भँवर में खाये झकोले।
छूट ना जाये पतवार॥ २ ॥
केवट प्रभुके चरण पखारे, रघुनंदन को पार उतारे।
बरषें हैं पुषप अपार॥ ३ ॥
कहे प्रभु केवट लेओ उतराई, केवट बोले सुनो रघुराई।
(मेरा) भवसे लगादो बेड़ा पार॥ ४ ॥

(१४१)

जननी मैं न जीऊँ बिनु राम॥ टेर॥
सिया राम लक्ष्मण वन को सिधाये, राऊ गये सुर धाम॥
कुटिल कुबुद्धि कैकय नंदिनि, बसिये न वाके गाम॥
प्रात भये हम हीं वन जैहैं, अवध नहीं कछु काम॥
तुलसी भरत प्रेम की महिमा, रटत निरंतर नाम॥

(१४२)

कहाँ के पथिक कहाँ कीनो है गमनवा॥ टेर॥
कौन गाँव कौन ठाँव के बासी,
केहि कारन तुम तज्यो है भवनवा॥ १ ॥
उत्तर दिसा इक नगरि अयोध्या,
राजा दशरथ तहाँ बस्यो है भवनवा॥ २ ॥
उन्हींके हम दोनो कुँअरवा,
माता के बचन सुनि तज्यो है भवनवा॥ ३ ॥

ग्रामवधू पूछे सियाजी सौं,
कौन तेरो प्रियतम कौन देवरवा॥ ४ ॥
सिया मुसकाय बोलत मृदु बानी,
साँवरो सो प्रीतम गोरोसो देवरवा॥ ५ ॥
'तुलसीदास' प्रभु आस चरननकी,
मेरो मन हरलीनो जानकी रमनवा॥ ६ ॥

(१४३)

बनमें बिछोह करके सीता कहाँ सिधारी।
देखी कोई बताओ वह जानकी हमारी॥ टेर॥
जंगल की तुम लताओं, हमको पता बताओ,
तुमनें तो ना छिपाली, मिथिलेश की दुलारी॥ १ ॥
ऋषियों की बालिकाओं, तुम भी पता बताओ,
तुम्ह में हीं खेलती थी, वह थी सखी तुम्हारी॥ २ ॥
कोयल चकोर उड़के देखो इधर उधर को,
किस कुञ्ज में छिपी है, सीता वो प्रान प्यारी॥ ३ ॥
कोयल सी बैन वाली, मृगनी से नैन वाली,
सूरत जरा दिखादो, सूरज मुखी हमारी॥ ४ ॥
घट घट में राम रमते, सीता की खोज करते,
देखो उन्हीं प्रभुकी, लीला सभी से न्यारी॥ ५ ॥

(१४४) तर्ज—गोपीचन्द

प्रियतम रघुराई कैसे बिसराई दासी जानकी॥ टेर॥
चरन कमल की सेवा के हित अवधपुरी से आई,
अध बिच दैव बिछोहा कीन्हा, सेवा करन न पाई जी॥ १ ॥
लक्ष्मण दोष कछू नहिं तुमको, नाहक रोष बढ़ाई,
अब पछिताऊँ अपने मनमें, करनी का फल पाई जी॥ २ ॥

या बनमें जो ऋषी मुनी हो, सुनियो चित्त लगाई,
मेरे दुख को बरनन करियो, जब आवे रघुराई जी॥ ३ ॥
मैं हूँ दुर्वल गाय कसाई, दशकन्धर दुखदाई,
बेगि खबर लो नाथ आय अब तुम बिनु कौन सहाई जी॥ ४ ॥

(१४५)

ऐ रावन तूँ धमकी दिखाता किसे,
मुझे मरने का खोफ खतर ही नहीं।
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं।
जो तूँ सोने की लंका का मान करे,
मेरे आगे ये मिट्टीका घर ही नहीं।
मेरे दिलका सुमेरू डिगेगा नहीं,
मेरे मनमें किसीका भी डर ही नहीं।
आवे इंद्र नरेन्द्र जो मिलके सभी,
क्या मजाल जो सील को मेरे हरे।
तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया,
मेरी नजरों में कोई बसर ही नहीं।
तूने सहस्त्र अठारह जो रानी वरी,
हाय इसपर भी तुझको सबर ही नहीं।
पर नारी पै तूने जो ध्यान दिया,
किया घोर नरक का खतर ही नहीं।
क्यों न जीत स्वयंवर तूं लाया मुझे,
मेरी चाह जो थी तेरे दिलमें बसी।
वह था कौन शहर मुझे तूँ बता,
जहँ स्वयंवर की पहुँची खबर ही नहीं।

जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा,
मुझे राम पै जल्दी से दे तूँ पटा।
कहे वैदेही वरना तूँ देखेगा क्या,
ये चँद रोज में तेरा सर ही नहीं।

(१४६)

शवरी सुगन मनावे जी मेरे घर राम आवेंगे॥ टेर॥
वीन वीन फल लाई शवरी, दोना न्यारे न्यारे।
आरति साज प्रार्थना कीन्हीं, छिन मन्दिर छिन द्वारे॥ १ ॥
ऋषि के वचन सुनत मनमाहीं, हर्ष न हृदय समाई।
घरका काम सकल तज दीन्हा, गुन रघुपति का गाई॥ २ ॥
अनुज सहित प्रभु दरशन दीन्हा, परी चरन लपटाई।
'तुलसीदास' प्रभु अधम उधारन, दीन जानि अपनाई॥ ३ ॥

(१४७)

घर आवेंगे एक दिन राम, शवरी के हरष भयो॥ टेर॥
वोले वचन मतंग ऋषि तूँ सुन शवरी दे कान।
एक समय तेरे घर शवरी, आवेंगे लछमन राम॥ १ ॥
वचन सुनत निश्चय मन कीन्हो, छोड्यो घरको काम।
वार वार घर वाहर आवे, देखन लछमन राम॥ २ ॥
चाख चाख नित ही फल लावे, नितही वनमें जाय।
खड़ी खड़ी वो वाट निहारे, कव दरशन दे आय॥ ३ ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई, घर पर पहुँचे आय।
प्रेम मगन मुख वचन न आवे, चरनो में गई लपटाय॥ ४ ॥
चरन धोइ चरनामृत लीन्हो, आसन दियो बिछाय।
कन्द मूल फल प्रभु को दीन्हा, रुचि रुचि भोग लगाय॥ ५ ॥

ऐसी अधम जाति शबरी को, दी निज धाम पठाय।
श्याम कहे विशवास रखे से, दे दरशन घर आय॥ ६ ॥

(१४८)

आछे मीठे चोखे चाखे, बेर लाई भीलनी॥ टेर॥
ऐसी क्या आचारवती, सुधी नायँ एक रती।
ओछो कुल नीची जात, अति ही कुलीचनी॥ १ ॥
जूठे फल खाये श्याम, प्रेम की प्रतीति जान।
उँच नीच जाने नायँ, रस की रसीलनी॥ २ ॥
वेद ना पुरान पढ़ी, झटके विमान चढ़ी।
हरिजी से कीनो हेत, वैकुण्ठ में झूलनी॥ ३ ॥
ऐसी प्रीत करे कोई, दासी मीरा तरे सोई।
प्रीत की प्रतीति जानी, गोकुल अहीरनी॥ ४ ॥

(१४९)

उपवन ने दियो उजाड़, बानर बाँको रे॥ टेर॥
माता की आग्या हुई, झट पहुँच्या पवनकुमार॥ १ ॥
पाका पाका फल खावे, रूँखा ने दिया उखाड़॥ २ ॥
लंका में भगदड़ मची, राकसिया करे पुकार॥ ३ ॥
लुक छिपकर कोइ भाग गया, कोइ घरका जड़्या किंवाड़॥ ४ ॥
थर थर डरता धूज रया, कोइ कपड़ा दिया बिगाड़॥ ५ ॥
राकसण्या रा टाबरिया, रो रो कर करे चिंचाड़॥ ६ ॥
सुण रावण रीसाँ बल्यो, झठ भेज्यो अक्षयकुमार॥ ७ ॥
पकड़ अक्षय ने मसल दियो, धरणीपर दियो पछाड़॥ ८ ॥
धन धन सेवक राम का, थाँने ध्यावे सब संसार॥ ९ ॥

(१५०)

बालम थाँने बरज रही म्हारा कंथा।
थे तो उलटि लगाई चिन्ता॥ टेर॥
जोगी को भेष धरो मत रावण, मत पहरो गल कंथा।
तीन लोक का नाथ विश्वम्भर, मार लुटे थाँरी लंका॥ १ ॥
उड़त निशान बाज रहे बाजे, सिन्धू राग सुणंता।
जिन्ह का बाण गगन से गरजे, वे लक्ष्मण बलवंता॥ २ ॥
रानी मंदोदरि शोक करत है, नैणाँ नीर झरंता।
वानर महल कँगाराँ बैठ्या हनूमान बलवंता॥ ३ ॥
रावण मार अहिरावण मार्‌यो, मेघनाद बलवंता।
'तुलसिदास' प्रभु तुमरे दरस ते, मिटगइं सबकी चिंता॥ ४ ॥

(१५१)

म्हारी सीख सुलखणी मानो जी सुरपणखा रा बीर।
सुरपणखा रा बीर म्हारी नकटी नणद रा बीर॥ म्हारी॥
काईं पिया थे कुबध कमाई हरल्याया थे नार पराई।
लंका पर सेना चढ़ आई।
सीता जनकराज की जाई निरमल गंगा नीर॥ म्हारी॥
आयो रात में सपनो कूड़ो फूट्यो आज चिलकणू चूड़ो।
खुलो पड़्यो माथे को जूड़ो।
दशरथ राजकुमार म्हारो रँग्यो रकत में चीर॥ म्हारी॥
हणूमान जब हाँक लगावे सुण म्हारी छाती धड़कावे।
राम लखण दोउ धनुष चढ़ावे।
जाण बूझ थे मरस्यो म्हारी फोड़ो क्यूँ तकदीर॥ म्हारी॥
म्हारी सीख पिया थे मानो, जगत मात सीता ने जाणो।
जगत पिता रघुवर पहचाणो।
सीता सौंप सरण हो जावो कृपा करे रघुवीर॥ म्हारी॥

(१५२)

कहे रामचन्द्र बिलखाय, उठ लछमन भैया॥ टेर॥
तुम बिनु कैसे घर जाऊँ, कैसे मैं मुँह दिखलाऊँ।
क्या कहे सुमित्रा माय, उठ लछमन भैया॥ १ ॥
लछमन बीर उठो भैया , तुम बिनु चैन पड़े कैयाँ।
मेरी अँखियाँ भर भर आय, उठ लछमन भैया॥ २ ॥
मेघनाद पापी शैतान, मार्‌यो कैसो सकती बाण।
क्यों पड़्यो धरनि मुरछाय, उठ लछमन भैया॥ ३ ॥
उठ उठ लछमन भाई रे, बिलखत है रघुराई रे।
भ्राता ने धीर बँधाय, उठ लछमन भैया॥ ४ ॥
ऐसे बिलख रया रघुराय, हनूमानजी पहुँच्या आय।
जाग्या लछमन हरषाय, उठ लछमन भैया॥ ५ ॥

(१५३)

म्हारे रामजी मिलण रो जोग, फरूखे म्हारी आँखड़ली॥ टेर॥
चवदह बरष तो बीत रया जी, अजहुँ न आया राम।
आज अयोध्या सबही सूनी, कब मिलसी घनश्याम॥ १ ॥
आन बधाई देइ पवनसुत, भरत उठे हरषाय।
माता कुशल राम घर आया, चलो बधावाँ जाय॥ २ ॥
आगे गुरु वशिष्ठजी आया, संग लेई सब मात।
भरत शत्रुहन भाई आया, लोग नगर का साथ॥ ३ ॥
पहली राम पड्या गुरु चरणां, बहुर मिले सब माय।
पीछे मिलिया भरत शत्रुहन, प्रेम नयन जल छाय॥ ४ ॥
नगर अयोध्याका नर नारी, सबसूं भेंट्या राम।
हिल मिल सखियां मंगल गावे, लेय सियावर नाम॥ ५ ॥
कंचन कलश बधावे सखियाँ, पहरी मोतियन माल।
मात कोशल्या करत आरती, ले कंचन को थाल॥ ६ ॥

रावण मार राम घर आया, घर घर बटत बधाई।
तुलसीदास आस रघुवरकी, हरि चरणां चित लाई॥ ७ ॥

(१५४)

उठ मिलले भरत भैया हरि आये॥ टेर॥
राम भी आये भैया लक्ष्मण आये,
सीता सतवंती को सँग लाये॥ १ ॥
भुजा पसार मिले दोउ भाई,
नैनन्ह नीर झलक आये॥ २ ॥
कहो ना भैयाजी वन-खँड की बातें,
कैसी कैसी विपति भुगत आये॥ ३ ॥
वनमें रहे भैया वन-फल खाये,
तुम्ह बिनु चैन नहीं पाये॥ ४ ॥
रावन मार अहिरावन मार्‍यो,
राज्य विभीषन दे आये॥ ५ ॥
'तुलसीदास' भजो भगवाना,
प्रभु के चरन महँ चित लाये॥ ६ ॥

(१५५)

आज अवधपुर बटत बधाई॥ टेर॥
चवदह बरष बिताकर आये, लछिमन सहित सिया रघुराई॥ १ ॥
करि मज्जन पट भूषन साजे, सिय रघुवर भरतादिक भाई॥ २ ॥
सीता राम सिंहासन सोभित, तिलक करे वशिष्ठ मुनिराई॥ ३ ॥
मातु मुदित सब मंगल साजै, दान देत सब विप्र बोलाई॥ ४ ॥
दुंदुभि देव बजावत नभ में, बरषत सुमन अपछरा गाई॥ ५ ॥
लछिमन भरत शत्रुघन हनुमत, सोहत भ्रात सखा समुदाई॥ ६ ॥
लिये धनुष कर खड़ग ढ़ाल सब, छत्र पंख अरु चँवर ढुराई॥ ७ ॥

बंदत चारौं बेद देह धरि, शिव करि विनय भगति दृढ़ पाई॥ ८ ॥
'सियालाल' सुत सरन राउरी, यह छबि रहउ सदा उर छाई॥ ९ ॥

(१५६)

चाल सखी दरसन करले रथमें रघुनंदन आवत हैं॥ टेर॥
सीता राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन हनुमत चँवर ढुलावत हैं॥ १ ॥
शिव सनकादिक ध्यान धरत है नारद बीन बजावत हैं॥ २ ॥
नभ में सब मिल देवि देवता पुष्प माल बरषावत हैं॥ ३ ॥
मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास जस गावत हैं॥ ४ ॥

(१५७)

कर मन रघुनंदनको ध्यान।
कृपा मूर्ति संतन सुख दायक, साहिब सील निधान॥ टेर॥
भटकत क्यों जगमें निसि बासर, जैसे घर घर स्वान।
तिलक त्रिलोकी पिता तिहारो, कोशल पति भगवान॥ १ ॥
इक कर कमल धनुष पर राजत, दूजे कर महँ बान।
वाम भाग में जनकसुता की, शोभा लसत महान॥ २ ॥
रतन जड़ित सिर मुकुट कनक मय, कुण्डल झलकत कान।
नयन निरखि कौटिक मृग लाजत, भ्रमर कोटि अलकान॥ ३ ॥
नासा लखि कौटिक शुक लाजत, तिलक ललाट सुहान।
बिधु कौटिक लाजत मुख निरखत, लाली अधरन पान॥ ४ ॥

(१५८)

पोढ़ो हरी द्वारिका रणछोड़॥ टेर॥
द्वारिका में झालर बाजे, शंखन की घनघोर॥
रुकमणीजी के रंगमहल में, दीपक लाख करोड़॥
मखमल का हरि के गादी तकिया, साटन की है सोड़॥
रतन जड़ित हरि के बन्यो हिंडोलो, रेशम की है डोर॥

आप पोढ़्याँ प्रभु भगत पोढ़े, पोढ़े पुरिका सब लोग॥
दास पीपो शरण आयो, अरज करे कर जोर॥

(१५९)

पोढ़ो सुख सेज सीता राम॥ टेर॥
कनक मंदिर रतन जड़ियो, कोटि उदय भयो भान॥
शेष सुमिरन करत निसदिन, धरत नारद ध्यान॥
गरब भंजन जन मन रंजन, संतन पूरन काम॥
निकट सरजू बहत निरमल, अघ मोचन निज धाम॥
आनँद कंद अयोध्या नायक, जानकी जी भुज बाम॥
दास तुलसी लिये हि ठाड़े, मेवा दाख विदाम॥

(१६०)

पोढ़ो पोढ़ो जी अंतरयामी, पोढ़ो पोढ़ो जी साराँगपाणी।
अँखियां में नींद घुलानी, भलाजी नैनन में नींद घुलानी॥
प्रभु थाँरो धनुष बाण कर मेलो, मुखड़े पर ओढ़ो सेलो॥
प्रभु केशरिया जामो खोलो, थांरी पाग सिराने मेलो॥
प्रभु लक्ष्मणजी ने आग्या दीजो, महला में आवन कीजो॥
प्रभु थाँरे मुखां उबासी आई, थांने कहे कौशल्या माई॥
प्रभु थांरो तुलसिदास जस गावे, चरनन में शीश नवावे॥

शिव पार्वती-विवाह

(१६१)

शिव लीला थाँरी अजब निराली है॥ टेर॥
परथम परण्या जाय दच्छ घर, सती को पाणी ग्रहण कियो।
त्रेताजुग में राघवेन्द्र को, देख सती ने भरम हुयो॥
लेण परिच्छा काज सतीजी, सीता भेष बनाय लियो।
पोल खुली जद सती त्याग रो, सिव मनमें संकल्प कियो॥

दच्छ प्रजापति जग्य कियो बड़, सिवजी को नहिं भाग दियो॥
देख सती ने कोप कियो निज, देह जग्य में भसम कियो॥
सिव संकर सुण बीरभद्र ने, भेज सभी कूँ दण्ड दियो।
मार दच्छ कूँ बकरो कीन्हो, बम्म बम्म वो बोल रयो॥
राम नाम सिव जपे रात दिन रटन लगाली है॥ १ ॥
सती सिरोमणि पतिव्रता वा आय हिमाचल घर प्रगटी।
बड़ी हुई तप करन गई सिव बर पावण की लगी रटी॥
सूखा पत्ता खाकर छोड्या, एक लच्छ पर रही डटी।
सप्त रिसी भरमाय थक्या पर, अपने प्रण सूँ नहीं हटी॥
संकर सनमुख रामचन्द्रजी, प्रगट होय कर कौल कियो।
पारबती को जनम सुणायो, ब्याह करण को हुकम दियो॥
तारक राछस हुयो एक वो, सब देवन्ह कूँ जीत लियो।
देव पड़्या ब्रह्मा के सरणें, रोय रोय दुख प्रगट कियो॥
सुरग लोक में भगदड़ माची हो गयो खाली है॥ २ ॥
कह ब्रह्माजी एक जुगत सूँ, बात आपणीं बण जावे।
सिव को अंस पुत्र गौरी को, वो मारे तो मर जावे॥
बाबो लेय समाधी बैठ्या, छेड़ छाड़ अब कूण करे।
कामदेव ने कह सुण भेज्यो, जाय समाधी भंग करे॥
कामदेव बिचलित करणें की, कसर न राखी हार गयो।
बैठ आम की डालीपर झट, पाँच बाण संधान कियो॥
लाग्यो बाण समाधी छूटी, सिव के मनमें कोप भयो।
खुली तीसरी आँख रुद्र की, कामदेव जल राख हुयो॥
रती करे संकर सू बिनती, निज बर पाली है॥ ३ ॥
सुभ अवसर लख महादेव सूँ, देव लग्या बिनती करणें।
गिरिजाने स्वीकार करो सिव, म्हे आया थाँरै सरणें॥

विपदा म्हारी दूर करो सिव, पड़्या आय थाँरे धरणें॥
महादेव परसंन भया, सबकी बिनती स्वीकार करी।
सप्त रिस्याँ ने भेज हिमाचल, घर पर ताजा खबर करी॥
अव तो सिवजी वनड़ा बणसी, गीत अपसरा गावे जी।
घेर लिया सव गण सिवजी को, सुभ सिणगार सजावे जी॥
भाल चन्द्रमा गंग सीसपर गल भुजंग पहरावे जी।
नागराज का कुण्डल कंकण, मस्तक मौर लगावे जी॥
नील कंठ में नर मुण्डन की माला डाली है॥४ ॥
वैल चढ्या वनड़ा अति सोहे, वाघंबर छबि छाय रही।
माथे ऊपर मोर बना के, तन पर भसम रमाय रही॥
रँग वनड़ा ने निरख अपसरा, हँस हँस दाँत दिखाय रही।
ऐसी अदभुत सोभा हर की, किण बिध मुखसूं जाय कही॥
लेय त्रिसूल हाथमें डमरू, बाज रयो है डरण डरण।
नंदीस्वर के गले में घंटी, बोल रही है टरण टरण॥
उड़ भँवरा मस्तक पर बैठे, करे कानमें भरण भरण।
इस्या तो वनड़ा कदे न देख्या, भोत गया भाइ परण परण॥
अदभुत वणी वरात हिमाचल के घर चाली है॥५ ॥
नारायणजी करे मसखरी, जान्यानें समझाय रया।
अलग अलग टोली सूं चालों, भेला हो क्यूं धाय रया॥
सुण सब जानी टोली अपणी, करली है न्यारी न्यारी।
अब तो सिवजी रया अकेला, हँस रया भोला भंडारी॥
भृंगी भेज वुलाया सिव गण, दौड़्या आया हरड़ हरड़।
ताजा खून लपेट्यो तन के, खाय रया कुछ करड़ करड़॥
कोइ ताल बजावे मूँड फुलावे, खाख पिदावे परड़ परड़।
कोइ दुवला मोटा अंग हीण, कोइ कंठ बुलावे घरड़ घरड़॥
रस्ते का टाबर डर भाग्या, बार घाली है॥६ ॥

सज सिणगार देवता सबसूँ, आगे आगे धावे जी।
बीच बिचाले नारायण की, सोभा कही न जावे जी॥
सिव समाज लारें सबही के, कोतक भोत दिखावे जी।,
नाचे गावे भूत प्रेत नर मुन्डी ताल बजावे जी॥
इण बिध खुसी मनाय नगर के निकट बराती पहुँच गया।
तब हिमवान बरात सामने, अगवाण्यां नें भेज दिया॥
टाबर टोली भेला होकर, अगवाण्यां के लार हुया।
नारायण का दरसण करके, टाबरिया परसन्न भया॥
सिव समाज ने देख छोरिया, भागण लाग्या सड़क सड़क।
माता की गोदी में बड़ग्या, करे कालजो धड़क धड़क॥
पूछे बात बतावे नाही, आँसू ढ़लके टड़क टड़क।
सिणक सिणक कपड़ा भर दीन्हा, नाक करे है ठड़क ठड़क॥
देबी पितर देवता घर घर मात मनाली है॥ ७ ॥
होंस भयो टाबरिया बोल्या, गाँव छोड़ कर भगज्यावो।
जम राजा का दूत आगया, ढ़क ढ़क कोठा बड़ज्यावो॥
बड़ा भाग है थाँरा जगमें, आज जींवता रहज्यावो।
मात पिता समझावे बेटा, इतरा तो मत घबरावो॥
ले थाली मैना दुलहा ने, निरखण खातर त्यार हुई।
संग सहेल्याँ गीत गावती, जाय बारणें खड़ी हुई॥
आगे देव बीचमें श्रीपति, सखियाँ देख प्रसन्न भई।
निरख भयंकर रूप बना को, डरती छुपती भाग रही॥
उलझ पड़ी मैना रस्ते में, गिर गइ थाली है॥ ८ ॥
दुखी होय कर मैना बोली, अरे बिधाता खूब करी।
म्हारी बेटी रूपवती नें, पागल बर के लार करी॥

गोदी ले गिरजा ने ऊपर चढ़ समँदर में गिरजाऊँ।
घर उजड़े जग हाँसी होवे, जीवत गौरी नहिं ब्याहूँ॥
दाँत पीस नारद पर खीजे, गिरिजा कहे सुणो माई।
लेख बिधी का मिटे न जगमें, मत कलंक माथे लेई॥
बात करत ही नारद बाबा, सप्त रिषी घर पहुँच गया।
सिव पारबती महिमा गाई, संकट संसय दूर किया॥
दीप माल घर घर संजोवे, भई दिवाली है॥ ९ ॥
मैना और हिमाचल मन मन, गौरी को परणाम किया।
जान्या ने अब तरह तरह का, चोखा जीमणवार दिया॥
गाल्याँ गाय सुणावे सुंदरि, सुण कर देव प्रसन्न भया।
लगन पत्रिका बाँच हिमाचल, सबही देव बुलाय लिया॥
बिप्रन्ह सीस नवाय राम को, सुमिरण कर सिव बैठ गया।
त्रिभुवन सुन्दर रूप धर्‌यो है, देख लोग सब चकित भया॥
सखियाँ सब मिल पारबती ने, लेकर मंडप में आई।
जोड़ी जुगल देख हरष्या सब, पुष्प रया सुर बरषाई॥
सिवजी का गण सिव गुण गावे, बजावे ताली है॥ १० ॥
ले कुस कन्याँ हाथ हिमाचल, सिवजी के अरपण करदी।
बहुत भाँति को दियो दायजो, हाथ जोड़ आँख्याँ भरदी॥
बिनती करे हिमाचल मैना, अरज सुणो सिव अबिनासी।
म्हारी लाडलड़ी ने राखो, कर निज चरणन की दासी॥
म्हारी कन्याँ भोली डाली, थे सिव भोला भंडारी।
सब अपराध माफ करदीज्यो, किरपा करज्यो त्रिपुरारी॥
पकड़्या चरण कमल सिवजी का, आसूतोस प्रसन्न भया।

हाथ जोड़ कर बिदा माँग, कैलास धाम निज पहुँच गया॥
सिव को चरित अथाह समन्दर, बेद पार नहिं पावे जी।
पढ़े सुणे अरु गावे जो नर, रघुनंदन मन भावे जी॥
सेष सारदा सिव की महिमा, कहणे में सकुचावे जी।
'सियालाल' कलजुग को कीड़ों, किण बिध गाय बतावे जी॥
सिव गौरी की रूप माधुरी, हृदय बिठाली है॥ ११ ॥

शिव पार्वती-विनोद

(१६२)

हँस कर पारबती सिवजी ने बचन सुनावती जी।
स्वामी मैं नहीं होती थाँने कुण ब्याहती जी॥ टेर ॥
थाँरा लम्बा लम्बा केस, थाँरे गल बिच काला सेष,
थाँरो अतिहि भयानक भेष,
थाँने देख्याँ हीं अबला नार डरावती जी॥ १ ॥
थाँरो बूढ़ो बाहन बैल, थाँरे भूत पलित रहे गैल,
थाँरो डमरू बजे सुरैल, थाँरे संग माहीं सुंदरी सरमावती जी॥ २ ॥
थे तो सीख्यो न माखन खाबो, नित प्रति आक धतूरा चाबो,
थाँरे तन पर नहिं है गाबो, थाँरे कौड़ी नाहीं पासमें लखावती जी॥ ३ ॥
सुणकर बोल्या है त्रिपुरारी, बन में तपस्या कीन्ही भारी,
जद म्हे ब्याही दया बिचारी, अब थे मोटी मोटी बातां क्यूं
बणावती जी॥ ४ ॥
सुन कर पड़ी गवरजा चरणाँ, स्वामी हँसी में रोष न करणाँ,
दासी लिया आपका सरणाँ, दरजी नाथुराम जस बरणाँ
थाँरी सुरता माहीं सुरता मैं मिलावती जी॥ ५ ॥

मातु सियाकी गोदीमें हम

(१६३)

जय माता मेरी जनक नन्दिनी,
जय पितु रघुवर अवध किशोर।
चाचा लक्ष्मण भरत शत्रुघन,
लवकुश हनुमत भ्राता मोर॥ १॥
दादा नृप दशरथ से मेरे,
सब भूपन के हैं सिरमौर।
कैकइ और सुमित्रा चतुरनि,
कौशल्या-सी दादी मोर॥ २॥
नृप विदेह से नाना मेरे,
सुमुखि सुनयना नानी मोर।
लछमीनिधि से मामा मेरे,
सरल सिद्धि-सी मामी मोर॥ ३॥
मुनि वशिष्ठ से कुल गुरु मेरे,
जिन्ह समान जगमें नहिं और।
अवधपुरी रजधानी मेरी,
सरजू उमड़ रही चहुँ ओर॥ ४॥
मातु सिया की गोदीमें हम
हरदम रहते सन्ध्या भोर।
शिव ब्रह्मा सनकादिक जाकी,
चाहत कृपा-दृष्टि की कोर॥ ५॥

॥ श्रीहरि:शरणम् ॥

श्रीकृष्णलीला-भजनावली

चुने हुये प्राचीन एवं अर्वाचीन पदोंसहित
हिन्दी, राजस्थानी एवं बृज-भाषामें

मंगलाचरण

(१)

गाइये गनपति जग वंदन, शंकर सुअन भवानी के नंदन॥
सिद्धि सदन गज बदन विनायक, कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक॥
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता, विद्या वारिधि बुद्धि विधाता॥
माँगत तुलसीदास कर जोरे, बसहु राम सिय मानस मोरे॥

दोहा

गौरी पुत्र गनेश को सुमिरौं बारंबार।
विघ्न मिटे संकट कटे, मंगल होत अपार॥
लंबोदर भुज चार है, नेत्र तीन रँग लाल।
नाना बरन सुवेष है, मुख प्रशन्न शशि भाल॥

(२)

रुनक झुनक पग नेवर बाजे, गजानंद नाचे॥ टेर॥
पिता तुम्हारौ है शिव शंकर, नंदीश्वर राजे।
मात तुम्हारी है श्री गिरिजा, सिंघ चढ़ी गाजे।
सुण्ड सुण्डाला दुन्द दुन्दाला, एक दंत राजे।
गल पुष्पन को हार विराजे कोटि काम लाजे।
बिघन निवारन सब सुख कारन राजन पति राजे।
'तुलसिदास' गनपति को सुमिरे, दुख दारिद भाजे।

(३)

विघ्न निवारन सब सुख कारन भक्त उद्धारन ग्यान धनम्।
दैत्य विदारन परशा धारन सिद्धि कारन दैव वरम्॥
गिरिजा माता षडमुख भ्राता शंकर ताता कीर्ति करम्।
भूसुर रक्षक मोदक भक्षक ग्यानी लक्षक बुद्धि वरम्॥
शुण्डा दण्डम् तेज प्रचण्डम् इन्दु खण्डम् भाल धरम्।
गज मुख मण्डित ओज अखण्डित पूरन पण्डित ग्यान परम्॥
गिरिजा नंदन भवदुख भंजन काटत बंधन पाश धरम्।
द्वन्द्व निवारन मंगल कारन करि वर धारन शीश वरम्॥
अति शुभ लक्षण वीर विचक्षण जन प्रन रक्षण सिद्धि करम्।
जय गन नायक शुभ वर दायक दास सहायक विघ्न हरम्॥

(४)

प्रथम तो ध्यावो गावो विनायक,
रिद्धि सिद्धि सँग आवो, थे मोदक भोग लगावो,
गणपति गण नायक॥ टेर ॥
आज तो सूरज म्हारे ऊग्यो है सवायो,
प्रकट दिवस म्हारे कान्हजी रो आयो,
दुख हरता थे बड़ दाता, थाँने सुमिरे जसोदा माता॥ गण० १॥
एक दन्त अति सोहे गजानन, चार भुजा थाँरे मूसक वाहन,
प्रथम देव कहलावो, म्हारे आँगणिये में रमता आवो॥ गण० २॥
प्रेम कृपाभई मूरति थाँरी, विनती थे प्रभु सुणज्यो म्हारी,
रणत भँवर सूं पधारो, थे मङ्गल काज सुधारो॥ गण० ३॥
मधुर-मधुर शहनैयाँ बाजे, ढ़ोल मृदंग नगारा बाजे,
गावे गीत सुहागण, बाबानन्द जसोदा रे आँगण॥ गण० ४॥

भगवान् श्रीकृष्णका आवाहन

(५) तर्ज—कबहु मिलोगे

आवो मनमोहना, आवो नन्दनन्दना।
गोपीजन प्राण धन राधा उर चन्दना॥ टेर॥
कैसे तुम गणिका के अवगुण निवारे नाथ।
कैसे तुम भीलनी के जूठे बैर खावना॥ १॥
कैसे तुम द्वारिका में द्रोपदी की टेर सुनी।
कैसे तुम गज काज नंगे पाँव धावना॥ २॥
कैसे तुम सुदामा के छिनमें दरिद्र हरे।
कैसे तुम उग्रसेन बन्दीसे छूड़ावना॥ ३॥
कैसे तुम भारत में भीषम को प्रण राख्यो।
कैसे वसुदेव जी के बन्धन छुड़ावना॥ ४॥
करुणा निधान श्याम मेरी बेर मुंदे कान।
असरण सरण श्याम सूर मन भावना॥ ५॥

(६) तर्ज—पनजी

आव आव भगतों का प्यारा तोहि भगत बुलावे रे,
गोविन्द बेगो आव।
आव आव भगतों का भीड़ी तन्नें आयाँ सरसी रे,
गोविन्द बेगो आव॥ टेर ॥
घोर घटा मेरे सिर पर छाई, सूझत नाहिं किनारा रे।
डगमग डोले नाव किनारे, पार लगादे रे॥ गो० ॥ १॥
जाये कहाँ अब तुमहीं बताओ, तुम बिन कौन हमारा रे।
दुखियों का दुख दूर करन हित, तुमहीं सहारा रे॥ गो० ॥ २॥
एक बार भारत मे फिरसे, आजा कृष्ण मुरारी रे।
जल्दी लो अवतार जगतमें, होय उजियारा रे॥ गो० ॥ ३॥

जमुनाजी को जल है नीको, बृज को वास सुहावे मेरे जीको।
नैक गैया आन चराय जाइयो॥ ४ ॥

(१०) तर्ज—अवध में लडवा बटे

मेरो जमुना किनारे गाँव रे, साँवरे आजाइयो॥ टेर॥
जमुना-किनारे मेरी ऊँची हवेली, मैं बृजकी गोपिका नवेली,
राधे किशोरी मेरो नाँव रे॥ १ ॥
मल-मल के असनान कराऊं, घिस-घिस चन्दन खोर लगाऊं,
पूजा करूंगी सुबह शाम रे॥ २ ॥
खस-खस का मैं बँगला बनाऊं, चुन-चुन कलियाँ सेज बिछाऊँ,
धीरे-धीरे दाबूं तेरे पाँव रे॥ ३ ॥
देखत रहुँगी बाट तुम्हारी, जलदी आइयो कृष्ण मुरारी,
झाँकी करेगी बृज-बाम रे हँसि बतराय जाइयो॥ ४ ॥

(११) तर्ज—डगरिया में जावता

हमारा दुख दूर करना बंशी के बजैया॥ टेर॥
ग्वालन के सँग धेनु चरावे, माखन के खवैया।
वृन्दावन की कुञ्जगलिन में, रास के रचैया॥ १ ॥
नख पर गिरिवर धारन कीन्हो, गोवर्धन उठवैया।
जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पै, धाये कृष्ण कन्हैया॥ २ ॥
जमुनाजी में गेंद गिरी जब, ग्वालन टेर सुनैया।
कालीदह में कूद पड़े प्रभु, नाग के नथैया॥ ३ ॥
द्रुपद सुता की सभा बीच में, तुम हो लाज रखैया।
दु:शासन को मान मारे, चीर के बढैया॥ ४ ॥
वंशीवट पै रास रचायो, नाचे कृष्ण कन्हैया।
राधा के सँग सब बृजबाला, हो रही ताता थैया॥ ५ ॥

(१२)

निरमोही मोहन अब क्यूं जेज लगाय,
थाँने बुला बुला हारी॥ टेर॥
जब से तुम बिछुड़े मनमोहन, कबहुँ न पायो चैन।
पल पल बीते बरष बरोबर बैरण होगई रैण।
अब जीना है भारी॥ १ ॥
शब्द सुनत म्हारो हिवड़ो काँपे, मीठे-मीठे बैन।
बिरह व्यथा कासों कहुँ सजनी, बहगई करवत ऐन।
थाँरी सूखे फुलवारी॥ २ ॥
थाँ देख्या बिन कल ना पड़त है सिथिल भये दोऊ नैण
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर दुख मेटण सुख दैण
प्रभु सुधि लो अब म्हारी॥ ३ ॥

(१३) तर्ज—धमाल

कोई कहियो रे साँवरियो घर आवण की, कोई कहियो रे।
आवण की, मन भावण की, कोई कहियो रे॥ टेर॥
आप न आवे लिख पतियाँ न भेजे, बाँण पड़ी ललचावण की॥ १ ॥
ए दोऊ नैण कह्यो नहिं माने, नदियाँ बहे जैसे सावण की॥ २ ॥
कहा करूं कछु वश नहिं मेरो, पाँख नहीं उड़ जावण की॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई हूँ तेरे पाँवन की॥ ४ ॥

(१४) तर्ज—साँवल सेठ सेठानी

भूल बिसर मत जाना कन्हैया, मेरी ओड़ निभाना जी॥ टेर॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल झलकत काना जी।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, मोहन बन्शी बजाना जी॥ १ ॥
हमरी तुमसे लगन लगी है, नित प्रति आना जाना जी।
घट घट बासी अन्तर जामी, प्रेम का पन्थ निभाना जी॥ २ ॥

जो मोहन मेरो नाम न जानो, मेरो नाम दिवाना जी।
हमरे आँगन तुलसी का बिरवा, जिसके हरे हरे पानाजी॥ ३ ॥
जो कान्हा मेरो गाँव ना जानो, मेरो गाँव बरसाना जी।
सूरज सामी पोल हमारी, चन्दन चौक निशाना जी॥ ४ ॥
या तो ठाकुर दरशण दीजो, नहिं तो लीजो प्राना जी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरणों में लिपटाना जी॥ ५ ॥

(१५) तर्ज—गजल

देख्या कोई नन्दके लाला, बता दो बंशरी वाला॥ टेर॥
मेरो मन ले गयो हेली, लगी तन में तालाबेली।
बिरह का बाण भर मार्‌या, कलेजा छेद कर डार्‌या।
देख्या बिना जीवड़ो तरसे, नैणन में नीर अति बरसे।
जठे वो कान्ह कारो री, मुझे ले जाय डारो री।
तज्या सब खान पानी री, नहीं मेरी पीर जानी री।
मोहन मोहन पुकारूँ री, घूमत चहुं दिशि निहारूं री।
दूँढ्या बन बाग सारा री, मिल्या नहिं प्राण प्यारा री।
हेली हरिजन मिलावे री, मीरांके प्राण बचावे री।

(१६) तर्ज—कसूम्बो

ओ तो अजब रँगीलो छैल रे, साँवरियो॥ टेर॥
कठे कठे जावे कान्हू बिना बुलायो, कठे मचवावे हेला हेल रे॥ १ ॥
कठे कठे जावे कान्हू पगाँ सूं उभाणू, कठे तो जुतावे गाड़ी बैल रे॥ २ ॥
कठे तो बरषावे कान्हू नान्ही नान्ही बूँदाँ, कठे तो करदेवे रेलापेल रे॥ ३ ॥
कठे तो छावे कान्हू छोटी सी झुँपड़ियाँ, कठे तो चिनावे ऊँचा महल रे॥ ४ ॥
कह नरसीलो सुन म्हारा साँवरा, चित्त थाँरे चरणाँमें झेल रे॥ ५॥

(१७)

आँखड़ली फरूखे म्हारे दिल में जचगी,
म्हारो साँवरियो चितारे म्हांने आवे हिचकी॥ टेर॥

प्यासो है पपैयो डारो बूँद घनकी
बेगा सुणलीज्यो साँवरिया म्हारी पीड़ा मनकी॥ १ ॥
थे तो सब जाणो साँवरा घट-घट की,
डारो थोड़ी सी झलक थाँरे पीले पट की॥ २ ॥
चन्दन केरी चौकी गादी मखमल की,
बेगा आवो कान्हा देरी मत करो पल की॥ ३ ॥
माखन मिसरी मेवा धरूं झारी जल की,
जीमो जीमो कान्हा देरी मत करो पल की॥ ४ ॥

(१८)

कबहूँ मिलोगे दीनानाथ हमारे।
कबहूँ मिलोगे राम, कबहूँ मिलोगे श्याम कबहूँ मिलोगे चितचोर हमारे॥ टेर॥
जैसे मिले प्रहलाद भगत को, खम्भ फाड़ हिरणाकुश मारे॥ १ ॥
जैसे मिले प्रभु बलिराजा को, चार मास द्वारे पर ठाढ़े॥ २ ॥
जैसे मिले प्रभु जनक सुता को, तोड़ा है धनुष भूप सब हारे॥ ३ ॥
जैसे मिले प्रभु भक्त विभीषण, लंका जारि निसाचार मारे॥ ४ ॥
जैसे मिले प्रभु द्रुपद सुता को, खैंचत चीर दु:शासन हारे॥ ५ ॥
जैसे मिले प्रभु नरसीभगत को, भात भरन हरि आप पधारे॥ ६ ॥
जैसे मिले प्रभु मीराँबाई को जहर को प्यालो अमृत कर डारे॥ ७ ॥
सूरदास को कबहूँ मिलोगे, टप टप टपकत नयन हमारे॥ ८ ॥

(१९)

आज मेरे अंगना में आवो नन्दलाल, आवो गोपाल,
दरशन की प्यासी गुजरिया श्याम॥ टेर॥
अंगना में आवो मेरे माखन कूं खावो,
मीठी मीठी बतियाँ सुनावो नन्दलाल॥ १ ॥

अंग पै झंगुलिया, शीश पै लटुरिया,
दूध की दंतुलिया दिखावो नन्दलाल॥ २ ॥
रैन नहिं सोवे उठि भोर ही विलोवें दधि,
गावें और ध्यावें तोही कूं नन्दलाल॥ ३ ॥
कोरी कोरी मटकी में धौरी धौरी गैयन को,
न्यारौ ही जमाय दही राख्यो नन्दलाल॥ ४ ॥
खावो बृजरानी को माखन नित्य-प्रति;
प्रेम तें गरीवनी को खावो नन्दलाल॥ ५ ॥

(२०)

आवो आवो हरी, तेरी सभा भरी, रंग छा रहा॥ टेर॥
तेरी सभा में रंग वरसाये जा, तेरी साँवरी सूरत दिखलाये जा।
वंशी की लटक, सिर मोर मुकुट, मन भा रहा॥ १ ॥
तेरी गीता का ज्ञान सुनाये जा, तेरे भक्तों का भरम मिटाये जा।
सत्संगी सज्जन, करे तेरा भजन, गुण गा रहा॥ २ ॥
मुरलीधर वेणु वजैया, यमुना तट धेनु चरैया।
नन्द वावा के लाल, काटो सवका ये जाल चित चा रहा॥ ३ ॥
यशोदाजी के कुँअर कन्हैया, तोसे अरजी है दाउजी के भैया।
आवो राधा पती, सुध भूलो मती, वक्त जा रहा॥ ४ ॥

(२१)

तेरे विना श्याम हमारा नहीं कोई रे।
हमारा नहीं कोई रे सहारा नहीं कोई रे॥ टेर॥
मैं मति मन्द तुम्हें विसराया, फिर भी तुमने कभी ना भुलाया,
तेरे जैसा प्यार दरशाया नहीं कोई रे,
दरशाया नहीं कोई रे, वरषाया नहीं कोई रे॥ १ ॥
वहुत जनम मैं पापों को ढ़ोया, निरमल कर तुम मोहि सँजोया,

तेरे जैसा लाड लडाया नहीं कोई रे,
लडाया नहीं कोई रे, अपनाया नहीं कोई रे॥ २ ॥
मेरा कहकर मैं जेहि माना, बिछुड़ रहा सब नायँ ठिकाना,
तेरे जैसा साथ निभाया नहीं कोई रे,
निभाया नहीं कोई रे, निभावे नहीं कोई रे॥ ३ ॥
कृपा करी तुम नर तन दीन्हा, फिरभी तुमको मैं नहीं चीन्हा,
तेरे जैसा मोहि चेताया नहीं कोई रे,
चेताया नहीं कोई रे, समझाया नहीं कोई रे॥ ४ ॥
बहुत निरादर मैंने कीन्हा, फिर भी तुमने सब सह लीन्हा,
तेरे जैसा मात पिता है नहीं कोई रे,
पिता है नहीं कोई रे, मालिक है नहीं कोई रे॥ ५ ॥
अपने संतन्ह संग बिठाया, गीता रामायन ग्रन्थ लखाया,
तूँ हीं मेरा एक है दूजा नहीं कोई रे,
दूजा नहीं कोई रे, अनत नहीं कोई रे॥ ६ ॥

(२२)

छुपा है कहाँ मेरा प्यारा कन्हैया।
दिखादे तूँ सूरत हमारा कन्हैया॥ १ ॥
बहुत नाम जगमें है तेरा कन्हैया,
गरीबों का तूँ है सहारा कन्हैया॥ २ ॥
तुम्हारे बिना अब नहीं चैन दिल को,
बुलाते हैं आजा हमारा कन्हैया॥ ३ ॥
बुरा हाल है देश भारत का मोहन
प्रगट फिरसे होजा दुबारा कन्हैया॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण-जन्म-महोत्सव

॥ आरती ॥

(२३)

आरति बाल कृष्ण की कीजै, अपनो जन्म सुफल करि लीजै ॥ टेर ॥
श्री यशुदा को परम दुलारो, बाबा की अँखियन को तारो।
गोपियन को प्राणों से प्यारो, इन पर प्राण न्योछावर कीजै ॥ १ ॥
बलदाऊ को छोटो भैया, कनुआ कह कर बोलत मैया।
परम मुदित मन लेत बलैयाँ, अपनो सर्वस्व इनको दीजै ॥ २ ॥
श्री राधा-वर सुघर कन्हैया, बृजजन को नवनीत खवैया।
देखत ही मन नयन चुरैया, यह छबि नयनन्ह में भरलीजै ॥ ३ ॥
तोतरि बोलन मधुर सुहावै, सखन मध्य खेलत सुख पावै, ।
सो ही सुकृति जो इनको ध्यावै, अब इनको अपनो करलीजै ॥ ४ ॥

(२४)

साँवलशाह गिरधारी, भला हो रामा,
साँवलशाह गिरधारी, भरौसो भारी, शरण तिहारी।
दीनानाथ बिना मोरी, प्रभु बिना मोरी, कौन खबर ले ॥ टेर ॥
मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, कुण्डल की छवि न्यारी ॥ भला० ॥ १ ॥
पचरंग पाग केशरिया जामो, हिवड़े रो हार हजारी ॥ भला० ॥ २ ॥
वृन्दावन में धेनु चरावे, मुरली बजावे गिरधारी ॥ भला० ॥ ३ ॥
मीराँ शरण साँवल गिरधर की, चरण कमल बलिहारी ॥ भला० ॥ ४ ॥

(२५)

जन्मे श्री कृष्ण मुरार भगत हित कारणे।
मथुरा में लियो अवतार गोकुल झूले पालणे ॥

तिथि अष्टमी बुधवार भादव बदी की करी।
रोहिणी नखत आधी रात जनम लीयो शुभ की घड़ी॥
धन्य देवकी वसुदेव जहँ हरि अवतार धरे।
धन्य यशोदा बाबा नन्द महर घर पगल्या करे॥
धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जयकार करे।
दुन्दुभि बजत आकाश सुमन सुर बरषा करे॥
बृजवासी गौरस भर भरकर ल्यावही।
दधिकादो बाबा नँदके सुकीच मचावही॥
बाजत ताल मृदंग बीन डफ बाँसुरी।
निरतत गोपी ग्वाल चरण चित चावरी॥
यशुमती चीर पहराय नौरंग भई ग्वालिनी।
सुन्दर वदन निहार चकित भई भामिनी॥
श्री बलभद्रजु के बीर असुर दल खंडना।
भक्त वत्सल महाराज यादव कुल मंडना॥
शंकर धरत है ध्यान सुगोद खिलावही।
सो मुख चूमति माय सु पलना झुलावही॥
श्री नन्द यशुमति नेह चरण चित ल्यावही।
हरिगुण मंगल गान गोविन्दगुण गावहीं॥

(२६)

हौं एक नई बात सुनि आई॥ टेर॥
महरि यशोदा ढोटा जायो, घर घर बँटत बधाई॥ १ ॥
द्वारे भीर गोप गोपिनकी, महिमा बरनि न जाई॥ २ ॥
अति आनन्द होत गोकुल में, रतन भूमि निधि छाई॥ ३ ॥

नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक, गोरस कीच मचाई॥ ४ ॥
'सूरदास' स्वामी सुखसागर, सुन्दर श्याम कन्हाई॥ ५ ॥

(२७)

अनोखो जायो ललना मैं वेदनमें सुनि आई।
मैं वेदनमें सुनि आई, पुराणन में सुनि आई॥ अ०॥ टेर॥
मथुरा में लाला जनम लियो, गोकुल में झुले पलना॥ १ ॥
ले वसुदेव चले गोकुल को, मारग में गहरी जमुना॥ २ ॥
छूहत चरण उतरि गई जमुना, सब जल हो गयो घूटना॥ ३ ॥
काहे को याको बन्यो पालनू, काहे के लागे फुन्दना॥ ४ ॥
रतन जड़ित याको बन्यो पालनू, रेशम के लागे फुन्दना॥ ५ ॥
नन्दबाबा गौदान करत है, बधाई बाजे अँगना॥ ६ ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरँजी रहो तेरे ललना॥ ७ ॥

(२८)

आठ्यूँ तिथि भादवो महिनू, रात अँधेरीमें आयो रे कनवो छोटो सो।
भगताँ रे कारण आयो रे कनवो छोटो सो॥ टेर॥
वारी जाऊँ म्हारो कनवो छोटो सो॥ १॥
मामा कंस की जेल में प्रगट्यो, च्यार भुजा दरशायो रे ॥ क० २ ॥
करि विनती बसुदेव देवकी, बालक रूप बणायो रे ॥ क० ३ ॥
पहरादार नीन्द में पड़ग्या, माया रो जाल बिछायो रे ॥ क० ४ ॥
कटगई बेड़ी खुल गया ताला, ले वसुदेव सिधायो रे ॥ क० ५ ॥
जब बसुदेव चल्या गोकुल को, जमुना रो जल चढ़ि आयो रे ॥ क० ६ ॥
बाल कृष्ण ने चरण छुवायो, घुटना ताई जल आयो रे ॥ क० ७ ॥
मात देवकी के उर प्रगट्यो, जसोदाजी पालणे झुलायो रे ॥ क० ८ ॥

धन धन हे म्हारी मात यशोदा, तूं ठाकुरजी ने गोद खिलायो हे ॥ क० ९ ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, पल पल लगत सवायो रे ॥ क० १० ॥
तीन लोक रो नाथ कहावे, बबुवो सो बण आयो रे ॥ क० ११ ॥
बाबा नन्द लियो गोदी में, काँधे ऊपर बिठायो रे ॥ क० १२ ॥
गोकुल माहीं बँटत बधाई, नन्द-घर आनन्द छायो रे ॥ क० १३ ॥
गायां दान करे नन्द बाबो, अन्न धन रतन लूँटायो रे ॥ क० १४ ॥
बृज-गोप्याँ मिल मंगल गावे, सुवरण थाल बजायो रे ॥ क० १५ ॥

(२९)

नन्द घर आनन्द भयो, जै कन्हैया लालकी ॥
हाथी दीन्हे घोड़ा दीन्हे, और दीन्ही पालकी ॥
रतन दीन्हे हार दीन्हे, गैया ब्याई हालकी ॥
कंठा दीन्हे कठूला दीन्हे, दीन्ही मुक्ता मालकी ॥
कड़े दीन्हे छड़े दीन्हे, बीन्दी दीन्ही भालकी ॥
सुरमा दीये दर्पण दीये, कंघी दीन्ही बालकी ॥
जै यशोदालाल की, जै दाऊ दयाल की, जै बोलो गोपाल की ॥

(३०)

बलराम लला, घनश्याम लला ॥ टेर ॥
आओ आज बधाई माँगें जसोदा के घर।
ग्वारिया छोटो सो एक बैठो है भीतर।
दाउजी तो गोरे गोरे कारो नटवर।
कान्हा तो झूले पै झूले झूला बोले चर्र।
झूले ऊपर तोता मैना चीड़ी कबूतर।
कान्हा तो चिड़िया को पकड़े चिड़िया उड़े फुर्र।
दाऊजी तो फिरकी फेरे फिरकी बोले सर्र।

पिकु पिकु मौर बोले मेंढक बोले टर्र।
जसोदा बधाई बाँटे झोली दी है भर।
राई नौन उतारो याके लागे ना नजर।

(३१)

हरि आया छे गोकुल तारबाने,
तारबाने रे उबारबाने, प्रभु आया छे गोकुल तारबाने॥ टेर॥
मासी पूतनारा प्राण हरणनें, मामा कंस को मारबाने॥ १ ॥
मात पिता की बन्ध छुटावन, देवन को दुख टारबाने॥ २ ॥
बायें नख पर गिरिवर धरसी, इन्द्र को घमन्ड उतारबाने॥ ३ ॥
नाग नाथ हरि बाहर करसी, जमुनारो नीर सुधारबाने॥ ४ ॥
निज भक्तन हित काज पधार्‌या, धरतीरो भार उतारबाने॥ ५ ॥

(३२)

जय बोलो जसोदा नन्दन की।
नन्दन की जग बन्दन की॥ जय॥ टेर॥
भाल बिशाल माल मोतियन की,
खौर बिराजत चन्दन की॥ १ ॥
मोर मुकुट कटि काछनि राजै,
भक्त बछल भव भञ्जन की॥ २ ॥
घन्टा ताल पखावज बाजे,
भीर भई सब सन्तन की॥ ३ ॥
ले बसुदेव चले गोकुलको,
बेड़ी कट गई फन्दन की॥ ४ ॥
चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि,
चरण कमल रज बन्दन की॥ ५ ॥

(३३)

(तर्ज—बनमें देख्या)

आली जसुमति लाला जायो हे बीर, दरशण करबा म्हे जास्याँ।
म्हारे हरष घणेरो छायो हे बीर, दरशण करबा म्हे जास्याँ॥
हिल मिल मङ्गल गावो री गुजरियाँ,
आली म्हारे सूरज ऊग्यो है सवायो हे बीर॥ १॥
मानिक मोतियन चौक पुरावो,
आली वाँरो लाड कराँ मनचायो हे बीर॥ २॥
जग प्रतिपालक बनि आयो बालक,
आली वो तो सन्तन के मन भायो हे बीर॥ ३॥
अलख निरंजन भयो दुख भंजन,
आली वो तो नन्दजी को कुँवर कहायो हे बीर॥ ४॥
इन्दरपुरी में बाजत नगारा,
आली वाँरो तिरलोकी में जस छायो हे बीर॥ ५॥
शिव ब्रह्मा ज्याँरो पार न पावे,
आली ज्यांने वेद पुराणा में गायो हे बीर॥ ६॥

(३४)

नन्दजी को छैया माता यशोदा को लाल,
गोविन्द गोपाल प्यारो गोविन्द गोपाल॥ टेर॥
नन्दजी को छैया बलदाऊजी को भैया।
बाँसुरी बजावे बैठो कदम्ब की डाल॥ १॥
बाँसुरी बजैया ओ तो माखन खवैया।
धेनु चरावे वालो लिये संग ग्वाल॥ २॥

धेनु चरैया गिरिवर को उठैया।
भगतांरो भीड़ी मामा कंसको है काल॥ ३ ॥
गिरि को उठैया सबजग को रखैया।
छबि निरखत याकी करदे निहाल॥ ४ ॥

(३५)

पूत सपूत जन्यो जसुदा, इतनी सुनके वसुधा सब दौरी।
देवन को आनन्द भयो, अरु धावत गावत मंगल गौरी।
बाबा नन्द दियो इतनो, घनश्याम कुबेरहु की मति बौरी।
देखत बृज ही लुटाय दियो, न बची बछिया छछिया न पिछौरी।
कञ्चन थार सँवारि के, वामे दीपक बार।
करने आई आरती, हिल मिलके बृजनार॥
दई बधाई नन्द को, पड़े यशोदा पाँय।
तेरे प्यारे लालको, नेक हमें दिखलाय॥

(३६)

मथुरा सौं चल कर आई री, मैं डाढ़िन की जाई
नन्दलाल जायो नन्द रानी, आज भई मेरे मनमानी।
अब मन भर लेऊँ बधाई री॥ १ ॥
मोती महल मेरे बनवावो, उनके पीछे बाग लगावो।
तेरी बढैगी बेल सवाई री॥ २ ॥
गैया लूंगी धूमर धौरी, दूध पिवें मेरे छोरा छोरी।
खावेंगे रबड़ि मलाई री॥ ३ ॥
अन्न धन के भंडार भराओ, नख शिख तक गहनां बनवावो।
नन्दलाल नाम खुदवाई री॥ ४ ॥

(३७)

जसोदाजी ने जायो एक लाल, सुन री डाढ़िनियाँ
दिखलाऊँ हमारे संग चाल, सुन री डाढ़िनियाँ॥ टेर॥
जोड़ी सहित सज धज के चलो री, लायें बधाई ततकाल॥ १ ॥
पाँवों में घूँघरू बाँध चलो री, नाचें घुमरियाँ घाल॥ २ ॥
बाबा के बन रही छप्पन मिठाई, खायेंगे भर भर थाल॥ ३ ॥
नाच आज मन की निकालो डाढ़िनियाँ, मौका न देना टाल॥ ४ ॥
निरख नन्द के छोटे से ढ़ोटा, हो जायें अब ही निहाल॥ ५ ॥

(३८)

नयणाँ भीतर काजलियारी रेख कर राखूँ थाँनें
साँवरा जी म्हारा श्याम॥ टेर॥
तिरछा ओर रतनारा चंचल नैण, थाँरी चितवन है
चित-चोरणी जी म्हारा श्याम॥ १ ॥
नासा मोती अधर गुलाबी होट, थाँरी दाँत बतीसी ऊजली जी
म्हारा श्याम॥ २ ॥
गोल कपोल लचित घुँघरारा केश, चोटी नागणसी शीश पै
जी म्हारा श्याम॥ ३ ॥
मौर मुकुट ओर गल वैजन्ती माल, थाँरे कुण्डल झलके कान में
जी म्हारा श्याम॥ ४ ॥
भौंह घनुष सी सुन्दर भुजा विशाल, माथे पर तिलक सुहावणूँ,
जी म्हारा श्याम॥ ५ ॥
कटि पीताम्बर जरकस जामों अंग पावन में बाजे पैंजणी
जी म्हारा श्याम॥ ६ ॥

(३९)

बाजी रे लला की पेंजनियाँ,
छूम छूम छूम छूम छननन नननन॥ टेर॥
यशुमति ललन को चलन सिखावति,
अँगुरी पकड़ दोऊ जनियाँ॥ १ ॥
पीत झँगुलिया तन पहिरावे, टोपी लगावे लटकनियाँ॥ २ ॥
नन्द बाबा सों बाबा कहत है, तीन लोक के धनियाँ॥ ३ ॥
शिव ब्रह्मा याको पार न पावे, ताहि नचावे ग्वालिनियाँ॥ ४ ॥

(४०)

बंशी वालो तो रम रयो मेरे अँगना,
मेरे अँगना, नन्दजी के अँगना॥ टेर॥
मात यशोदा जी पलना झुलावे,
झोटा देवे री सखी दोऊ जनियाँ॥ १ ॥
मात यशोदाजी दहिड़ो बिलोवे,
माखन निकाले सखी दोऊ जनियाँ॥ २ ॥
मात यशोदा जी चलना सिखावे,
अँगुरी पकड़ सखि दोऊ जनियाँ॥ ३ ॥
बाहिर मैं देखूँ तो बारह बरष को,
भीतर मैं देखूँ तो झूले पलना॥ ४ ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि,
दर्शन की प्यासी है दोऊ अँखियाँ॥ ५ ॥

(४१)

धनि यशुदा बड़ भागिनि जायो,
सत चित आनन्द गोद खिलायो॥ टेर॥

धनि धनि बाबा नन्द हमारो,
निज सुत कह जेहि लाड़ लड़ायो॥
धनि धनि बृज वृन्दावन रज धनि,
जेहि रज महँ हरि खेलन आयो॥ १ ॥
धनि धनि ग्वाल बाल सब बृज के
जेहि सँग मोहन गाय चरायो॥
धनि धनि गोपी बृज मण्डल की,
दे दे माखन नाच नचायो॥ २ ॥
धनि धनि जमुना तट बंशीवट,
कर धर मुरली श्याम बजायो॥
धनि धनि मन मोहन की गैया,
गिरि पर चढ़ हरि टेर बुलायो॥ ३ ॥
धनि गोवरधन देव हमारो,
धर अँगुली हरि आप पुजायो॥
'श्यामसखा' धनि धनि शिव शंकर
ज्योतिषि बनकर मरम जनायो॥ ४ ॥

(४२)

नन्द भवन को भूषण माई,
जसुदा को लाल बीर हलधर को,
राधारमण परम सुखदाई॥ टेर॥
काल को काल ईश ईशन को,
ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई॥ १ ॥
शिव को धन सन्तन को सरवस
महिमा वेद पुराणन गाई॥ २ ॥

नन्ददास के जीवन गिरधर,
गोकुल मंडल को कुँअर कन्हाई॥ ३ ॥

(४३)

गिरधर लागे राज नीको, एजी ओतो कान्ह कँवर नन्दजी को॥ टेर॥
मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, बिच केशर को टीको।
गल बैजन्ती माल विराजे, बीरो हलधर जी को॥ १ ॥
कड़वो तेल कृष्ण नहिं खावे, कृष्ण खवैयो घी को।
माल बिराणाँ मीठा लागे, घरको लागे फीको॥ २ ॥
जमुनां के नीरां तीरां धेनु चरावे, माँगे दान दही को॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि बिन सब रस फीको॥ ३ ॥

(४४)

काहु जोगिया की लागी नजर,
मेरो बालो कन्हैयो रोवे री॥ टेर॥
मेरी गली नित आवे जोगिया, अलख अलख कर बोले री॥ १ ॥
घर घर हात फिरावे जसोदा, बार बार मुख जोवे री॥ २ ॥
राई लोन उतारत छिन छिन, सूर को प्रभु सुख सोवे री॥ ३ ॥

(४५)

देखो रे एक बाला जोगी, द्वारे मेरे आया री॥ टेर॥
बाघम्बर का ओढ़ दुशाला, शेषनाग लिपटाया री॥
माथे वाके तिलक चन्द्रमा, जोगी जटा बढ़ाया री॥ १ ॥
ले भिक्षा नन्दरानी निकसी, मोतियन थाल भराया री।
जा योगी अपनें आश्रम को, मेरा लाल डराया री॥ २ ॥
ना चहिये तेरा हीरा मोती, ना चहिये धन माया री।
तेरे लाल का दरश दिखादे, काशी से चल आया री॥ ३ ॥

गोकुल वाला गऊओं का प्यारा, तुम बिन कौन रखवारा रे।
बिगड़ी आन सुधारो बंकटदास तुम्हारा रे॥ गो०॥४॥

(७) तर्ज—प्रभाती

आवोजी नन्दजी का लाला, माखन मिसरी खाबाने॥ टेर॥
थे आज्यो कोई सँग मत ल्याज्यो, नहिं छै दही लुटाबाने।
एक जावणी दही जमायो, थाँरे भोग लगाबाने॥ १ ॥
ऊँची मेड़ी पलँग झरोखा, हूँ छूं सेज बिछाबाने।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रँगभर रास रचाबाने॥ २॥

(८) तर्ज—बाँसुरियाँ कहाँ भूल

कन्हैया प्यारा आवज्यो थे, छाँने छाँने छाँने॥ टेर॥
रस्तो छोड़ गलीसे आज्यो, कोई नहीं पिछानें।
काली कमल ओढ़ कर आज्यो, माखन मिसरी खानें॥ १ ॥
मैं समझाऊं तोय साँवरा, बात करो थे क्याँनें।
दाऊजी को खबर पड़ेगी, मैया देगी तांनें॥ २ ॥
प्रीत करो तो ऐसी कीज्यो, पड़े न किसके कानें।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दासी रखज्यो म्हानें॥ ३ ॥

(९) तर्ज—मैं तो गोवर्धन को जाऊँ

कान्हा बरसाने में आजाइयो, बुलाय रही राधा प्यारी॥ टेर॥
नवल रूप मोहन तेरो देखूं, झाँकी मोर मुकुट की देखूँ।
निरखत जनम सुफल करि लेखूँ,
नैक दर्शन मोहि कराय जाइयो॥ १ ॥
दूध दही मेरे बहुतेरो, माखन मिसरी धर्‌यो घनेरो।
नैक आकर भोग लगाय जाइयो॥ २ ॥
मिलिबे की है चाह घनेरी, ठाड़ी बाट तकूं मैं तेरी।
नैक जल्दी खबरि कराय जाइयो॥ ३ ॥

ले बालक निकसी नन्दरानी, जोगी दरशन पाया री।
सात बेर परिकम्मा कीन्हीं, सींगी नाद बजाया री॥ ४ ॥
'सूरदास' गौ लोक धाम में, धन्य यशोदा माया री।
तीन लोक के कर्ता हर्ता, तेरी गोद में आया री॥ ५ ॥

(४६)

देखो री यह कैसा बालक रानी यशुमति जाया री॥ टेर॥
सुन्दर वदन कमल दल लोचन, देखत चन्द्र लजाया री।
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी, प्रगट नन्द-घर आया री॥ १ ॥
मोर मुकुट पीताम्वर सोहे, केशर तिलक लगाया री।
कानन कुण्डल गल विच माला, कोटि भानु छबि छाया री॥ २ ॥
कालिय मर्दन कंस निकन्दन, गोपी नाथ कहाया री।
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, शेष सहस मुख गाया री॥ ३ ॥
सुर नर मुनि के ध्यान न आवे, अदभुत चरित दिखाया री।
'परमानन्द' कृष्ण मन मोहन, चरन कमल चित लाया री॥ ४ ॥

(४७)

चल रे योगी नन्द भवन में, यशुमति तोहि बुलावे।
लटकत लटकत शंकर आवे, मन में मोद बढ़ावे॥ टेर॥
नन्द भवन में आयो योगी, राई लून कर लीनो।
वार फेर लाला के ऊपर, हाथ शीश पर दीनो॥ १ ॥
व्यथा भई सब दूर बदन की, किलकि उठे नन्दलाला।
खुशी भई नन्दजू की रानी, दीन्हीं मोतियन माला॥ २ ॥
रहु रे योगी नन्द भवन में, बृज में वासो कीजे।
जब जब मेरो लाला रोवे, तब तब दर्शन दीजे॥ ३ ॥

तुम तो योगी परम मनोहर, तुम को वेद बखाने।
बूढ़ो बाबा नाम हमारो, सूर श्याम मोहि जाने॥ ४ ॥

(४८)

मैं माखन नहिं खायो मेरी मैया, मैं माखन नहिं खायो री॥ टेर॥
भोर भए गैयन के पीछे, मधुवन मोहि पठायो री।
चार पहर वंशीवट भटक्यो, साँझ पड़े घर आयो री॥ १ ॥
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको किस बिध पायो री।
ग्वाल बाल सब बैर परत है, बरबस मुख लिपटायो री॥ २ ॥
तूँ जननी जिय की अति भोरी, इन के कहे पतियायो री।
तेरे जिय कछु भेद परत है, जानि परायो जायो री॥ ३ ॥
यह ले री तेरी लकुटि कमरियाँ, तैं मोहि नाच नचायो री।
सूरदास तब हँसी जसोदा, ले निज कंठ लगायो री॥ ४ ॥

(४९)

मटकी छोड़ कन्हाई मेरी, तूँ क्यों रार मचाई रे॥ टेर॥
छींक होत मैं घरसौं निकसी, सनमुख मिल गयो आई रे।
ना कछु यामें माखन मिसरी, ना कछु धरी मिठाई रे॥ १ ॥
कोरी मथनियाँ दही जमायो, आजहि नई मँगाई रे।
जो सुनि पावै कंसराज तेरि निकस जाय ठकुराई रे॥ २ ॥
तूँ तो कंसराज की चेरी, झूठी करत बड़ाई रे।
चोटी पकड़ कंसको मारूँ, बृज की करूँ सहाई रे॥ ३ ॥
धनि वृन्दावन नन्द गाँव धनि, धन्य यशोदा माई रे।
सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे, भक्तन के सुखदाई रे॥ ४ ॥

(५०)

नाचे नन्दलाल नचावे हरि की मैया॥ टेर॥
मथुरा में हरि जनम लियो है, गोकुल में पग धरे री कन्हैया॥ १ ॥
रुनक झुनक पग नूपुर बाजे, ठुमुक ठुमुक पग धरे री कन्हैया॥ २ ॥
धोती ना बाँधे लाला जामो ना पहिरे, पीताम्बर को बड़ो री पहरैया॥ ३ ॥
टोपी ना ओढ़े लाला फेंटो ना बाँधे, मोर मुकुट को बड़ो री ओढ़ैया॥ ४ ॥
शाल ना ओढ़े दुशाला ना ओढ़े, काली सी कमरियाँ को बड़ो री ओढ़ैया॥ ५ ॥
दूध ना भावे याँने दही नहीं भावे, माखन मिसरी को बड़ो री खवैया॥ ६ ॥
खेल न खेले खिलौना न खेले, चन्द्र खिलौना को बड़ो री खेलैया॥ ७ ॥
सीटी न भावे याँने पीपी न भावे, हरिसी बाँसुरी को बड़ो री बजैया॥ ८ ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि हँस हँस कंठ लगावे हरि की मैया॥ ९ ॥

(५१)

तेरे लाला ने माटी खाई जसोदा सुन माई।
तेरे लाला ने ब्रज-रज खाई जसोदा सुन माई॥ टेर॥
अद्‌भुत खेल सखन सँग खेलो, छोटो सो माटी को ढेलो
तुरत श्याम ने मुखमें मेलो, याँने गटक गटक गटकाई॥ १ ॥
दूध दही को कबहुँ न नाटी, क्यों लाला तैनें खाई माटी,
यशुदा समझावे ले साँठी, याँने नेक दया नहिं आई॥ २ ॥
अब मारे मती मैया बचन भरवाय ले॥ टेर॥
बचन भरवाय ले सौगन्द कढ़वाय ले।
गंगा की खवाय ले चाहे जमुना की खवाय ले।
क्षीरसागर में मैया, ठाड़ो करवाय ले॥
गैयन की खवाय ले चाहे बछड़न की खवाय ले।
नन्दबाबा के आगे ठाड़ो करवाय ले॥
गोपिन की खवाय ले चाहे ग्वालन की खवाय ले।
दाऊ भैया के माथे हाथ धरवाय ले॥ ३ ॥

मात श्याम-मुख अँगुली मेली, निकस पड़ी माटी की ढेली।
भीड़ भई सखियन की भेली, याँने देखे लोग लुगाई॥ ज०॥ ३ ॥
मोहन को मुखड़ो फड़वायो, तीन लोक वामें दरशायो।
तब विश्वास जसोदहि आयो, यो तो पूरण ब्रह्म कन्हाई॥ ४ ॥
ऐसो रस नहिं है माखनमें, नहिं मिसरी मेवा दाखन में।
जो रस है ब्रज-रज चाखन में, याँने मुकती की मुकती कराई॥ ५ ॥
या रज को सुर नर मुनि तरसे, बड़भागी जो नित उठ परसे।
जाकी लगन लगी रहे हरिसे, यह तो घासीराम कथ गाई॥ ६ ॥

(५२)

कहनो मानले कन्हैया मत हठ पकरे।
हठ पकरे रे मत जिद्द पकरे॥ टेर॥
आव छगन तोहे स्नान कराऊँ।
ओ तो निकट न आवे बालो जल सों डरे॥ १ ॥
दौरि जसोदा झट पकरि लियो है।
याको कंचन चौकी पै लाय धरे॥ २ ॥
जमुना को जल नटखट पर डारौ।
बालो लेत हिचकियाँ स्वास भरे॥ ३ ॥
पटकत चरन देत किलकैयाँ
बालो उछर जसोदाजी की गोदीमें परे॥ ४ ॥
बदन पौंछि पट भूषण साजै।
मैया काजर सारै तिलक करे॥ ५ ॥
'श्यामसखा' धनि धनि री जसोदा।
मैया अलख ब्रह्म तेरे घर बिचरे॥ ६ ॥

(५३)

सुन्दर श्याम छबीला थाँरो, अब शृंगार सजाउँगी ॥ टेर ॥
पीली पछेड़ी खोल जरी की, पगड़ी लाल बँधाउँगी।
छोगा टाँग किलङ्गी टाँगू, मुकुट की छबी बनाऊँगी ॥ १ ॥
मनि मानिकका डोरा कण्ठी, चोकी फेर पुवाऊँगी।
कमर कनौरो बाँध कटी बिच, पाँव नुपुर पहनाऊँगी ॥ २ ॥
काजर सार अरगजा चरचूं, पुष्पन माल धराऊँगी।
ले दरपण थांने निरखाऊँ, राई लून उतारूँगी ॥ ३ ॥
सद माखन मिसरी फल मेवा, रुच रुच तोही जिमाऊँगी।
जल जमुना झारी भरलावूँ, मुख आचमन कराऊँगी ॥ ४ ॥
एला लोंग सुपारी धरकर, पानकी बिड़ी रचाऊँगी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल चित लाऊँगी ॥ ५ ॥

(५४)

मुख देखणनें आई लालजी को मुख देखणनें आई ॥ टेर ॥
रात रही असुरन की नगरी, वहाँ पे बहुत दुख पाई।
पर पुरुषन को मुख नहिं देख्यो, अड़सट तीरथ न्हाई ॥ १ ॥
जितना बालक ब्रजमें देख्या, सबसौं ज्योति सवाई।
जे थाँरे लालजी को बुरो ही चितौं तो, आँखिया की सौगन्द खाई ॥ २ ॥
चित्त शुद्ध जान यशोदा मैया, पलनौं दीन्हो बताई।
बिषका अंचल मुखमें दीन्हा, खेंच रहे जदुराई ॥ ३ ॥
निकसत प्राण पड़ी धरणीं पर, अद्भुत देह बढ़ाई।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरी कृपाते, माता की गति पाई ॥ ४ ॥

(५५)

कोइ नजर लगाय मत दीज्यो हे, म्हारो छोटो सो बनवारी।
कोइ कामण मत कर दीज्यो हे, म्हारो भोरो सो बनवारी ॥ टेर ॥

निरखत ही हरदम रीज्यो, आसीस लला ने दीज्यो।
नुगर्‌याँ सूँ डरती रीज्यो हे, म्हारो छोटो सो बनवारी॥ १ ॥
आँ ने चौकी ऊपर बिठाओ, जमुना जल सूँ नहलाओ।
झीनी झँगुली पहनाज्यो हे, म्हारो छोटो सो बनवारी॥ २ ॥
याँके भूषन अङ्ग सँवारो, नैनन बिच काजर सारो।
याके राई नौन उतारो हे म्हारो भोरो सो बनवारी॥ ३ ॥
माखन अरु मिसरी लावो, धर तुलसी भोग लगाओ।
पड़दो आडो कर दीज्यो हे म्हारो छोटो सो बनवारी॥ ४ ॥
आँका नयन कमल अलसावे कछु नींदड़ली भी आवे।
पालणिये में झोटा दीज्यो हे, म्हारो छोटो सो बनवारी॥ ५ ॥

(५६)

नैक नाचदे बिहारी मेरे अँगनामें आय।
थोड़ो नाचदे बिहारी मेरे अँगनामें आय।
हँसि मुरली बजाय देवूं माखन खवाय॥ टेर॥
छोटोसो गोपाल तारी देवे बृज बाल।
नाचो नाचो नन्दलाल दूंगी ब्याह कराय॥ १ ॥
तूं तो झूठ कहे मैया, कब लावेगी दुल्हैया॥
ना चराऊँ तेरी गैया कहूँ बाबासो मैं जाय॥ २ ॥
एक छोटीसीक गैया मँगवाऊँगी कन्हैया।
दूध पीवो दोऊ भैया, तेरी चोटी बढ़जाय॥ ३ ॥
मेरी गायबे बधाई, कब आवेगी लुगाई।
भट्ट करिदे सगाई दीजे दुलहा वनाय॥ ४ ॥
तोहि बनरा बनाऊं गात उबटि न्हवाऊं।
संग दाऊको पठाऊं ब्याह लावैगो कराय॥ ५ ॥
मत दाऊ को पठावे नित मोहिको खिजावे।
'श्याम' तोहि न पत्यावे, देगो हाऊते डराय॥ ६ ॥

(५७)

पौढ़त श्याम पौढ़ावे हरिकी मैया॥ टेर॥

पल पल निरखत बाल कृष्ण को, मात जसोमति लेत बलैया॥ १ ॥

अपने लाल को दूध पियाऊँ, भेजूं चराइबे को नवलख गैया॥ २ ॥

अपने लाल को माखन जेंवावूं, दाऊके संग भेजूं करन पढ़ैया॥ ३ ॥

अपने लाल को ब्याह रचाऊँ, बड़े घरन की छोटी सी दुल्हैया॥ ४ ॥

'श्याम सखा' भई मुदित जसोदा, मूँदे नयन नन्दजू के छैया॥ ५ ॥

(५८)

सोजावो नन्दजीरा लाल, गाऊं थाँने हालरियो॥ टेर ॥

याँ रे काहेको बनियो पालनू,

ज्यारे काहे की बाँण घलाय॥ गाऊं० ॥

चन्दन को बनियो पालनू, रेशम की बाँण घलाय॥ गाऊं० ॥

पींपल रे बाँधूं पालनू ज्यारे तले बिछाऊं म्हारो चीर॥ गाऊं० ॥

जशोदाजी पीढ़े बैठग्या, अब झुक झुक झोला देय॥ गाऊं० ॥

थाँरीं 'चन्द्रमुखी' विनती करे, हरि सुणज्यो चित्त लगाय॥ गाऊं० ॥

(५९)

जसोदा मैया, अब हमने यह जानी!

कान्ह कुंअर सो तैं सुत पायो, याते फिरत फुलानी॥ टेर॥

यद्यपि तुम हो अति बड़ भागिनि, यह जग सौं नहिं छानी।

हम भी बालसखा मोहन के, कम नहिं हैं अभिमानी॥ १ ॥

खेलत रूठत लड़त श्याम संग, करते नित मनमानी।

डरपत काल कराल हमहिं ते, श्याम निकट पहिचानी॥ २ ॥

ब्रह्मादिक सुर वन्दत जिन्ह को, करत सुफल निज बानी।

'श्यामसखा' वे मित्र हमारे तोसे काह छिपानी॥ ३ ॥

(६०)

सखि हे म्हारो मदन मोहन घन श्याम, कलेवो करतो ही मुलके।
हे सखी! श्याम सुन्दर नन्दलाल, कलेवो करतो ही मुलके॥ टेर ॥
हे सखी! दूध बतासा म्हारो श्याम, पीवे है बालो गट गट के॥ १ ॥
हे सखी! माखन मिसरी रो भोग, रोटी तो याँके गले अटके॥ २ ॥
हे सखी! मुखमाहीं दंतुली सी दोय, नासा पर मणि मोती चिलके॥ ३ ॥
हे सखी! मोर मुकुट गल माल, कुण्डल कानां माहीं भलके॥ ४ ॥
हे सखी! ठुमुक ठुमुक ज्याँरी चाल, मनड़ो तो लीन्हो वश करके॥ ५ ॥
हे सखी! हाथों मे छड़ी है गुलाब, छटा तो चहुँ दिसि छिटके॥ ६ ॥
हे सखी! बन्शी की मीठी मीठी तांन, सुनत म्हारो हीयो धड़के॥ ७ ॥
हे सखी! मुरली की मधुरी सी तांन, सुनत म्हारो हीयो धड़के॥ ८ ॥
हे सखी! सुन्दर श्याम शरीर पिताम्बर ज्याँके अंग झलके॥ ९ ॥
हे सखी! नटखट जसोदारो लाल, निरख्याँ ही म्हारो जियो अटके॥ १० ॥
हे सखी! मन्द मन्द मुसकाय, बतलावे म्हाँने हँस हँस के॥ ११ ॥

(६१)

अम्माँ मोरी भोर ही दहिड़ो बिलोऊं हे,
म्हारो श्याम सुन्दर माखन माँग सी॥ टेर॥
अम्माँ मोरी होले होले आँगण बुहरूं हे,
म्हारो मदन मोहन बालो जागसी॥ १ ॥
अम्माँ मोरी जमुना रो जल भर लाऊं हे,
म्हारो मदन मोहन बालो न्हायसी॥ २ ॥
अम्माँ मोरी पीत झंगुली पहनाऊं हे,
याँ रे मुकुट सजाऊं माथे मौर को॥ ३ ॥

अम्माँ मोरी पाँव पैंजणियाँ पहनाऊँ हे,
म्हारो ठुमक ठुमक कान्हु चालसी॥ ४ ॥
अम्माँ मोरी काजल तिलक लगाऊं हे,
याँ रे हाथाँ रे नजरिया बाँधूं नेहका॥ ५ ॥
अम्माँ मोरी दूध गरम कर राखूं हे,
म्हारो कान्ह बालूड़ो गट गट पीवसी॥ ६ ॥
अम्माँ मोरी पालणियूं रेशम को घलाऊं हे,
म्हारे छोटेसे कान्हानें झोठा देयस्यूं॥ ७ ॥
अम्माँ मोरी 'श्यामसखा' बलि जाऊं हे,
म्हारे हिवड़े माहीं हरदम यँने राखस्यूं॥ ८ ॥

(६२)

मैं तो गोवर्धन को जाऊं मेरी बीर,नाँय मानै मेरौ मनुवा।
नायं मानै मेरो मनुवा, एरी बीर नाँय माने मेरो मनुवा॥ टेर॥
नाँय चाहिये मोय पार-परोसन, इकली-दुकली धाऊं मेरी बीर॥ १ ॥
सात कोस की दऊं परकम्मां, शान्तनु कुंड में न्हाऊं मेरी बीर॥ २ ॥
चकलेसुर के दरसन करिके, मानसी गङ्गा नहाऊं मेरी बीर॥ ३ ॥
सात सेर की करी कढ़ैया, सन्तन न्योति जिमाऊं मेरी बीर॥ ४ ॥
गिरि गोवर्धन देव हमारौ, पल पल सीस नवाऊं मेरी बीर॥ ५ ॥
प्रेम सहित गिरिराज पुजाऊं, मन वांछित फल पाऊं मेरी बीर॥ ६ ॥

(६३)

नख पर धारि लियो गिरिराज, नाम गिरधारी पायो है॥ टेर॥
सुरपति पूजा मेटि कृष्ण गिरिराज पुजायो है।
सवा लाख मण सामग्री को, भोग लगायो है॥ १ ॥
पड़ी स्वर्ग में खबर क्रोध सुरपति को छायो है।

मूसलधार अपार बहुत पानी बरषायो है॥ २ ॥
पड़ी न ब्रजपर बूंद इन्द्र देखत घबरायो है।
ब्रजवासी सब कहे, धरण गिरिराज उठायो है॥ ३ ॥
धन धन श्री ब्रजचन्द इन्द्र को मान घटायो है।
घासीराम गोवर्धन वारो, हरियश गायो है॥ ४ ॥

(६४)

नन्द दुलारो, प्राण हमारो, गोविन्द है रखवारो रे॥ टेर॥
वन में आग लगी जब बालक, कनुवा नाम उचार्‍यो रे।
दावानल मुख पान कियो है, क्षणमें सब दुख टार्‍यो रे॥ १ ॥
उछल गेंद जमुना में गिरगई, सोच सखा भयो भारोरे।
कालीदह में कूद कन्हैयो, फन फन निरत करारो रे॥ २ ॥
अजगर बन कर बढ़्यो अघासुर, जोजन में मुख फार्‍यो रे।
वा मुख भीतर जाय सांवरे, मार असुर को डार्‍यो रे॥ ३॥
इन्द्र कोप करि जल बरषायो, डूबत ज्यों बृज सारो रे।
बायें नख पर गिरिवर धार्‍यो, सुरपति हाथ पसार्‍यो रे॥ ४ ॥
ग्वाल बाल संग धेनु चरावे, कारी कमरी वारो रे।
'श्यामसखा' हम मित्र श्याम के कौन बिगारन हारो रे॥ ५ ॥

(६५)

कालीदह पर खेलन आयो री मेरो छोटो सो कन्हैयो॥ टेर॥
काहे की पट गेंद बनाई, काहे को डंडा लायो री॥ १ ॥
फूलन की पट गेंद बनाई, चन्दन डंडा लायो री॥ २ ॥
उछलत गेंद गिरी जमुनामें, गेंद हि के सँग धायो री॥ ३ ॥
नाग नाथ कर बाहिर आयो, फन फन निरत करायो री॥ ४ ॥
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखे, चरन कमल चित लायो री॥ ५॥

(६६)

साँझ भई घर आयो ना कन्हैया।
घर रहि बछिया बन रही गैया,
यमुना के तीरे ठाढ़ी यशुमती मैया॥
यशुमति पूछे ग्वाल बाल सौं,
कहाँ गयो मेरो बंशी को बजैया॥
भई बिहाल ढ़रै अँसुवन दृग
बार बार देवन्ह मनाय रही मैया॥
सूर के किशोर आये, सँग बहु ग्वाल लाये
गले सौं लगाके मैया लेत बलैया॥

(६७)

बाँसुरिया कहाँ भूल गये प्यारे कुंअर कन्हैया॥ टेर॥
भोर भयो जब लाला जागे, दुहवे सारी गैयाँ।
माखन मिसरी करे कलेवा, बैठे दोनों भैया॥ १ ॥
आगे आगे श्याम चलत है, पीछें दाऊ भैया।
उनके पीछें ग्वाल बाल हैं जिनके पीछें गैयाँ॥ २ ॥
ग्वाल बाल सब धेनु चरावे, आप कदम की छैयाँ।
तेरी बन्शी ऐसी बाजे, दौड़ी आवे गैयाँ॥ ३ ॥
ग्वाल बाल के सँगमें खेले, नाचे कुंअर कन्हैया।
तबला बाज सरंगी बाजे, अरु बाजे शहनैयाँ॥ ४ ॥
साँझ भई जब घरको आये, सँगमें सारी गैयाँ।
'चन्द्रसखी' भजु बाल कृष्ण छबि, जसुमति लेत बलैयाँ॥ ५ ॥

गूजरी

(६८)

गूजरी देन लगी ताना रे, गूजरी देन लगी ताना!
तुम सुनो जसोदा मात॥ गूजरी॥ टेर॥
अरी! जसोदा मात, जोड़ कहुँ हाथ, अरज सुन मेरी।
हम कब लग विपदा सहैं बिरज की चेरी॥
यह देख मेरा तूँ हाल, तेरो नन्दलाल चुनरियाँ फारी।
मेरी मटकी लीन्ही, खोस तेरो बनवारी॥
मारगमें बैठ्यो पावे, सब ग्वाल बाल बहकावे।
नित नई-नई धूम मचावे, वो हमको नहीं सुहावे॥
जसोदा के आगे गुजरी रोवन लागी झार झार।
फारी है चुनरियाँ मेरी करदीन्ही तार तार॥
झूमका जन्जीरा मोती तोड़ गेर्‌यो नोसर हार।
शीश की मटकियाँ वो करदी तगार डार॥
आज पीछे मैया तेरे घर नहिं आऊँगी।
पकड़के चोटी वाकी कंस पै ले जाऊँगी॥
जाय के हवाल सारा राजा को सुनाऊंगी।
रस्सी से बंधाके वाके मार भी लगवाऊंगी॥
एरी मात याकूं घरमें समझाना॥ तुम० १॥
हुआ शाम का वक्त, रचैया जगत् धेनु सब घेरी।
सब लीन्हे ग्वाल बुलाय बाँसुरी टेरी॥
यूं कहन लगे नन्दलाल, सुनो सब ग्वाल बात एक मेरी।
कोई छल कर रचो उपाय करो मत देरी॥
एक ग्वालिन जाय पुकारी, अब पिटने की तैयारी।
मैया मारेगी मारी, सँग पूजा होय तुम्हारी।

बोले नन्दलाल हाल ऐसा मैं बनाऊंगो।

मेरे कहे चलोगे तो सबको बचाऊंगो।

कंधे पै बिठाके मोकूं लेके चलो सब भाई।

माता आगे ऐसे कहियो गूजरी ने मार्‌यो माई॥

धरणि पै लौट गये जैसे कोई पीवे भङ्ग।

पिताम्बर को फाड़ लीन्हो कर लीन्हो बदरङ्ग॥

त्रिलोकी के नाथ ने विचित्र रूप धार्‌यो है।

कंधे पै बैठाके नन्द भवन में उतार्‌यो है॥

दौड़ी जसोदाजी आई, लाला ने कुण मार्‌यो है।

भोरी सी सूरत तेरी, पिताम्बर कुण फार्‌यो है॥

आँसू ढ़लकावे कान्हू, कछू ना बतावे है॥

कहा तो बताऊं मेरो हीयों भर आवे है॥

गूजरी ने ऐसी मारी तोड़ गेरी नस-नस।

मार्‌यो तो दरद को मैं कर रह्यो चस-चस॥

आज पीछे मैया तेरी, गैया न चराऊँगो।

बाबा की दुहाई तेरो माखन नहीं खाऊँगो॥

तोड़ गेरी बाँसुरि अब काहे कूँ बजाऊंगो॥

ऐसी मार मारेगी तो दो दिन में मर जाऊंगो॥

एरी मार कर कर दिया घमशाना॥ तुम० २॥

लीन्हो गोद बिठाय, रही समझाय, पुत्र मति बिलखे।

सब झाड़ी बदन की रेत लगाय लियो तनके॥

एक आई थी बृजनार, करी तकरार, गई मोहि छलके।

गुजरी को दूंगी दण्ड, प्रात मैं चल के॥

यूं कहन लगी महतारी, तब मगन भया बनवारी।

जा पहुंचे ग्वाल मँझारी, कहे देखो अकल हमारी॥

बोले नन्दलाला खेल और मैं रचाऊँगो।
मेरे कहे चलोगे तो सबको बचाऊंगो॥
नट गये ग्वाल बाल ऐसो मत करे छल।
तूं तो दौड़ भाग जावे, हो हमारी मुशकिल॥
चलें नहीं तेरे साथ, माने ना तुम्हारी बात।
नट गये ग्वाल बाल, मनसुखो लियो है साथ॥
चले गुजरी के घर कान्हा॥ तुम० ३॥
चाल्या गोपी नाथ मनसुखो साथ चाल रह्यो लारें।
मनसुखो कृष्ण की बात चित्त नहिं धारे॥
यूं कहवे कृष्ण मुरार, मनुसखा यार, डरो मति प्यारे।
गुजरी के घरमें चलो, कोई नहिं मारे॥
यूं कहन लगे बनवारी, बोले मनसुखो पुकारी।
चोरी की नीत तुम्हारी, सँग आरति होय हमारी॥
चाले हैं कन्हैया लाल, मनसुखा को लेके लार।
सारी रैन बीत गई, तड़को रह्यो घड़ी चार॥
आप श्याम भीतर घुसे, मनसुखो खड़्यो है द्वार।
दही की मटकिया पै, लपके हैं करतार॥
बोले मनसुखो ग्वाल, जतन बतावे है।
ऊँखल ऊपर चढ़के, उतार क्यूं न लावे है॥
चढ़ गये ऊंखल पै दहि लियो ढ़लकाय।
आप खावे गट-गट, मनसुखा को देवे नांय॥
मनसुखो ग्वाल तब ऊधम दियो मचाय।
हेला मार करके वो तो, गूजरी देई जगाय॥
एरी सखी तेरे घरमें है कान्हा॥ तुम० ४॥

मनसूखा कहे पुकार, गोप की नार, दही तेरो खाई।
तेरे घरमें घुस गये दोय, बिलाव बिलाई॥
जब इतनी सुनी आवाज, गूजरी भाज दौड़कर आई।
कित गयो मनमुखो ग्वाल, दीख रह्यो नाहीं॥
कित गया कोई नहिं बोले, मनसुखो तो छिप गयो ओल्हे।
गुजरी घर माहिं टंटोले, लग्या हाथ कृष्ण क्या बोले॥
सागी रे कुबुद्धि तूं तो, दहि मेरो लियो खाय।
बहुत दिनों से मेरो, आज ही लग्यो है दाँव॥
पकड़ के हाथ दोनों, फेंटा से दियो है कस।
ऐसी मार मती मारे, टूट जावे काची नस॥
आज पीछे सखी तेरे, घर नहिं आऊंगो।
नन्द की दुहाई, तेरो माखन नहिं खाऊंगो॥
ऐसी मार मारेगी तो दो दिन में मर जाऊंगो।
एरी तज्या तेरा माखन का खाना॥ तुम० ५॥
ले चली गोप की नार, नन्द के द्वार, चालकर आई
मोहन पर दामण गेर, छिपाकर लाई।
जब होन लग्या परभात, यशोदा मात जाग कर आई।
यह देख तेरो नन्द लाल दही मेरो खाई॥
क्यूं कर रही धैया धैया, यूं कहे जसोदा मैया।
वो दिनमें चरावे गैया मेरो सूत्यो है कृष्ण कन्हैया॥
आय के सबेरे तूँतो करने लागी कर्र-कर्र।
दामण हटाके देख्यो, बैठो एक बूढ़ो गूजर॥
गूजरी के घर को धणी, मूँछ करे फर्र-फर्र।
धोली धोली दाढ़ी जाकी, दही में रही है भर॥

देई है आवाज मैया, कृष्ण को जगायो है।
छम्म छम्म पायल बाजे सूत्यो उठ आयो है॥
धन्य धन्य दीनानाथ दही मेरो खायो है।
जनम-मरण प्यारी, तेरो मैं छुटायो है॥
कहे सुखीराम प्रभु भेद नहीं पायो है
दिया तोहे भगति का वरदाना॥ तुम० ६॥

(६९) तर्ज—रसिया

बरजो बरजो अरी जसोदा, ऐसो चंचल तेरो कान्ह॥
कैसो पूत सपूत जन्यो, तू सुनलेरी दे ध्यान॥ टेर॥
नवलख गैयाँ दूझत तेरे, दूध दही की खानि।
मेरे घर माखन चोरन की, परिगई यानें बानि॥ १॥
ले माखन बन्दरन को देवे, करे सदा नुकशान।
समझायो समझे नहिं कपटी, हो गई मैं हैरान॥ २॥
चूल्हो फूंकत रोटी पोवत, छेड़े मुरली तान।
घर को काज बिसरि जाऊं प्यारी, रहे न तनको भान॥ ३॥
कुन्ज गलिन को मारग रोके, माँगत दधि को दान।
क्रोध करूं डाँटूँ नहिं माने, खड्यो करे मुसकान॥ ४॥
आज तलक सब माफ करूंरी, राख्यो तेरो मान।
दे गुलचा अब मार लगाऊं, घर नहिं दूंगी जान॥ ५॥
नटवर ने निरखन नित गोपी, नित प्रति देत उल्हान।
'श्यामसखा' माता ढिग बैठयो, बृज मण्डल को प्रान॥ ६॥

(७०)

कान्हा काहेकूं मारो मोहे काँकरी॥ टेर॥
गाय भैंस थाँरे अबहि भई है, पहले नहीं थी घर बाकरी॥ १॥

महल अटारी थाँरे अबहि भये हैं, पहले नहीं थी टूटी छापरी ॥ २ ॥
पीत पिताम्बर कान्हा अबहि पहरो, पहले नहीं थी फाटी धाबरी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, शरणें राखो तो करूँ चाकरी ॥ ४ ॥

(७१)

मैया थाँरो मोहन म्हारे, नित घर आवे हे, धूम मचावे हे ॥ टेर ॥
ग्वाल बाल रा टोला नें नित, झालो देय बुलावे हे
धनसुख मनसुख सँग श्रीदामू, दौड़्या आवे हे ॥ धूम० ॥ १ ॥
ग्वाल बाल घोड़ा बण ज्यावे, मनमोहन चढ़ ज्यावे हे
छींके ऊपरली मटकी रो, दहि ढुलकावे हे ॥ धूम० ॥ २ ॥
म्हरा छोटा टाबर नें सुताने आय जगावे हे
आँखिया फाड़ डरावे वानें, तब चिरलावे हे ॥ धूम० ॥ ३ ॥
छोड़ गवू रे बाछड़ियाँ ने सगलो दूध पियावे हे
पूँछ मरोड़ भगावे वाँने, खुद भगज्यावे हे ॥ धूम० ॥ ४ ॥
कौतुक गारो पूत तिहारो, म्हानें भोत अधावे हे
बाहर जातो पोली रो कूंटो जड़ ज्यावे हे ॥ धूम० ॥ ५ ॥
लाड लडाय बिगाड़्यो री मैया, तूं तो नहिं धमकावे हे
अब तो सुधरे नांय सुधार्‌यो, अंगुठा दिखावे हे ॥ धूम० ॥ ६ ॥

(७२)

रे माखन की चोरी छोड़ साँवरे मैं समझाऊं तोय
मैं जान्यो यो गयो गैयनमें, रयो खिरक में सोय
कोउ एक ग्वारिन ने बतरायो, दई कमरियाँ खोय
नवलख धेनु नन्द घर दूझे, नित नयो माखन होय
बड़ौ नाम तेरे नन्द बाबा को, हँसी हमारी होय

(७५)

नन्द सुत चुपके माखन खात॥ टेर॥
ठाढ़ो चकित चहूँ दिसि चितवत, मन्द मन्द मुसुकात।
मथनी महँ कोमल कर डारे, भाजन की ठहरात।
जो पावत सो लेत ढ़ीठ हठि, नेकहु नाहिं डरात।
देखत दूरि ग्वालिनी ठाढ़ी, मन धरिवे की घात।
'श्याम' ब्रह्म की माधुरी लीला, निरखि निरखि हरषात।

(७६)

जसोदा कहा कहौं मैं बात॥ टेर॥
तुम्हरे सुत के कर्तव मोपे, कहत कहे नहिं जात।
भाजन फोरि ढ़ोरि सब गोरस, लै माखन दधि खात।
जो बरजौं तो आँखि दिखावे, रंचहु नाहिं डरात।
और अटपटी कहँ लौं बरनौं, छुहत पानि सौं गात।
दास 'चतुर्भुज' गिरधर गुन हौं, कहत कहत सकुचात।

(७७)

मोहन तेरी फिरि फिरि जात सगाई॥ टेर॥
माखन चोर कहावत बृज में, चरचित लोग लुगाई।
घर माखन मिसरी नहिं भावे, पर घर खात चुराई।
कहत गोपिजन नित ही माँगत, दधि को दान कन्हाई।
रोकत बाट हाट गलियन में, ऐसी धूम मचाई।
ग्वालिन चीर चुराकर बैठो, बंसीवट पर जाई।
गोपी ग्वाल चराचर मोहे, ऐसी बेनु बजाई।
'श्रीनिधि' श्याम नाम गुन गाये, सफल भई कविताई।

(७८)

दधि मथत ग्वालि गरबीली री॥ टेर॥

रुनक झुनक कटि किंकनि बाजत,

बाँह झुलावत ढीली री॥ १ ॥

कमल नयन दधि माखन माँगत,

नाहिन देत हठीली री॥ २ ॥

भरी गुमान बिलोवत ठाढ़ी,

अपने रंग रँगीली री॥ ३ ॥

हँसि दीन्हो नँदलाल लाड़िलो,

मीठी सी बात कहीली री॥ ४ ॥

'सूरदास' मन हरन मनोहर,

सरबस दियो है छबीली री॥ ५ ॥

(७९)

दोउ भैया मैया सौं माँगत दे दे माखन रोटी॥ टेर॥

बलदाऊ नक बेसर खेंचे, स्याम खेंच रहे चोटी।

मानहु हंस मोर भख लीन्हो, कवि कृत उपमा छोटी।

यह छबि निरखि नन्द आनन्दित प्रेम मगन भये लोटी।

'सूरदास' धनि धनि री जसोदा बड़ भागिन तूँ मोटी।

(८०)

शोभित कर नवनीत लिये॥ टेर॥

घुटुरनि चलत रेनु तनु मण्डित, मुख दधि लेप किये।

चारु कपोल लोल लोचन छबि, मृग मद तिलक दिये।

लट लटकन मनु मत्त मधुप गन, मादक मधुहि पिये।
कठुला कण्ठ बज्र केहरि नख, राजत रुचिर हिये।
धन्य 'सूर' एको पल यह सुख, का सत कल्प जिये।

(८१)

दधि पीले रे श्याम सलौना॥ टेर॥
काहे की तेरी बनी मथनियाँ, कौन पत्र के दौना॥ १॥
कोरे काठ की बनी मथनियाँ, कदम पत्र के दौना॥ २॥
कौन घाट पर ग्वाल जुड़े हैं, कौन घाट नन्द-छौना॥ ३॥
चीर घाट पर ग्वाल जुड़े हैं, कालिन्दी नन्द-छौना॥ ४॥
तुझ पै राई-नौन उतारूँ, लगे नहीं तेरे टोना॥ ५॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, हरिके चरण चित पोना॥ ६॥

(८२)

मंगल आरति कीजे भोर॥ टेर॥
मंगल मथुरा मंगल गोकुल, मंगल राधा नन्द किशोर।
मंगल लकुट मुकुट वन माला, मंगल मुरली है घनघोर।
मंगल नन्दगाँव बरसानो, मंगल गोबरधन गिरि मौर।
मंगल वंशीवट तट जमुना, मंगल लता झुकी चहुँ ओर।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, मंगल बृज बासी निसी भोर।

(८३)

चलो सखी वृन्दावन चलिये मोहन बेनु बजाये री॥ टेर॥
बेनु सुनत ब्रह्मादिक मोहे, वेद पढ़न नहिं पाये री।
बेनु सुनत शिव शंकर मोहे, ध्यान धरण नहिं पाये री॥ १ ॥

बेनु सुनत इन्द्रादिक मोहे, राज्य करण नहिं पाये री।
बेनु सुनत सब सन्तन मोहे, भजन करण नहिं पाये री॥ २ ॥
बेनु सुनत गौ-बछरा मोहे, चारा चरण न पाये री।
बेनु सुनत खग पंछी मोहे, चुगा चुगण नहिं पाये री॥ ३ ॥
बेनु सुनत सब गोपी मोहे, काज करत उठि धाये री।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, हरि चरणन चित लाये री॥ ४ ॥

(८४)

सुन सुन रे म्हारा प्यारा रे साँवरा
कद म्हारे आँगणियें पधारोला, कद म्हारे आँगणियें पधारोला॥ टेर॥
साँवरी सूरत थाँरी लागे प्यारी, गल वैजन्ती माला न्यारी,
कद म्हानें दरश दिखाओला॥ १ ॥
ढूँढ़ रही थाँने बृज की बाला, रूस रया क्यूँ नन्दजीरा लाला,
कद थाँरी झलक दिखाओला॥ २ ॥
याद करे थाँने राधा प्यारी, बेगा आओ श्याम मुरारी,
कद थाँरी बाँसुरी बजाओला॥ ३ ॥
म्हे दासी चरणाँरी थाँरी, देर करो मत श्याम बिहारी,
कद म्हारी बिथा मिटाओला॥ ४ ॥

(८५)

तर्ज—कसूमो

बनवारी म्हारा कृष्ण मुरारी रे, गिरधारी॥ टेर॥
थाँरे तो खातिर साँवरा गंगाजल लाई, भर सोने की झारी रे॥ १ ॥
थाँरे तो खातिर साँवरा बाग लगायो, बिच केसर की क्यारी रे॥ २ ॥

थाँरे तो खातिर साँवरा महल चिनायो, बिच बिच राखी बारी रे ॥ ३ ॥
थाँरे तो खातिर साँवरा भोजन बनायो, छप्पन भोग की त्यारी रे ॥ ४ ॥
थाँरे तो खातिर साँवरा हिंडोलो घलायो, झूलो कुंजविहारी रे ॥ ५ ॥
थाँरे तो खातिर साँवरा सब कुछ छोड्या, आई शरण तिहारी रे ॥ ६ ॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, चरन कमल बलिहारी रे ॥ ७ ॥

(८६) तर्ज—पीपली

मोहन मोहन निसदिन मैं रटूँजी, हाँजी, म्हारा मोहन जीवन प्रान,
दरश दिवानी कान्हा आपकी जी ॥ १ ॥
साँवरि सूरत थाँरी मन बसी जी, हाँ जी थाँरी सुन मुरली की तान,
बिसरी सुध बुध सारी देह की जी ॥ २ ॥
मोर मुकुट पिताम्बर काछनी जी, हाँजी थाँरे गल वैजन्ती माल,
मुखपर मुरली सोहे अति घणी जी ॥ ३ ॥
धेनु चराओ बाबा नन्द की जी, हाँजी काई माँगो दधि को दान,
रीत चलाओ कान्हा थे नई जी ॥ ४ ॥
वेनु बजाओ कान्हा सोहणी जी, हाँजी थे तो नाचो म्हारे आँगन माहिं,
माखन मिसरी देस्याँ म्हे घणी जी ॥ ५ ॥

(८७)

मथुरा में जाया कान्हा, गोकुल में आया जी,
जसुदा जी पालणें झुलाया मोहन प्यारा जी,
नन्द दुलारा जी ॥ टेर ॥
कंस राजा सुण मनमें भोत घबरायो जी,
पूतना रा प्राण नसाया मोहन प्यारा जी ॥ नन्द० १ ॥

दरश की प्यासी फिरे कुञ्जन में ढूँढ़त श्याम को।
बिहारी चरनों का चेरा, बुलालो निज धाम को।
अपनें चरनों का दास बनाया करो॥ ४ ॥

(८९)

श्याम रसिया मेरे मन बसिया,
रुचि रुचि भोग लगाओ रसिया॥ टेर॥
सबरी के बेर सुदामा के तन्दुल,
प्रेम से भोग लगाओ रसिया॥
दुरियोधन के मेवा त्यागे,
साग विदुर घर पाओ रसिया॥
जो यह भोग प्रसादी पावे,
उनको पार लगाओ रसिया॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
बाँकी छबि दरसाओ रसिया॥

(९०)

तूं गोकुल का रखवाला है, कोई क्या जाने नन्दलाला है॥ टेर॥
तेरे मोर मुकुट सिर सोहत है, मकराकृत कुण्डल मोहत है।
तेरे गल वैजन्ती माला है, कोई क्या जाने नन्दलाला है॥ १ ॥
तूं मीठी बेनु बजाता है, जमुना तट धेनु चराता है॥
तूं चक्र सुदर्शन वाला है, कोई क्या जाने नन्दलाला है॥ २ ॥
संसार तुम्हारी माया है, घट घट में तूहीं समाया है।
तूं हीं प्रभु दीनदयाला है, कोई क्या जाने नन्दलाला है॥ ३ ॥

जमुना तट आया कान्हा धेनु चराया जी,
काली ने नाथ भगाया मोहन प्यारा जी, ॥ नन्द० २ ॥
इन्दर गरबायो जद गिरिवर उठायो जी,
गोपी अरु ग्वाल बचाया मोहन प्यारा जी, ॥ नन्द० ३ ॥
रुकमण रे खातिर कान्हा कुनणांपुर आया जी,
असुराँ रो मान घटाया मोहन प्यारा जी, ॥ नन्द० ४ ॥
द्रुपद सुता रो कान्हा चीर बढ़ायो जी,
काँपी है दुशाशन री काया मोहन प्यारा जी, ॥ नन्द० ५ ॥
सुर नर मुनि थाँरा पार न पाया जी,
दास नारायण जस गाया मोहन प्यारा जी, ॥ नन्द० ६ ॥

(८८)

मोहन बंशी की तान सुनाया करो।
झाँकी मोर मुकुट की कराया करो॥ टेर॥
डोलती व्याकुल सखी श्री कृष्ण कृष्ण पुकारती।
आरती करने को चन्दन पुष्प माल सँवारती।
हमतो बिरहन ना तरसाया करो॥ १ ॥
किस लिये हमसे अलहदा, आप स्वामी हो गये।
तकसीर हमसे क्या बनी, निरमोहि ऐसे बन गये।
करुणा करती है ध्यान लगाया करो॥ २ ॥
राज चेरी को दिया अरु प्रीत कुबजा से करी।
वास ब्रज का तज दिया क्यों द्वारिका पहुँचे हरी।
स्वामी ब्रजमें हीं रास रचाया करो॥ ३ ॥

बरसाने तेरी भई सगाई, नित नई चरचा होय
बड़े घरन की राजदुलारी, नहीं वरैगी तोय
यह चौरी नहिं छूटे मैया, होनी हो सो होय
'सूरश्याम' मैया के आगे, दियो नयन भर रोय

(७३)

अपनो गाँव रखो नन्दरानी, हम कहिं दूर बसेंगी जाय॥ टेर॥
तेरे लाला के गुन सुनरी, कहूँ तोय समझाय।
देखन में छोटो सो लागे, हाल बड़ो है जाय॥ १ ॥
सूनी बाखर खोल के साँकर, वह भीतर घुस जाय।
छींका में ते माखन खावे, दूध दही ढ़रकाय॥ २ ॥
मैं जल जमुना नहान जात री, चीर चोर लै जाय।
लेके चीर कदम पर बैठो, गूठा रयो दिखाय॥ ३ ॥
एक दिना मोहन को पकर्‌यो, दुबक छिपक कर जाय।
अपनो हात छुड़ाय गयो देवर को कर पकराय॥ ४ ॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, लाल कूँ लेओ समुझाय।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में लूट लूट दधि खाय॥ ५ ॥

(७४)

हमरौ न्याव करौ बृज नारी।
या बृज में प्रगट्यो उतपाती, तेरौ पूत अनारी॥
बिनु बातन हमसौं नित अटके, ढीठ बड़ौ अति भारी॥
अँचरा झटक पटक सिर गागर, ठाड़ौ दे मोकू गारी॥
तुम याको घरमें नहिं बरजौ, कुल की रीत बिगारी॥
नारायण कछु जान परत है, याही सीख तुम्हारी॥

जो शरण तुम्हारी आता है, वह अविचल पदवी पाता है।
फिर जन्म मरण मिट जाता है, कोई क्या जाने नन्दलाला है॥ ४ ॥
यह दास नेरा गुण गाता है, चरणों में शीश झुकाता है।
तूं बिगरी बनाने वाला है; कोई क्या जाने नन्दलाला है॥ ५ ॥

(९१)

श्री गोवर्धन महाराज हो राज तेरे माथे मुकुट विराज रयो॥ टेर॥
तो पै पान चढ़े तो पै फूल चढ़े और चढ़े दूध की धार॥ १ ॥
तेरे कानन कुंडल सोह रहे तेरी ठोड़ी पै हीरा लाल॥ २ ॥
तेरे गले में कंठा सोने की तेरी झांकी बनि है विशाल॥ ३ ॥
तेरी सात कोस की परिकम्मा चकलेश्वर है विश्राम॥ ४ ॥

सात गोपियाँ मिलकर जसोदाजीके पास आयीं

(९२)

समझादे पड़ाँ हे थाँरे पाँय, जसोदा थाँरे सुतने हे।
म्हे तो लम्बा लम्बा जोड़्या दोन्यू हात, जसोदा थाँरे सुतने हे॥
जसोदा के आँगणे में गोप्याँ आई सात।
भेली होकर कहबा लागी, अपणी अपणी बात॥ समझा० १॥
थाँरो कुंअर बड़ो उतपाती, नित म्हारे घर आवे।
सूनी बाखल देख वो तो, चुपके से घुस ज्यावे।
माखन खावे मचावे उतपात, छोराँने ल्यावे सँगमें हे॥ २॥
मैं तो पानी भरबा चाली, जमनाजी के तीर।
मटकी ऊपर काँकर मारी, बलदाऊ को बीर॥
पीछें दौड़ी तो हात कोनी आय, छिप्यो है थाँरे घरमें है॥ ३॥

मैं तो रोटी पोवण वैठी, आयो म्हारे द्वार।
भर भर लोटा आटे माहीं, पानी दीन्हो डार॥
वाहर भाग्यो अंगूठा दिखलाय, रह्यो ना म्हारे वशमें हे॥ ४॥
दोफारी मे सोती मैं तो; ओढ़के दुपट्टो।
खाटके पागेसूं म्हारो; वाँध दीन्हो चुट्टो॥
जब मैं उठी तो उठ्यो नहीं जाय, दरद हुयो सिरमें हे॥ ५॥
मैं तो घरपर छाछ सूँ; माथो रही धोय।
जमनाजी री रेत गेरी; सिर पर धोबा दोय॥
धमकाऊं तो देवे मुसकाय; जलावे म्हारे जिवने हे॥ ६॥
सासु म्हारा नीन्द में; सूता मुँडो फाड़।
ले माखन को लोधो वाके, मुखमें दीन्हो डार॥
रीसाँ बलता सुणावे दोय च्यार; जसोदा थाँरे सुतने हे॥ ७॥
राखो थाँरे नन्दगाँवने, म्हे तो छोड़ जास्याँ।
रोजीना री राड़ करबा, क्यूँ थांरे घर आस्याँ॥
माता कहे मैं देस्यूँ समझाय गोपणियां म्हारे सुत ने हे॥ ८॥

(९३)

तूँ टेढ़ो तेरी टेढ़ी नजरियाँ॥ टेर॥
मुरली तेरी टेढ़ी, मुकुट तेरो टेढ़ो,
टेढ़ी रे तेरे हाथ की अँगुरियाँ॥ १॥
पाँव तेरे टेढ़े कमर तेरी टेढ़ी, टेढ़ी रे तेरी हँसन साँवरिया॥ २॥
ग्वाल तेरे टेढ़े गोपी है तेरी टेढ़ी,
टेढ़ी रे तेरी जसुदा डुकरियाँ॥ ३॥
गोकुल तेरो टेढ़ो बृन्दावन टेढ़ो,
टेढ़ी रे तेरी मथुरा नगरियाँ॥ ४॥

गली तेरी टेढ़ी निकुञ्ज तेरी टेढ़ी,
टेढ़ी रे तेरी जमुना की डगरियाँ॥ ५ ॥
नाम तेरो टेढ़ो, लीला तेरी टेढ़ी,
टेढ़ी रे तेरे जनम की घड़ियाँ॥ ६ ॥

(९४)

तैं मेरो मन मोह्यो रे सांवरिया,
मीठी सी वेणु बजायके रे॥ टेर॥
मैं दधि बेचन जाऊँ बृन्दावन, मारग घेरत धायके रे।
नितही दान दहीको माँगे, बोलत आँख दिखाय के रे॥ १ ॥
जब मैं इत उत बाहर निकसूं चुपके से घर आय के रे।
ग्वाल बाल को सँगमें लेके, माखन दही गटकायके रे॥ २ ॥
घर कौ कारज बिसर गई हूँ, मुरलि धुन सुन पायके रे।
सास ननद मोहि ताना मारे, अटपटी बात सुनायके रे॥ ३ ॥
सोवत हूँ सपने में दरशे, बोलत अति मुसकायके रे।
टूट जाय मेरी काची निदरियाँ, चित्त लियो है चुराय के रे॥ ४ ॥

(९५)

थे तो नखराला छो मदन गोपाल,
थे तो छिनगारा छो मदन गोपाल॥
मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, गल वैजन्ती माल॥ १ ॥
अधर सुधा रस मुरली राजै, नैणा बणै बिशाल॥ २ ॥
बाजूबन्द की छटा निराली, पौंछी रो रंग गुलाल॥ ३ ॥
कटी पिताम्बर कमर कन्दोरो, चरणन नुपुर रसाल॥ ४ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, राखो जी मोहि सँभाल॥ ५ ॥

(९६)

कान्हुड़ा थाँरी लागे छबि प्यारी, बिरज में बाँसुरियाँ बाजी॥
मनमोहन थाँ पर जाऊँ बलिहारी,
बिरज में बाँसुरियाँ बाजी॥ टेर॥
हरिये वन की बाँसुरी, निकली परवत फोड़।
जो मैं ऐसी जाणती, लेती तोड़ मरोड़॥ १ ॥
चार अँगुल की लाकड़ी, कौड़ी थाँरो मोल।
मोहन मुख ऊपर धरी, हो गई तूं अनमोल॥ २ ॥
तूं है ब्रज की बाँसुरी, मैं हूँ ब्रज की नार।
दोनो ही एक गाँव की, रहिजे मतो विचार॥ ३ ॥
बंशी वाले मोहनां, बन्शी नेक बजाय।
या बन्शी मन मोहनी, लहर लहर जीयो जाय॥ ४ ॥
मीराँ मदमाती फिरे, बाँध भगत को मोड़।
दरशण दीज्यो साँवरा, नागर नन्द किशोर॥ ५ ॥

(९७)

गोपाल हो तुम हम बाल सखा, तुम और नहीं हम और नहीं।
मैं बालक हूँ तुम मात पिता, तुम और नहीं हम और नहीं॥ टेर॥
तुम हित हो मैं हितकारी हूँ, तुम कर्म हो मैं क्रमकारी हूँ।
तुम ठाकुर हो मैं पुजारी हूँ, तुम और नहीं हम और नहीं॥ १ ॥
तुम कमल हो मैं रस भौंरा हूँ, तुम चंदा हो मैं चकोरा हूँ।
तुम मेरे हो मैं तेरा हूँ, तुम और नहीं हम और नहीं॥ २ ॥
तुम दीपक मैं उजियाला हूँ, तुम दाता मैं दर वाला हूँ।
तुम गायत्री मैं माला हूँ, तुम और नहीं हम और नहीं॥ ३ ॥
तुम परदे में मैं जाहिर हूँ, तुम भीतर हो मैं बाहिर हूँ।
तुम नारायण हो मैं नर हूँ, तुम और नहीं हम और नहीं॥ ४ ॥
यह दौ का भेद मिटा प्यारे, अब देर करो मत पल भर की।
इस दास को दरसन दो प्यारे, तुम और नहीं हम और नहीं॥ ५ ॥

(९८)

गाये जा गीत मोहन के तूँ नँदनंदन के अगर सुख पाना है॥ टेर॥
इस दुनियाँ का झूठा पसारा, ना हम किसके न कोई हमारा।
साथी हैं सब ही तन के स्वारथी धनके छोड़ सब जाना है॥ १ ॥
यशुदानंदन के गुन गावो, उनहीं के रँग में रँगजावो।
कटे बंधन जनम जनम के, मिले साथी मन के उन्हीं को रिझाना है॥ २ ॥

(९९)

जय जय श्री कृष्णचंद्र नंद के दुलारे॥ टेर॥
व्यास रिषिन्ह कपिलदेव, मच्छ कच्छ हंस सेव,
नरहरि वामन सुभेव, परसु धरन हारे॥ १ ॥
कलकि बौध पृथु सुधीर, ध्रुव हरि रघुवंश वीर,
धनवंतरि हरन पीर, हयग्रीव पियारे॥ २ ॥
बद्री पति दत्तात्रय, मनवंतर टारन भय,
यग्येश्वर वपु बराह, सनकादिक वारे॥ ३ ॥
रूपकुँअरि चतुरवींस, नाम लेत नमत सीस,
वंश बढ़त भगति पाइ, अधमन को तारे॥ ४ ॥

(१००)

कथा रस वृन्दावन सों आयो।
राम रस माधोवन सों आयो॥ टेर॥
सब भक्तन के पीवन खातिर, यदुपति आप पठायो।
कीन्ही कृपा जानि जन अपना, वचन सुधारस पायो॥ १ ॥
शिव सनकादि शेष मुनि नारद, वेदव्यास जस गायो।
शुक प्रहलाद गोकर्ण से ग्यानी, इस जगमें फैलायो॥ २ ॥
प्रेत जोनि से मुक्त कियो पुनि, नृप वैकुंठ पठायो।
गायो सुन्यो प्रेम से बाँच्यो, 'सूर' अमर पद पायो॥ ३ ॥

(१०१)

आरती कृष्ण कन्हैया की अधर धर मुरलि बजैया की॥ टेर॥
नाथ मथुरा में जनम लियो, नंद घर मँगलाचार कियो।
यशोदा गोद खिलैया की॥ आ० ॥ १ ॥
कृष्ण ने कंस असुर मार्‍यो, श्याम ने भूमि भार टार्‍यो।
सहज में नाग नथैया की॥ आ० ॥ २ ॥
कृष्ण तुम अर्जुन के प्यारे, श्याम भक्तन के रखवारे।
यमुना तट रास रचैया की॥ आ० ॥ ३ ॥
कृष्ण तुम यशुदा के छैया, नाथ बलदाऊ के भैया।
मोहन वन गाय चरैया की॥ आ० ॥ ४ ॥

श्रीराधा-जन्मोत्सव

तर्ज—रसिया

(१०२)

भरि गई कीरतजू की गोद, मोद रावल में छायो है।
मोद रावल में छायो है, मोद बरसाने छायो है॥ टेर॥
प्रगटी कीरत नन्दिनि राधा, उमड़्यो जग में प्रेम अगाधा,
मिटगई सब भक्तन की बाधा, राधा, बिना श्याम है आधा,
कृष्ण प्रेम की ध्वजा फरूखे, रस बरसायो है॥ १ ॥
हिल मिल कर आई बृज-नारी, तन पै पहन कसूमल सारी।
लिये आरती मङ्गल थारी, होत निछावर रूप निहारी।
ब्रज की शोभा देख आज सुरपति ललचायो है॥ २ ॥
लक्ष्मी सची शारदा गौरी, आई सब रावल में दौरी।
दधि माखन की लिये कमौरी लख न सकी ब्रज बनिता भोरी।
लाली की छवि निरख निरख, हियरो हुलसायो है॥ ३ ॥

भानु भवन की शोभा राचे जय जय श्री राधे धुनि माचे।
ब्रह्मा वेद अस्तुति बाँचे, महादेव गोपी बन नाचे।
चित्रसेन गन्धर्व भाट बनकर, जस गायो है॥ ४ ॥
सनकादिक नारद ऋषि आवे रासेश्वरि के दर्शन पावे।
कहि कहि अद्भुत मरम जनावे, नभ में देव पुष्प बरषावे।
स्थावर जंगम सब प्रानिन्ह को, भाग्य जगायो है॥ ५ ॥

कीर्तन

(१०३)

राधे रानी की जय महरानी की जय
बोलो बरसाने वारी की जय जय जय
मन भूल मत जैयो राधारानी के चरन
राधा रानी के चरन महारानी के चरन
राधे राधे राधे जय जय जय श्री राधे
राधे राधे राधे बरसाने वारी राधे
मेरे तो आधार हैं श्रीराधे के चरणारविन्द
राधे के चरणारविन्द श्यामा के चरणारविन्द
राधे राधे राधे राधे राधे गोविन्दा
राधे गोविन्दा, भजो वृन्दावन चन्दा
राधे राधे गोविन्द, गोविंद राधे

राग—आसावरी

(१०४)

प्रेम की मूरति नागर नट की।
पुन्य थली बरसानें प्रगटी, माया की छाया सब सटकी॥
राधा प्रेम सुधा रस सरिता, अटकत नांय काहू की हटकी॥

चली अबाध अमी रस धारा, हरि की ओर कितहु नहीं भटकी ॥
रागी हरि-पद बिसय बिरागी, जन जे अवगाही रस गटकी ॥
ते सजि गोप गोपिका आये लै लै सिर दधि माखन मटकी ॥
निरखन लगे करन न्यौछावर, रासि रासि आभूषण पटकी ॥
सोहत बन्दनवार पाँति सुभ, कदली खम्भ सुमंगल घटकी ॥
अचल सुहाग असीसत वृद्धा, जुबती हँसत हँसावत मटकी ॥
नाचत गावत सुधि बिसारि सब, सहजहिं लाज-सरम सब झटकी ॥

(१०५)

तेरी लाली का अचल सुहाग रहे,
श्यामसुन्दर में नित अनुराग रहे ॥ टेर ॥
भानुपुर के जीवों का बड़ भाग्य रहे,
ब्रजबासी जीवों का बड़ भाग्य रहे।
संसारी जीवों का बड़ भाग्य रहे,
नन्द भानु के सिर पर पाग रहे ॥ १ ॥
तेरी लाली के पीरे पीरे हाथ रहे,
बन्शीवारे का नित प्रति साथ रहे ॥ २ ॥
तेरी लाली के हातन में लाली रहे,
नैन कमलो में नित वनमाली रहे ॥ ३ ॥
तेरी लाली के बिंदिया भाल रहे,
नैन कमलों में नित नन्दलाल रहे ॥ ४ ॥
तेरी लाली जगत् प्रतिपाली रहे,
त्रिभुवन भीतर उजियाली रहे ॥ ५ ॥
तेरी लाली का नित ब्रजधाम रहे,
घट घट में नित घनश्याम रहे ॥ ६ ॥

तेरी लाली के गोपीजन साथ रहे,
गिरिधारी का कंधे पै हाथ रहे॥ ७ ॥
तेरी लाली का आधा ही नाम रटे,
जाके कौटी जनम का पाप कटे॥ ८ ॥
तेरी लालीसे कोई पुकार करे,
जसुदालाल वाकी संभार करे॥ ९ ॥
तेरी लाली का कोई गुणगान करे,
वह प्रेम भक्तिका पान करे॥ १० ॥

(१०६)

किशोरी तेरे चरणन की रज पाऊँ।
बैठि रहौं कुंजनि के कोनें, श्याम-राधिका गाऊँ॥
जो रज शिव-सनकादिक लोचन, सो रज सीस चढ़ाऊँ॥
'व्यास' स्वामिनी की छबि निरखत, बिमल-बिमल जस गाऊँ॥

(१०७) तर्ज—जलालजी

राधे रानी म्हे तो थांरे ब्रज बृन्दावन आया हो,
म्हारी किरति कुमारि, बृषभानु की दुलारि॥ म्हे० टेर॥
राधेरानी थे तो म्हाँने, श्यामसुन्दर सूँ मिलादो हो॥ म्हा० ॥
नैया म्हारी भवसूं पार लगादो हो मेरी माय॥ १ ॥
राधेरानी चाहो तो म्हांने ब्रज की रेणु बनादो हो॥ म्हा० ॥
लता पता की कोई एक डाली बनादो हो मेरी माय॥ २ ॥
राधेरानी सगलांने तज शरण आपरी आया हो॥ म्हा० ॥
कर कमलांरी करज्यो छत्तर छाया हो मेरी माय॥ ३ ॥
राधे रानी म्हे तो थाँरे ब्रज वृन्दावन आया हो,
म्हारी कीरतकुमारि, वृषभानुकी दुलारि, अलबेली सरकार॥ म्हे० ॥

(१०८)

मैं तो रटूँगी राधा नाम व्रज की गलियनमें।
खोई रहूँगी आठौं याम ब्रज की गलियन में॥ टेर॥
इत उत डोलूँ कह कह राधा, मिट जाये जीवन की बाधा।
और नहीं कछु काम॥ १॥
उलझ उलझ ब्रज करील बनमें, सेवाकुंज रहों निधिवन में।
करौं सदा विश्राम॥ २॥
अब तो चाह यही मेरे मन की, धूरि मिले मोहि हरि चरनन की।
मिलि जाये घनश्याम॥ ३॥

(१०९) तर्ज—रसिया

जपेजा राधे राधे, भजेजा राधे राधे।
अरे तेरा बेड़ा हो जाय पार, भजेजा राधे राधे।
राधे सब बेदन को सार, भजेजा राधे राधे॥ टेर॥
तूं मृत्युलोक में आयो, तैंने राधे नाम न गायो।
अरे तेरो जीवन है धिक्कार, भज्यो नहिं राधे राधे॥ १॥
यह प्रेम की अकथ कहानी, नहिं जाने ज्ञानी ध्यानी।
अरे याने जाने ब्रज की नार, भजेजा राधे राधे॥ २॥
यह वृन्दावन की लीला, मत समझो गुड़ का चीला।
अरे याते सुर नर मुनि गये हार, भजेजा राधे राधे॥ ३॥
जो राधे नाम न होतो, रसराज बिचारो रोतो।
अरे नहिं होतो कृष्ण अवतार, भजेजा राधे राधे॥ ४॥
वृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी बनकर आयो।
अरे बन्शीवट कियो विहार, भजेजा राधे राधे॥ ५॥

आरती

(११०)

आरति श्री बृषभानु लली की. सत-चित आनँदकंद कली की॥
भय भंजिनि भव सागर तारिनि,
पाप-ताप कलि-कल्मष हारिनि,
दिव्य धाम गोलोक विहारिनि,
जन पालिनि जग जननि भली की॥ १॥
अखिल विश्व आनन्द विधायिनि. मंगलमयी सुमंगल दायिनि,
नँद नंदन-पद-प्रेम प्रदायिनि, अमिय राग-रस रंग रली की॥ २॥
नित्यानन्दमयी आहलादिनि, आनंदघन आनंद प्रसाधिनि,
रसमयी रसमय मन उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्ण अली की॥ ३॥
नित्य निकुंजेस्वरि रासेस्वरी, परम प्रेमरूपा परमेस्वरी,
गोपिगणाश्रयि गोपिजनेस्वरी,
विमल विचित्र भाव अवली की॥ ४॥

(१११) यशोदाजी की अभिलाषा

मेरे मोहन को लगन कब होसी॥ टेर॥
सुत बहु मेरे घर कब आवे, बहुरानी मेरे घर कब आवे।
ज्योतिष देख बता दे रे जोशी॥ १ ॥
बिबिध भाँति के भोजन जिमावूँ,
नव पट भूषण दूँ परितोसी॥ २ ॥
रतन मुहर दूँ भेंट दक्षिणा,
गैया दूँगी तोहे पाली पौसी॥ ३ ॥
'श्याम सखा' कब बनि हैं बराती,
तरसत बृज के पास पड़ौसी॥ ४ ॥

(११२)

नहीं होयगो ब्याह तिहारो रे, तूँ है कनुआ कारो॥ टेर॥
कारी ही रात अँधेरी में जायो जी, गोकुल में कोऊ लाय
बिठायो जी, अब कौन तेरो रखवारो रे॥ तूँ॥ १ ॥
मात यशोदा दाऊ भैया हो, कोऊ नहीं तेरो लाला कृष्ण
कन्हैया हो, बाबा है नन्द हमारो रे॥ तूँ॥ २ ॥
चोरी करि करि माखन खायो जी, प्रगट तूँ माखन चोर
कहायो जी, पहिचान गयो ब्रज सारो रे॥ तूँ॥ ३ ॥
कारो ही श्याम कमरिया तेरी कारी जी,
कजरारी तेरी अँखियाँ है कारी जी,
अब रहगयो लाल कँवारो रे॥ ४ ॥

(११३) राग—गौरी साँझ

मैया मेरी कर दे री ब्याह हमारो, यामे कहा बिगरैगो तिहारो॥
दाऊ भैया हँसत सखा मोहि, कह कह कनुआ कारो।
होवे ना श्याम सगाई तेरी, रह गयो लाला कँवारो॥ १ ॥
तूँ मैया मेरी सुनत न कबहू, तेरौ ना पतियारो।
यह लेरी तेरी लकुट कमरिया, मैं नहिं पूत तिहारो॥ २ ॥
लौटि रहे अँगना बिच गिरधर, अँखिया अँसुवन ढ़ारौ।
रूठत श्याम मनाय यशोदा, ले गोदी पुचिकारौ॥ ३ ॥
ऐसो ब्याह रचूँ तेरो लाला, चकित होय जग सारौ।
मैं तेरी मैया, सुन रे कन्हैया, तूँ मेरो सुत प्यारौ॥ ४ ॥

(११४)

कन्हैया लाल घड़लो म्हारो भरदे रे।
भरदे रे सिर पर धरदे रे॥ कन्हैया॥ टेर॥

तूँ मत जाणी कान्हा, मैं हूँ अकेली,
ब्रज की सहेल्याँ म्हारे सँग है रे॥ १॥
तूँ मत जाणी कान्हा, बिनु माँ बाप की,
बरसानो मेरो पिहर है रे॥ २॥
तूँ मत जाणी कान्हा, मैं हूँ कँवारी,
नन्द को छबीलो म्हारो वर है रे॥ ३॥
'चन्द्र सखी' भज बालकृष्ण छबि,
चरणाँरी दासी म्हाँने करदे रे॥ ४॥

श्रीकृष्ण विवाह महोत्सव

(११५) तर्ज—कसूमो

आज म्हारे ठाकुर जी रो ब्याह रच्यो है।
हँस-हँस मङ्गल गावो हे सहेल्यो।
हिल-मिल मङ्गल गावो हे सहेल्यो॥ टेर॥
आवो ये सहेल्यो आपां चौक पुरावां।
चौक पुरावाँ आपां कान्हा ने बैठावाँ।
घणाँ घणाँ लाड लडावाँ हे सहेल्यो॥ १ ॥
केवड़ा गुलाब से स्नान करावाँ।
कर सिंगार आपां भोग लगावाँ।
पुष्पां री माला पहनावाँ हे सहेल्यो॥ २ ॥
माथे पे प्रभुजी के मुकुट लगावाँ।
मौर चन्द्रिका किलंगी सजावाँ।
रतन हार पहनावाँ हे सहेल्यो॥ ३ ॥

अधरामृत पर मुरली सोहे।
पीत पीताम्बर मनड़ो मोहे।
हाथाँ में महँदी लगावाँ हे सहेल्यो॥ ४ ॥
कर सिंगार किसोरी ने बुलावाँ।
श्याम सुन्दर को ब्याह रचावां।
जोड़ी रा दरशण पावाँ हे सहेल्यो॥ ५ ॥

(११६)

नन्द लालो बैठ्यो ऊबटनें, चम्पा चमेली रो तेल॥ कानुड़ो॥ टेर॥
आवो नन्द बाबा नीरखल्यो, आवो माता जसोदा नीरखल्यो।
थाँ नीरख्याँ सुख होय॥ १ ॥
आवो वसुदेवजी नीरखल्यो, आवो माता देवकी नीरखल्यो।
आवो माता रोहिणी नीरखल्यो। थां निरख्याँ सुख होय॥ २ ॥
भैयाजी भावज नीरखल्यो, बहन सुभद्राजी नीरखल्यो।
थाँ नीरख्याँ सुख होय॥ ३ ॥
आवो ब्रज बासी, नीरखल्यो, आओ सब सन्ताँ नीरखल्यो।
थाँ निरख्याँ सुख होय॥ ४ ॥
आओ ब्रज गोपी नीरखल्यो, आवो सब सखियाँ नीरखल्यो।
थाँ निरख्याँ सुख होय॥ ५ ॥

(११७)

अलबेला कान्हा बेगा पधारो म्हारे बाग में॥ टेर॥
द्वार द्वार पर तोरण बाँधू अरु बनमाल सजाऊँ।
अतर गुलाब केवड़ा जूही मारगमें छिड़काऊँ॥ जी० ॥ १ ॥

केशर अरु कस्तूरी का मन मोहक तिलक लगाऊँ।
चुन चुन फुलवा माला गूंथूं प्रियतम ने पहनाऊँ॥ जी० ॥ २ ॥
छप्पन भोग छतीसूं बिंजन सुवरण थाल सजाऊँ।
चंदन चोकी उपर बिठाऊँ कर मनुहार जिमाऊँ॥ जी० ॥ ३ ॥
एला लोंग सुपारी डारूँ बीड़ा पान खवाऊँ।
पंखो ढ़ोलू रूप निहारूँ प्रीत की रीत निभाऊँ॥ जी० ॥ ४ ॥
नैण ढ़ोलिये उपर बिठाऊँ कोमल चरन दबाऊँ।
मनड़े रा सब भाव प्रभूजी थांसूं नायँ छिपाऊँ॥ जी० ॥ ५ ॥
सांवरि सूरत माधुरि मूरत हिवड़े मायँ बिठाऊँ।
जनम जनम थांरा गुण गाऊँ चरन कँवल लिपटाऊँ॥ जी० ॥ ६ ॥

(११८)

री मोहे देजा दहि को दान गुजरी बरसाने वारी॥ टेर॥
तूँ कौन गाँव से आई तेरो को है नाम बताई।
अरी तेरो कौन पती भरतार॥ गु० ॥ १ ॥
मैं बरसाने सौं आई मेरो नाम है राधा बाई।
अजी मेरौ कृष्ण पती भरतार॥ गु० ॥ २ ॥
तूं सिर धर मटुकी लाई मोहि माखन नायँ चखाई।
री तेरी मटुकी फोरौं डार॥ गु० ॥ ३ ॥
तूं नित वृन्दावन आवे चुपके चुपके भगजावे।
री मैंने आज लई पहचान॥ गु० ॥ ४ ॥

(११९)

मिलि बरसाने की गोरी २ गारी गावे नवल किसोरी॥
तुम सुनो नंद के नंदा २ तुमको पूछें हम ब्रज चंदा॥
तेरी बहन सुभद्रा बाई २ वाने अरजुन गैल भगाई॥
नँदनंदन तेरी ताई २ वाकी सब जग करे हँसाई॥

नँदनंदन तेरी भूवा २ वाके क्वारिन के सुत हूवा॥
नँदनंदन तेरी काकी २ वा छैल छबीली बाँकी॥
नँदनंदन तेरी मोसी २ वा सदा रहे मद होसी॥
नँदनंदन तेरी मामी २ वा सब अबलन में नामी॥
नँदनंदन तेरी नानी २ वाकी बात न हमसे छानी॥
नँदनंदन तेरी दादी २ वा सदा रहे उनमादी॥
गोरे नंद यशोदा मैया २ तुम कारे कौन के दैया॥
दास रसिक किसोरी गावै २ वो बास सदा ब्रज पावै॥

(१२०)

कान्हाजी थे तो चौकी विराजो जी।
सब सखियाँ करे अरदास, सलौनी सूरत दिखाज्यो जी॥
कान्हाजी थाँरे तेल चढ़ावाँ जी,
कान्हाजी थाँरे पीठि लगावाँ जी।
जमुना जल सूँ नहलाय पीत वस्तर पहनावाँ जी॥
कान्हाजी थाँरे काजर साराँजी,
कान्हाजी थाँरे तिलक लगावाँ जी।
थाँ ने मनि मुकता की माल अंग भूषन पहनावाँ जी॥
कान्हाजी थाँरे मुकुट लगावाँ जी,
कान्हाजी थाँरे मुरली धरावाँ जी।
थाँरे काना में कुण्डल सजाय, फूलमाला पहनावाँ जी॥
कान्हाजी थाँरे भोग लगावाँ जी,
कान्हाजी थाँने पान चबावाँ जी।
थाँरा गावाँ मंगल गीत मनोहर आरति उताराँ जी॥

(१२१)

ऐजी वांने देख्या बिना रह्यो ये न जाय।
सजनी! लग गयो नेह बिहारी सौं॥ टेर॥
साँवरी सी सूरत माधुरी सी मूरत, नैणाँ बिच रही है समाय।
एजी म्हारे नैणां में० ॥ १ ॥
दिन नहीं चैन रैण नहीं निंदियां, अँग अँग रयो मुरझाय।
एजी म्हारो अँग० ॥ २ ॥
दरद की मारी बन बन डोलू, देवो क्यूं नी दरश दिखाय।
ओजी प्यारा देवो० ॥ ३ ॥
'बाई मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, चरणा में रही लिपटाय।
एजी वाँरे चरणा में० ॥ ४ ॥

(१२२) तर्ज—नवरङ्ग गारी

दामोदर बालमुकन्दा जी; बृजचन्दा जसोदानन्दा॥ टेर॥
थे तो जीमो कृष्णजी माखन, म्हारे बस ज्यावो भीतर आँखन जी॥ १॥
थे तो पीवो कृष्णजी दूधो, कोई आप जिस्यो नहिं सुधो जी॥ २॥
थे तो जीमो कृष्णजी मेवा; ग्वालिन घर करो कलेवा जी॥ ३॥
थे तो जीमो कृष्णजी लाडू थाँरी जान में पाँचू पान्डू जी॥ ४॥
थे तो जीमो कृष्णजी पेठा, थे तो दोय बापन रा बेटाजी जी॥ ५॥
थे तो जीमो कृष्णजी सीरो, थाँरे हल मूसलधर बीरो जी॥ ६॥
थे तो जीमो कृष्णजी नुकती, मामा की करदी मुकती जी॥ ७॥
थे तो जीमो कृष्णजी घेवर, थाँरा छम छम बाजे नेवर जी॥ ८॥
थे तो जीमो कृष्णजी फीणी, थाँरी झाँकी नवरङ्ग भीणी॥ ९॥
थे तो जीमो कृष्णजी खाजा, थे द्वारावति रा राजा जी॥ १०॥
थे तो चाबो कृष्णजी बीड़ा, थाँरी अजब अलौकिक क्रीड़ा जी॥ ११॥

(१२३)

राधे जी के सोहत माँग सिंदूर॥ श्यामाजू के॥ टेर॥
गौर वदन कजरारी अँखियाँ श्याम प्रेम भरपूर॥ १ ॥
छबि निरखत कोटिक रति लाजै मघवा होत मजूर॥ २ ॥
कटि किंकणि गल हार मनोहर, बाजत चरण नुपूर॥ ३ ॥
शिव ब्रह्मादिक शीश चढ़ावत, ले चरणन की धूर॥ ४ ॥

(१२४)

राधेजी की महँदी को मानिक रंग॥ टेर॥
कनक कटोरे महँदी घोरी शोभित रङ्ग सुरंग॥ १ ॥
चतुर सखी मिल महँदी माँडत, भरि भरि बहुत उमंग॥ २ ॥
लखि बृषभान लली की शोभा, लजत कौटि रति अंग॥ ३ ॥
चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि, श्री वृन्दावन चन्द॥ ४ ॥

(१२५) तर्ज—जपे जा राधे राधे

छायो नन्द भवन उजियार घर आई राधे रानी॥ टेर॥
दुलहा श्री कुञ्ज बिहारी, दुलहन श्री भानु दुलारी।
ऐसी जोड़ी पर बलिहार॥ १ ॥
लेकर जमुना जल झारी, आई मिल सखियाँ सारी।
हो निछरावल होत अपार॥ २ ॥
सखियां मिल मंगल गावे, श्यामा को लाड लडावे।
सबके छायो हरष अपार॥ ३ ॥
जसुदा मुख निरखन आई, श्यामा मुख लेत छिपाई।
लीन्ही गोदी में बैठार॥ ४ ॥
मस्तक सूंघ्यो नन्दरानी, राधे मेरी बहुरानी।
मैया इक टक रही निहार॥ ५ ॥

ऋषि मुनि सुर सन्त पधारे, ब्राह्मण मिल मन्त्र उचारे।
हो सब बोले जै जै कार॥ ६ ॥

(१२६) तर्ज—मैं तो हूं भक्तन को

मेरे दिल में तो ये ही बड़ा चाव मैं खाते देखूं मोहन को॥ टेर॥
सेज कुञ्ज पर बैठे मोहन, छटा रहे छिटकाय।
कैसी छबि है प्यारी-प्यारी, मन्द मन्द मुसकाय॥ १ ॥
कोई सखी फुलवा ले आई, कोई करे श्रृंगार।
कोई सखी दरपण दिखलावे, कोई पहनावे गलहार॥ २ ॥
कोई माखन मिसरी लाई, कोई दूध अरु भात।
हमें देख शरमाय गये हैं, दोनों ही खाय रहे साथ॥ ३ ॥
कोई सखी जल झारी लाई, कोई चँवर ढुराय।
कोई पान का बिड़ला लाई, चाँदी के बरक लगाय॥ ४ ॥
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, उर उमगे अनुराग।
अब तो प्रभु जी दरसन दीजो, धन्य धन्य मेरे भाग॥ ५ ॥

झूलन लीला

(१२७) तर्ज—गोपीचन्द

घनश्याम बुलावे, झूलन नें चालो राधे बाग में॥ टेर॥
झूलन चालो बाग में सखी, सज सोलह श्रृङ्गार।
पहन सकल आभूषण सजनी, निरखो नन्द कुमार जी॥ १ ॥
मलयागिरि को बन्यो हिंडोलो, डोरी रेशम तार।
झूलो आप झुलावे मोहन, गावे राग मल्हार जी॥ २ ॥
छटा छबीली बाग की जी, खिल रही केशर क्यार।
चम्प चमेली खिली केतकी, भंवर करत गूंजार जी॥ ३ ॥

शिव सनकादिक, अरु ब्रह्मादिक, कोई न पावे पार।
दास नारायण शरण आपकी, करज्यो बेड़ा पार जी॥ ४ ॥

(१२८)

बृजवासी कान्हा हरिये बागाँ में बोले मोरिया॥ टेर॥
बरसाने के बागमें जी, बोले चातक मोर।
झूले प्यारी राधिका वाँरे सँगमें नन्दकिशोर जी॥ १ ॥
जोड़ी राधेश्याम की जी, निरखूँ चित्त लगाय।
इन्ह जोड़ी का दरशन कर के जनम सुफल हो जाय जी॥ २ ॥
प्रेम सरोवर घाट पै जी, बैठ्या सन्त सुजान।
श्यामा सौं विनती करे जी, प्रेम भक्ति देओ दान जी॥ ३ ॥
सरदपुनम की रात में जी, निरमल उगियो चांन।
दौड़ी आवे बृज की बाला, सुन मुरली की तांन जी॥ ४ ॥
प्रेम सरोवर प्रेम को जी भर्यो रहे दिन रैन।
श्यामा प्यारी चरन धरे तो, श्याम धरे दोउ नैन जी॥ ५ ॥
चन्द्रसखी की बीनती थे, सुणज्यो जी रणछोड़।
दासी चरन कमल की थांरी अरज करे कर जोड़ जी॥ ६ ॥

(१२९)

झूलो घल्यो कदम की डारी, झूले राधा प्यारी रे॥ टेर॥
मलियागर को बन्यो हिंडोलो, रेशम तारी रे।
हिल मिल गावे सुन्दर गीत, झुलावे सखियाँ सारी रे॥ १ ॥
दादुर मौर पपैया बोले, कोयल कारी रे।
ऐसी बन्शी श्याम बजावे, मनको हरने वारी रे॥ २ ॥
चम्पा चमेली खिली केतकी, केशर क्यारी रे।
नभ में घटा चढ़ी चहुँ ओर, जोर से बरसन हारी रे॥ ३ ॥

दमक दमक घन में दमके, दामिन मतवारी रे।
जल की टप-टप बूँदें टपकत, भीजत रेशम सारी रे॥ ४ ॥
छटा अनोखी निरख बाग की, तन मन वारी रे।
झुकि झुकि कह नारायणदास, राधिका शरण तुम्हारी रे॥ ५ ॥

(१३०)

श्याम झूले हिंडोरा, कुँजन वन में।
कुँजन वन में सखी माधो वन में॥ टेर॥
उमड़-घुमड़ कर आई बदरिया, बिजुरी चमक रही घन में॥ १ ॥
दादुर मौर पपीहा बोले, कोयल सबद करत वन में॥ २ ॥
चहूँ दिसि में हरियाली फूली, ऋतु बरषा के आनन में॥ ३ ॥
सत्य के स्वामी बेग पधारो, चित लाग्यो म्हारो चरनन में॥ ४ ॥

(१३१)

नन्दजी का लाला, म्हाँनै दरशावो थांरी द्वारका॥ टेर॥
जरासन्धस्यूं डरकर भाग्या बस्या द्वारका जाय।
नाम भयो रणछोड़ आपरो, वेद रया जस गाय जी॥ १ ॥
कंचन कोट च्यार दरवाजा, ध्वजा रही फरुखाई।
गोरख छाजा और झरोखा, कंचन कलश सजाई जी॥ २ ॥
गूंज रह्यो रतनागर सागर, नीर झपेटा खाय।
फूल्या कमल भंवर गूंजत हैं, मुनि मन लेत लुभाय जी॥ ३ ॥
रूकमणजी रे महल की जी, शोभा कही न जाई।
रतन जड़ित सींहासन ऊपर, राजत है जदुराई जी॥ ४ ॥
ब्रह्मा शेश महेश शारदा, नित उठ दरशन पावे।
इन्द्रादिक सब देव आयकर, सदा सुमन बरषावे जी॥ ५ ॥

होरी के पद

(१३२)

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी नहीं बरजोरी रे रसिया॥ टेर॥
चोवा चोवा चन्दन और अरगजा,
केसर मृगमद घोरी रे रसिया॥ १ ॥
श्याम के हात कनक पिचकारी,
राधे के हात कमोरी रे रसिया॥ २ ॥
राधे पै श्याम बहुत रंग डारे,
श्याम पै राधे गोरी रे रसिया॥ ३ ॥
लाल गुलाल के बादल छाये,
केशर कीच मच्यो री रे रसिया॥ ४ ॥
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छबि,
चिरँजी रहो यह जोरी रे रसिया॥ ५ ॥

(१३३)

होरी खेलन आयो श्याम आज याहि रंग में बौरौ री॥ टेर॥
कोरे कोरे कलश मँगाओ केशर घोरो री।
याके मुख पर केशर मलो करो कारे ते गोरो री॥ १ ॥
लोक लाज मरजाद सभी, मोहन सँग तोरो री।
जब हात जोड़ कर करे वीनती, तब याहि छोड़ो री॥ २ ॥
हरे बाँस की बाँसुरियाँ याकी, तोर मरौरो री।
चन्द्रसखी यों कहे आज बन बैठ्यो भोरो री॥ ३ ॥

(१३४)

राधा सखियन सों कहे सुनो सब गोरी।
मोहन को घेरो आज निकारो या की होरी॥ टेर॥

हिल मिल कर सब ही चलो श्याम को पकड़ो।
याके मुख पर मलो गुलाल कमर कूँ जकड़ो।
फिर हमसों जाय कहाँ भाग श्याम नहिं तगड़ो।
नहि छोड़ेंगी हम सहज होय चाहे झगड़ो।
अब आयो फागुन मास रहें क्यों कोरी॥ १ ॥
यशुदा को अनोखो छैल रंग यापे डारो।
याहि करदेवो रंग विरंग न हिम्मत हारो।
मनसुख जो आवे और कहूँ बजमारो।
कौरन की मारो मार के होस बिगारो।
अब नहि बैठेंगी चुप्प बनी हम भोरी॥ २ ॥
इतने में देखे श्याम सखी सब धाई।
पकरे मोहन के हात संग ले आई।
सब घेरलई नटवर को सुधि बिसराई।
अब कहाँ तुम्हारी मात जो लेत छुड़ाई।
सब भर भर डारे रंग गुलाल की झोरी॥ ३ ॥
सखियन ने मोहन दीन्हें नारि बनाई।
लखि करके लीला कृष्ण दास हरषाई।
नित बसो दृगन में जुगल रंग भरि जोरी।
नित बनी रहो यह जुगल रंग भरि जोरी॥ ४ ॥

(१३५)

बृज में हरि होरी मचाई,
होरी मचाई कैसी फाग मचाई॥ बृज०॥ टेर॥
इतते आई कुँअरि राधिका, उतते कुँअर कन्हाई॥
हिल मिल फाग परसपर खेले शोभा वरनि ना जाई॥
नन्द घर बटत बधाई॥ बृज०॥

बाजत ताल मृदङ्ग शंख ध्वनि, सारङ्गी शहनाई।
अबिर गुलाल के बादल छाये, केशर कीच मचाई॥
मानो मघवा झरि लाई॥ बृज०॥
राधेजी सेन दई सखियन को, झुन्ड की झुन्ड चलि आई।
पकरो जी पकरो श्याम सुन्दर ने, अब कहिं भाग न जाई॥
करो अपनी मन चाही॥ बृज०॥
छीन लीये मुरली पीताम्बर, सिरपर चुनरी ओढ़ाई।
बिंदली भाल नयन बिच कजरा, नक बेसर पहनाई॥
लालजी को ललनी बनाई॥ बृज०॥
कहाँ तो गये तेरे बाबा नन्दजी, कहाँ तो जसोदा माई।
कहाँ जो गये तेरे सँग के सँगाती, कहाँ हलधर बड़ भाई॥
लाल जी को लेत छुड़ाई॥ बृज०॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, पकर्‌यो है कृष्ण कन्हाई।
'सूरदास' प्रभु प्रेम को झगरो, ब्रज बनिता यदुराई॥
लालजी को घर पहुँचाई॥ बृज०॥

(१३६)

होरी श्याम रची है चलौ बाबा नन्द जी के द्वार॥ टेर॥
बहु भाँतिन के बाजे बजत हैं, डफरी शँख शहनाई,
सखि हियँ महँ हुलसी है॥ चलौ०॥ १॥
आय गोविन्द संग खेलन लागी, ब्रज बनिता सुकुमारि,
रँग पिचकारी भरी है॥ चलौ०॥ २॥
उड़त गुलाल अरुण भये अम्बर, रँग की उड़त फुँहार,
केशर कीच मची है॥ चलौ०॥ ३॥
'चन्द्र सखी' मेरो मन हर लीन्हो, देत मुकुट की झाल,
मुरली अधर धरी है॥ चलौ०॥ ४॥

(१३७)

पकरौ री ब्रज नार कन्हैया होरी खेलन आयो है॥ टेर॥
संग में अति उतपाती ग्वाल, हाथ पिचकारी फेंट गुलाल,
नाच रहे डफ बजाय दे ताल, कमोरी रंगन की भरि लायो है॥ पकरौ० १॥
लेऔ पिचकारी सबहि छिनाय, श्यामकूँ गोपी देऔ बनाय,
कंचुकी कटि लहँगा पहराय, करौ सबही अपने मन भायो है॥ २ ॥
एकहू ग्वाल जाय नहिं भाज, मलौ मुख ऊपर गोबर आज
लाज को होरी में नहिं काज, बड़े भागिन ते फागुन आयौ है॥ ३ ॥
दई आग्या बृषभानु कुमार, है गई सावधान बृजनार,
आय गये तबही कृष्ण मुरार, गरज होरी कौ शब्द सुनायौ है॥ ४ ॥
फेंट ते लियो गुलाल निकार, दियो श्यामा के ऊपर डार,
सखिन के मोंहड़े दिये बिगाड़, मनसुखा हल्ला खूब मचायो है॥ ५ ॥
उड़ावै भर भर मुठी गुलाल, है गये धरती बादर लाल,
उछर कर कूद रहे सब ग्वाल, दाँव जब बृज गोपिन नें पायौ है॥ ६ ॥
भाज मोहन को पकरी जाय, सखी नै गुलचा दिये जमाय,
लई पिचकारी तुरत छिनाय, श्याम को गोपी रूप बनायौ है॥ ७ ॥
चतुरता सबरी दई भुलाय, साँवरौ झुकि झुकि हा हा खाय,।
किशौरी मन्द मन्द मुसकाय, नन्द कौ घूँघट मार नचायौ है॥ ८ ॥

(१३८)

रँग डारत लाज न आई, नँदजी के कुँअर कन्हाई॥ टेर॥
पी पी छाछ भये तुम्ह धींगर, घर घर धूम मचाई।
गुलचा खाये भूलिगये अब करन लगे ठकुराई।
सखी याने शरम न आई॥ १ ॥
हात लकुटिया काँधे कमरिया, बन बन धेनु चराई।
दोय बापन के बारे मोहन, छाँड़त नहिं लँगराई।

कहौं तेरी मैया सों जाई॥ २ ॥
ऊँखर ते जब बाँधि जसोदा, रहे अँसुवन ढरकाई।
वे दिन अपने भूल गये लाला, अब रहे आँख दिखाई।
कबहु मेरे घर आई॥ ३ ॥
बगर परौसन सँग की सहेली पाँव परत सब धाई।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि चरन कमल बलि जाई।
सखी भीजत घर आई॥ ४ ॥

(१३९)

श्यामा श्याम सलौनी सूरत को शृंगार बसन्ती है॥ टेर॥
मौर मुकुट की लटक बसन्ती, चन्द्रकला की चटक बसन्ती।
मुख मुरली की मटक बसन्ती,
शिर पे पेच श्रवण कुण्डल छबिदार बसन्ती है॥ १ ॥
माथे चन्दन लस्यो बसन्ती, कटि पीताम्बर कस्यो बसन्ती।
मन मोहन मन बस्यो बसन्ती,
गल सोहे वनमाला फूलन हार बसन्ती है॥ २ ॥
कनक कडूला हस्त बसन्ती, चाले चाल अलमस्त बसन्ती।
पहिर रहे पोशाक बसन्ती,
रुनक झुनक पग नूपुर की झनकार बसन्ती है॥ ३ ॥
संग ग्वाल के टोल बसन्ती, बजे चंग डफ ढोल बसन्ती।
बोल रहे सब बोल बसन्ती,
सब सखियन में राधे जू सरदार बसन्ती है॥ ४ ॥
परम प्रेम परसाद बसन्ती, लगे रसीलो स्वाद बसन्ती।
है रहि सब मरजाद बसन्ती,
'घासीराम' श्याम श्यामा को नाम बसन्ती है॥ ५ ॥

(१४०)

दधि दूंगी रे साँवरिया थोरी बंसरी बजाय दधि दूंगी रे॥ टेर॥
ऐसा बजाय जैसी जमुना तट पर बाजी रे,
बहतो नीर तुरंत थमजाय॥ १ ॥
ऐसा बजाय जैसी माधोवन में बाजी रे,
चरती धेनु मगन हो जाय॥ २ ॥
ऐसी बजाय जैसी बंसीवट में बाजी रे,
ग्वाल बाल हरषित होय जाय॥ ३ ॥
ऐसी बजाय जैसी बृन्दावन में बाजी रे,
संग की सहेली मगन होय जाय॥ ४ ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि,
मुरली की धुन सुन मन रमजाय॥ ५ ॥

(१४१)

कैसे आऊँ रे सांवरिया तेरी बृज नगरी, कैसे आऊँ रे॥ टेर॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच बहै जमुना गहरी॥ १ ॥
पाँव चलूँ तो मेरी पायल बाजे, कूद पड़ूँ तो डूबूँ सगरी॥ २ ॥
भर पिचकारी मेरे मुख पर डारी, भीज गई रंग से चुनरी॥ ३ ॥
केसर कीच मच्यो आँगन में, रपट परी राधे गवरी॥ ४ ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरंजी रहो सुन्दर जोरी॥ ५ ॥

(१४२)

रसिया ने नारि बनाओ री रसिया ने॥ टेर॥
कटि लहँगा उर माहिं कंचुकी, चूनर सीस ओढ़ाओ री॥ १ ॥
बेंदी भाल नयन बिच कजरा, नक बेसर पहनावो री॥ २ ॥
'नारायण' याको तारी बजाय के, जसुमति आगे नचावो री॥ ३ ॥

(१४३)

रँग रसियो खेले फाग सखी मेरे अँगना में॥ टेर॥
याँने भिगोइ मेरी सुरँग चुनरियाँ, अपनी बचावे छेलो पाग॥ १ ॥
चोआ चोआ चन्दन और अरगजा, केसर रंग अथाग॥ २ ॥
तबला ताल सरंगी बाजे, गावत होरी की राग॥ ३ ॥
छुपि छुपि मारे रँग पिचकारी, अपनि बैर जावे भाग॥ ४ ॥
चन्द्रसखी होरी छबि निरखे, धन धन मेरो भाग॥ ५ ॥

(१४४)

वृन्दावन श्याम खेलत होरी।
नन्द नन्दन बृषभान किशोरी, करत फिरत होरी होरी॥ १ ॥
ताल मृदंग झाँझ डफ बाजत, निरत करत नव नव गोरी॥ २ ॥
उमँग उमँग सखियन के सँगमें, अबिर गुलाल भरी झोरी॥ ३ ॥
अदभुत रूप दिखाय सखिन्ह को, अंतरधान भये दौरी॥ ४ ॥
वृन्दावन की कुन्ज गलिन में, ढूँढ़त है राधे गोरी॥ ५ ॥
वृन्दावन हित रूप माधुरी, श्याम लेगयो चित चोरी॥ ६ ॥

(१४५)

किन मारी पिचकारी रे, श्याम मैं तो भिगगई सारी॥ टेर॥
जो मारी मेरे सनमुख आवे, नहिं तो दूँगी गारी रे॥ १ ॥
भर पिचकारी मेरे सनमुख मारी, बेसर मुरगई सारी रे॥ २ ॥
ऐसो अरुन भयो अँग मेरो, टारत कबहु न टारी रे॥ ३ ॥
सास लड़ै मेरी ननद खिजावे, खिज खिज ताना मारी रे॥ ४ ॥
चन्द्रसखी बृज युगल छबी के, चरन कमल पर वारी रे॥ ५ ॥

(१४६)

बृषभानु की लली, साँवरिया से नेहरा लगाय के चली॥ टेर॥

आजा रे अहीर के तूं हमरी गली,
चन्दन छिरकूँगी लाला तेरी पगरी ॥ १ ॥
कोरी कोरी मटुकी दूध सौं भरी,
रंग महल में श्यामा प्यारीजू खड़ी ॥ २ ॥
हातन में गजरे गुलाब की छड़ी,
ठाड़े रहो लालजी मैं कब की खड़ी ॥ ३ ॥
नैनन में कजरा ओ मुख भर्‌यो पान,
वारी सी ऊमर स्यामा बड़ो ही गुमान ॥ ४ ॥
वृन्दावन कुञ्जन में रच्यो महा रास,
यह धुनि गावे स्वामी कान्हरदास ॥ ५ ॥

(१४७)

होरी में गये हार, सकल खल दल संहारी ॥ टेर ॥
सखि सहचरि सब को ले सँगमें, रंग भरी पिचकारी।
श्याम बदन कोमल सब तन पर, हेरि हेरि कै मारी।
रँगीली किरति कुमारी ॥ १ ॥
लाल कपोल गुलाल लपेटे, दृग सुरभित जल डारी।
भाजि चले मनमोहन सोहन, पौंछत नयन निवारी।
हँसी सखी दे दे तारी ॥ २ ॥
मुरली कर सौं परी धरनी पर, मोर शिखा महि डारी।
श्रमित भये मृदु चरन डगमगत, बैठि गये मन मारी।
घेर लई सखिन्ह मुरारी ॥ ३ ॥
बोली व्यंग बचन हँसि सखियन, बीर बड़े गिरधारी।
सहि न सके नारिन्ह की कोमल, कर कमलन्ह पिचकारी।
लाज कहाँ सकल बिसारी ॥ ४ ॥
सुनि सखि बचन सकुचि हरि बोले, सुनु बृषभानु दुलारी।

मैं तोसें प्रिय सब बिधि हार्‌यो, हार नई क्या हमारी।
चरन रज हौं बलिहारी॥ ५ ॥
सुनि मृदु बचन श्रमित लखि पिय को, दुखित भई हिय भारी।
लीन्ह किशोरी उठाइ प्रानधन, सिंहासन बैठारी।
करन लगि बसन्ह बयारी॥ ६ ॥
पौंछत अंग सुभग निज पट सौं, श्री वृषभानु दुलारी।
मुख धोवत सुरझावत अलकें, निज कर सौं पिय प्यारी।
मुदित भई लखि बृज नारी॥ ७ ॥

(१४८)

खेले संत सकल मिल होरी।
रहे हरि रँग महँ बोरी॥ टेर॥
शंकर ताल मृदङ्ग बजावत, ग्वाल डफन की जोरी।
नारद व्यास अङ्गिरा नाचत, गौलोकन की पौरी।
अगुआ श्याम बन्यो री॥ १ ॥
ध्रुव प्रहलाद विदुर अरु भीषम, ऊद्धव अरजुन जोरी।
गोपीजन दौपदि अरु मीराँ, इन्ह सब मिल रँग घोरी।
रही भक्तन्ह पर ढ़ोरी॥ २ ॥
गूह निषाद विभीषन अंगद, हनुमत रंग रँग्यो री।
बलि राजा अम्बरीष सुदामा, मुचकुन्द आन मिल्योरी।
वृत्रासुर भयो बड़ जोरी॥ ३ ॥
सब संतन मिलि पकरि श्याम को, बाँध्यो प्रेम की डोरी।
तुलसी नानक दास कबीरा, 'सूर' भी संग लग्यो री।
मची ऐसी होरी ही होरी॥ ४ ॥

(१४९)

आज देखो रँग है रँग है रँग है, रसिकन्ह केरो सँग है॥ टेर॥
रँग है मथुरा रँग वृन्दावन, कुञ्ज गलिन में रँग है॥ १ ॥
रंगहि महलन रंगहि मजलस, रंग बदन सब अँग है॥ २ ॥
रँग गढ़ गोकुल रँग बरसानो, रंग श्री गोवरधन है॥ ३ ॥
'सूरदास' रँग गावत जाके, राधा कृष्ण को सँग है॥ ४ ॥

(१५०)

मैं सुनी तुम्हारी बात मेरा दिल अटका।
मोहि दरशण दो प्रभु अपने मोर मुकुट का॥ टेर॥
ये मात पिता भ्राता नहिं माने मेरी।
इस कुनणाँपुर में गाय सिङ्घ ने घेरी॥
मेरा पड़दा तेरे हाथ नाथ घूँघट का॥ १ ॥
ये सेना लेकर असुर यहाँ चलि आये।
वो जरासन्ध सा बली साथ में लाये॥
उस शिशूपाल का आन मिटावो खटका॥ २ ॥
तुम पदम श्याम मथुरा के बासी आवो।
इस रूकमैये को अपना बल दिखलावो॥
तोहि करना है यह काज आज झटपट का॥ ३ ॥

(१५१)

मम जीवन के आधार, मनमोह नन्दकुमार॥ टेर॥
मैं मोहन मोहन गाऊँ, मोहन बिनु चैन न पाऊँ।
मोहन से मेरा प्यार॥ १ ॥
मैं मोहन मोहन बोलूँ, वृज-गलिन गलिन में डोलूं
तुम सुन लो मेरी पुकार॥ २ ॥

मैं मोहन मोहन जपती, नित श्याम विरह में तपती
सब छूटा घर संसार॥ ३ ॥
मैं मोहन मोहन हेरूँ, ऊँची चढ़ चढ़कर टेरूँ।
कब लेऊँ तुम्हें निहार॥ ४ ॥

(१५२)

याद सतावे रे थांरी याद सतावे रे,
नव छैला श्याम बिहारी थाँरी याद सतावे रे॥ टेर॥
जग-चरचा जब पड़े कानमें जिव घबरावे रे।
तब कालजियो चूँटीजे भीतर मन अकुलावे रे॥ १ ॥
ब्याह विनोद उछाह जगत रा नांय सुहावे रे।
मनमोहन थांरी बाताँ सुण सुण आनन्द आवे रे॥ २ ॥
घर में रहूँ फिरूँ बाहर, चित चैंन न पावे रे।
अब हाल बेहाल हुया हिवड़ेरा, प्राण न जावे रे॥ ३ ॥
तूँ छलिया छिपकर वैठ्यो अँखियां मटकावे रे।
मोहि दरशण दे गोपाल लाल अब क्यूं तरसावे रे॥ ४ ॥

(१५३) तर्ज—जकड़ी

चालो हे सखियाँ आपाँ, गिरधरने ढूँढ़ाँ,
श्याम मिले तो घर ल्यावाँ हे लो॥ टेर॥
घर अरु बाहिर चहुँ दिसि जोया,
जबसे गया नहिं आया हे लो॥ १ ॥
आप न आवे साँवरो पतियाँ न भेजे,
निठुर भया निरदायी हे लो॥ २ ॥
एक सखी कहे किण बिध ढूँढ़ाँ,
बेद ढूँढ़त ज्याने थकिया हे लो॥ ३ ॥

दूजी सखी तब यूँ उठ बोली,
सन्तां सूं पूछण चालो हे लो॥ ४ ॥
ढूँढ न जाने तूँ तो बावरी है,
औराँ सूं दृष्टि हटावो हे लो॥ ५ ॥
घर माहीं ढूँढया, बाहर ढूँढया,
सत संगत सूँ पाया हे लो॥ ६ ॥
मानसिह गुरुदेव कृपा सूँ,
अब कहि आणू न जाणू हे लो॥ ७ ॥

(१५४) तर्ज-मूँदड़ी

गोप्याँ बैठी घरके माहीं श्याम बजाई बाँसुरी॥ टेर॥
बंशी सुण गोप्याँ सब धाई, मोकूँ याद करे यदुराई।
हिय महँ प्रेम न रयो समाई,
दौड़ी अरध रैन में आय कृष्ण के सामनें खड़ी॥ १ ॥
देखत ही बोले जदुराई, अब तुम कौन काज यहाँ आई,
घर वालों को सँग नहि लाई,
तुमनें छोड़दई मरजाद अकेली घरसौं नीसरी॥ २ ॥
गोप्याँ कहे सुनो जदुराई, क्यों तुम मधुरी बेनु बजाई,
तब हम रह न सकी घर माहीं,
म्हारो चित हर लीन्हो नाथ, देह की सुध बुध बीसरी॥ ३ ॥
सुनकर बोले श्री घनश्याम, ये नहिं कुलवन्ती के काम,
नाशे धर्म होत बदनाम,
थाँरा घरका जो रया बाट पुत्र घर रोवे सुन्दरी॥ ४ ॥
हरि की सुनी अनोखी बात, थर थर काँपी एकहि साथ,
अब घर किस बिध जावाँ नाथ,
बिलखत आन पड़ी चरणाँ में अँखियाँ नीर से भरी॥ ५ ॥

मोहन बोले अमरित बानी, प्रीती साँचे मन की जानी,
तुम मत चिन्ता करो सयानी,
हिलमिल महारास अब करस्याँ धीरज राखो सुन्दरी॥ ६ ॥
इच्छा रास मँडल की कीन्ही, जमुना तट भूमी रँग भीनी,
आग्या विस्वकर्मा को दीन्ही,
अब तुम करो मँडप तैयार, थली सब रतना सूँ जड़ी॥ ७ ॥
आग्या विश्वकर्मा सिर धारी, मोपर कृपा करी गिरधारी,
होगइ मण्डप की तैयारी,
हाजिर हुई योगमाया जब, हरि के चरणाँ में पड़ी॥ ८ ॥
मोहन रूप लिया बहु धार, गोप्याँ होगइ सब तैयार,
बाजे मिरदँग बीन सितार,
सुर मुनि निरखत बैठ बिमान, लगादी फूलाँ की झड़ी॥ ९ ॥
छम छम नाचे कृष्ण मुरारी, इक गोपी इक कुञ्ज बिहारी,
पूरन चन्द्र छटा उजियारी,
जमुना रुकगई बहती धार, रैन छह मास की करी॥ १० ॥
लीला महारास की गावे, ज्याँका काम क्रोध मिटज्यावे,
जम की त्रास कबहु नहिं आवे,
बरनी दसम सकन्द भागवत, धन धन बृज की गूजरी॥ ११ ॥

(१५५) तर्ज-ओल्यूँड़ी

ओ जी म्हारा नटवर नागरिया,
क्यूँ प्रीतड़ली लगा कर पाछा चाल्या जी, साँवरा॥ टेर॥
थाँरी तो ओल्यूँ गिरधर म्हे कराँ,
प्रभु थाँ बिन म्हारो जिवड़ो नहीं लागे जी, साँवरा॥ १ ॥
थाँसूं तो बिनती गिरधर म्हे कराँ,
थे गोकुल तज मथुरा क्याँने जावो जी, साँवरा॥ २ ॥

एक घड़ी तो ठहरो साँवरिया,
थाँरी गोप्याँ सगली थाँ बिन व्याकुल होवे जी साँवरा॥ ३ ॥

(१५६)

मोहन म्हाँने प्यारा लागे हे।
सैयाँ हे म्हाँरी च्यार भुजा रा दीनानाथ,
जीकांरी म्हाँने ओल्यूँ आवे हे।
सैयाँ हे म्हाँरी सहस गोप्याँ रा दीनानाथ, जीकांरी०॥ टेर॥
आँरी साँवरी सूरत पर वारी हे,
सैयाँ हे म्हाँरी गल बैजन्ती माल,
मुरली ज्याँरी बाजत प्यारी हे॥ १ ॥
मथुरा सूं अकरूर पधार्‌या हे,
सैयाँ हे म्हाँरी बाबा नन्दजी री पोल,
मोहन जी ने लेवण आया हे॥ २ ॥
आँने कुण अकरूर बतावे हे,
सैयाँ हे म्हाँरी है सगला सूं हीं क्रूर,
निरमोहीड़ा ने दया नहीं आवे हे॥ ३ ॥
भाई दोन्यूं रल मिल जावे हे,
सैयाँ हे म्हाँरी रथड़े में बैठ्या छे आय,
नहीं मुख सूँ बतलावे हे॥ ४ ॥
मोहन बातां समझावे हे,
सैयाँ हे म्हाँरी भूमी रो भार उतार,
आय थाँने दरस दिखावे हे॥ ५ ॥
सखी ललिता जस गावे हे,
सैयाँ हे म्हाँरी भवसागर सौं तार,
अन्त निज धाम पठावे हे॥ ६ ॥

(१५७)

परसूँ परसूँ श्याम कह गये, कब आवे बैरन परसूँ॥ टेर॥
बिजुरी चमके डर मोहि लागे, घन गरजे बरसूँ बरसूँ॥ १ ॥
चित चाहत उड़ि जाय मिलूँ मैं, उड्यो न जाय बिना परसूँ॥ २ ॥
पापी पपिहरा मोहि सतावे तुम बिन बिषड़ो खाय मरसूँ॥ ३ ॥
'मीराँ' कहे प्रभु गिरधर नागर, दरसन खातर मैं तरसूँ॥ ४ ॥

(१५८)

श्यामसुन्दर रसभरी मुरली बजाना छोड़दे।
ऐ मेरे प्यारे कन्हैया, नाच गाना छोड़दे॥ टेर॥
ग्वालबालोंको लिये वन वन वृथा मारा फिरे।
जमुनातट पै गाय अरु बछरा चराना छोड़दे॥ १ ॥
ब्रजकी सारी गोपिका देती उलाहना है मुझे।
आजसे इन गोपियोंके घरपै जाना छोड़दे॥ २ ॥
तनक माखन के लिये तुमको नचाती है सखी।
चोरी चोरी आजसे माखन चुराना छोड़दे॥ ३ ॥

(१५९)

एक साँवरी सूरत वारो हँस करके।
मेरो मन लेगयो वश कर के॥ टेर॥
भौंह कमान बान दृग लोचन,
हियरे में मार्‌यो कस कर के॥ १ ॥
जित देखौं तित वोही वोही दीखे,
भीतर बैठो घुस कर के॥ २ ॥
जतन करो कोइ जन्तर लिखदो,
औषध देवो कोई घिसकर के॥ ३ ॥

'चन्द्रसखी' अब चैन परै नहिं,
श्याम दृगन्ह महँ फँसकर के॥ ४ ॥

(१६०)

सनेही साँवरा रे थाँरी मोड़ी पड़ी पिछान।
नन्द का लाडला रे थाँरी मोड़ी पड़ी पिछान॥ टेर ॥
उजलो भारत देश है रे थाँरा उजला संत सुजान।
गीता थाँरी ऊजली रे उजला वेद पुरान॥ सनेही॥ १ ॥
तीरथ थाँरा उजला रे साँवरा ऊजला देवस्थान।
उजली हिन्दू संस्कृती रे करे सदा कल्यान॥ सनेही॥ २ ॥
मारग थाँरा ऊजला रे मोहन जोग भगति अरु ग्यान।
गंगा जमुना ऊजली रे संत करे असनान॥ सनेही॥ ३ ॥
उजलो थाँरो रूप है रे मोहन उजलो थाँरो नाम।
लीला थांरी ऊजली रे उजलो थांरो धाम॥ सनेही॥ ४ ॥
शरणें थाँरे आपड़्यो रे साँवरा मैं मूरख नादान।
डोरी थाँरे हातमें रे अरजुन का रथवान॥ सनेही॥ ५ ॥

(१६१)

मैं तो औराँ ने नहिं परणूँ मेरी माय, म्हारो बर साँवरियो॥ टेर॥
म्हारो बर नटवर गिरधारी, ताराँ बिचलो चान।
जड़ चेतन सबही ने मोहे, छेड़े मुरली तांन॥
बालो गोप्याँ रे घर माखन दही खाय॥ म्हारो॥ १ ॥
म्हारो बर नटवर गिरधारी, मुकुट धरे सिर मौर।
श्याम बरन घनश्याम साँवरो, संतन को चित चौर।
म्हारे हिवड़े माहीं बसगयो आय॥ म्हारो॥ २ ॥
म्हारो बर नटवर गिरधारी, अरजुन को रथवान।
जुद्ध करन का डंका बाजे, प्रगटे गीता ग्यान।

जाकी सुन सुन बातां अचरज मोकहुँ आय॥ म्हारो॥ ३ ॥
म्हारो बर नटवर गिरधारी, घट घट व्यापक एक।
जुग जुग माहीं प्रगट होय, भगतां री राखे टेक।
बालो प्रेमसे बुलावे जठे जाय॥ म्हारो॥ ४ ॥

(१६२)

साँवरिया मैं तो थाँसूं प्रीत लगाई म्हारा श्याम।
नन्दलाल जी हो म्हारा श्याम॥ टेर॥
सुनिया म्हे सत संग में, साँचा स्वामी आप।
सगपण थाँसूं कर दियो, सन्त गुरू माँ बाप।
बृजनन्दन म्हारी थाँसूं भई सगाई म्हारा श्याम॥ १ ॥
सुनो जसोदा लाडला, थाँ बिनु रयो न जाय।
सारा सुख संसार का, नरक समान लखाय।
मनमोहन मैं तो जग सूँ भई पराई म्हारा श्याम॥ २ ॥
थाँसू गिरधर लाल जी, मोड़ी पड़ी पिछान।
जनम जनम रा आप हो, प्रियतम म्हारा प्रान।
चितचोर मैं तो थाँरे हात बिकाई म्हारा श्याम॥ ३ ॥

(१६३)

थांने काईं काईं कह समझाऊँ म्हारा वाला गिरधारी।
पूरब जनम की प्रीति हमारी, अब नहीं जात निवारी॥ टेर॥
सुन्दर वदन निरखियो जबसे, पलक न लागे म्हांरी।
रोम रोम में अँखियां अटकी, नख सिख की बलिहारी॥ १ ॥
हम घर वेग पधारो मोहन, लग्यो उमावो भारी।
मोतियन चौक पुरावां बाला, तन मन तोपर वारी॥ २ ॥
म्हारो सगपन थां सूँ गिरधर, मैं छूँ दासी थाँरी।
चरण कमल मोहे राखो सांवरा, पलक न कीजे न्यारी॥ ३ ॥

बृन्दावन में रास रचायो, संग में राधा प्यारी।
मीरां प्रभु गोप्याँरो वालो, हमरी सुरति बिसारी॥ ४ ॥

(१६४)

रितु आई रे बोलत मोरा मेरा श्याम बिना जिव दोरा रे॥ टेर॥
दादुर मौर पपिहरा बोले, कोयल करत किलोरा रे॥ १ ॥
उतराखण्ड से आई बदरियाँ, चमकत है घनघोरा रे॥ २ ॥
रिम-झिम रिम-झिम मेहरा बरसे, आँगन मच रहा शोरा रे॥ ३ ॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, श्याम मिले जिव सोरा रे॥ ४ ॥

(१६५)

सखि अपनो श्याम खोटो, कोई दोष नहीं कुबजा कूँ हे॥ टेर॥
नव लख धेनू नन्द घर दूझे, माखन को कांई टोटो हे॥ १ ॥
आप तो जाय द्वारिका छाये, ले समँदर को ओटो हे॥ २ ॥
कुबजा दासी कंसराय की वो नन्दजी को ढोटो॥ ३ ॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, कुबजा बड़ी हरि छोटो॥ ४ ॥

(१६६)

म्हारी सोन चिड़ी उड़ज्यावो हे॥ टेर॥
काहे से मँढाऊँ थारी, आंख पांखड़ली,
काहे से मँढाऊँ थारी चोंचड़ली॥ १ ॥
रूपासूँ मँढाऊँ थारी आँख पांखड़ली,
सोनासूँ मँढाऊँ थारी चोंचड़ली॥ २ ॥
कहो म्हारी चिड़ियां सुगनारी बाताँ,
कद आवेला म्हारा श्याम धणी॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
बाट जोऊँ मैं थाँरी कदकी खड़ी॥ ४ ॥

(१६७)

रूप देखि अटकि तेरो, रूप देखि अटकि रे।
देह ते विदेह भई, ढुरि परी सिर मटकि रे॥ टेर॥
मात पिता भ्रात बन्धु, सबही मिल हटकि रे।
हिरदय ते अब टरत नाहिं मुरति नागर नटकि रे॥ १ ॥
प्रगट भयो पूरन नेह, लोग कहे भटकि रे।
'मीराँ' प्रभु गिरधर बिनु, कौन लखे घटकि रे॥ २ ॥

(१६८)

ओलगिया घर आया म्हारे, ओलगिया घर आया जी।
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल मिल मंगल गाया जी॥ टेर॥
घन की धुन सुनि मोर मगन भया, यूँ मेरे आनन्द छाया जी।
मगन भई मिल प्रभु अपणा सूँ, भौ का दरद मिटाया जी॥ १ ॥
चन्द कूँ निरखि कमोदणि फूले, हरखि भई मेरी काया जी।
रग-रग सीतल भइ मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधाया जी॥ २ ॥
सब भक्तन का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी।
मीराँ बिरहणि सीतल होई, सब दुख-दुन्द नसाया जी॥ ३ ॥

(१६९)

आज तो मेड़तणीरे महलाँ रंग छायो॥ टेर॥
सहस्र किरणसूं सूरज उगियो,
मानो सखी गिरधर घर आयो॥ १ ॥
सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत है,
वेद पुराणन में जस गायो॥ २ ॥
कह बखतावर सुनो बृजनन्द जी,
घर बैठी साँवरिये ने पायो॥ ३ ॥

(१७०)

आँगणिये में ऊभ्या हो बिहारीजी महाराज,
प्यारा म्हाँने लागो जी॥ टेर॥
थे तो बिहारी म्हाँने ऐसा प्यारा लागो,
ज्यूँ सोने में सुहागो जी॥ १ ॥
थे तो बिहारी म्हाँने ऐसा प्यारा लागो,
ज्यूँ ब्राह्मण गले धागो जी॥ २ ॥
शीश मुकुट थाँरे काना में कुण्डल,
कटि केशरिया बागो जी॥ ३ ॥
पहले प्रीत करी मन मोहन, अब क्यूँ म्हांने त्यागो जी॥ ४ ॥
कह बखतावर सुनो व्रजनन्दन, भाग पुरबलो जाग्यो जी॥ ५ ॥

(१७१)

थाँरी बाताँ लागे म्हाने मीठी म्हारा साँवरा।
मीठी लागे मीठी लागे मीठी म्हारा साँवरा॥ टेर॥
थे छो साँवरिया म्हारा, माथेरा सेहरा,
मैं तो थांरे हात री अँगूठी म्हारा साँवरा॥ १ ॥
थे तो साँवरिया प्यारा, मथुरा विराजो,
कबहुँ ना देवो म्हांने चीठी म्हारा सांवरा॥ २ ॥
सँकड़ी गली में म्हारा मोहन मिलिया,
किस बिध फिरूँ मैं अपूठी म्हारा साँवरा॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
चढ़गयो चोल मँजीठी म्हारा॥ ४ ॥

परिशिष्ट

(१७२) तर्ज—प्रभाती

आज महा मङ्गल गोकुल में कृष्णचन्द्र अवतार लिये॥ टेर॥
घर-घर से सब गोपी आई, मधुरे स्वर से गान किये।
मारण कारण चली पूतना, दूध पियत हरि प्राण लिये॥
मारि अघासुर और वकासुर, दावानल को पान किये।
यमला अर्जुनवृक्ष उखारे यादव कुल को तारि दिये॥
पैठि पताल नाग जब नाथ्यो, फन फन ऊपर नृत्य किये।
सात दिवस गिरि नख पर धारे, इन्द्र को मान घटाय दिये॥
केस पकरि हरि कंस पछारे, उग्रसेन को राज दिये।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि हरि चरणन महँ चित्त दिये॥

(१७३)

गोविन्द गोकुल आयो, गोविन्द गोकुल आयो॥ टेर॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच बहत है जमना गहरी।
गोकुल में सुख, मथुरा में दुख, कंस को मुख कुम्हलायो री आयो॥
नन्द भवन में नोबत बाजे, मंगल मोद बढ़ायो री आयो॥

(१७४)

जसोदा हरि पालने झुलावे।
हलरावे दुलराइ नुहावे, जोइ सोइ कछु गावे॥
मेरे लाल को आवो निदरिया, काहेन आनि सुआवे।
तूँ काहे नहिं बेगिहि आवे, तोकहुँ कान्ह बुलावे॥
कबहु पलक हरि मूँदि लेत है, कबहु अधर हलकावे।
सोवत जानि मौन भये कह रहि, करि करि सैन बतावे॥

एहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावे।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ, सो नन्द भामिनि पावे॥

(१७५)

तेरे लाला को जनम सुनि आई,
जसोदा मैया देदो बधाई॥ टेर॥
हार भी लूंगी मैं तो हँसली भी लूंगी,
नथनीकी करदो सहाई॥ ज०॥ १ ॥
काजर भी लूंगी मैं तो वेंदी भी लूंगी,
महावर की करदो सहाई॥ ज०॥ २ ॥
पहुँची भी लूंगी मैं तो टीका भी लूंगी,
मुदरी की करदो सहाई॥ ज०॥ ३ ॥
तगड़ी भी लूंगी मैं तो पायल भी लूंगी,
बिछुआ की करदो सहाई॥ ज०॥ ४ ॥
लहँगा भी लूंगी मैं तो फरिया भी लूंगी,
अँगिया की करदो सहाई॥ ज०॥ ५ ॥
'पुरुषोत्तम' प्रभुकी छबि निरखत,
चिरंजीओ लाल तेरो माई॥ ज०॥ ६ ॥

(१७६)

मैया मोही दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीन्हो, तोहि जसुमति कब जायो॥ टेर॥
कहा करौं एहि रिस के मारे, खेलन हौं नहि जात।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तेरो तात॥ १ ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्यामल गात।
चुटकी दै दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसुकात॥ २ ॥

तूँ मोही को मारन सीखी, दाउहि कबहु न खीजे।
मोहन मुख रिस की यह बाते, जसुमति सुनि सुनि रीझे॥ ३ ॥
सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई, जनमत ही को धूत।
'सूर' श्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तूँ पूत॥ ४ ॥

(१७७)

भरबादे मदन गोपाल पाणीड़ो भरबादे॥ टेर॥
मैं जल भरबा कारणे जी आई घर सूं चाल॥
जमुना घाट रोक कर बैठो, आ काइँ थाँरी चाल॥
गागर म्हारी गिर जायेगी, बैयाँ न मरोड़ो नँदलाल॥
घर पर लड़सी सासू म्हारी, नणदल देगी गार॥
नाथूराम श्याम के शरणे, सदा करो प्रतिपाल॥

(१७८)

याके माखन को लग गयो चसको, श्याम नही किन के बस को॥
जसुदा दौड़े कृष्ण के पीछे, माट फोर दियो गौरस को॥
पकरि मात उँखल के बाँध्यो, अँसुवन ढ़ार करै टसको॥
अरजुन वृक्ष खड़े दोय आँगन, ऊँखल को अटकाय खसक्यो॥
घरररर घरराट मच्यो है, उखड़े वृक्ष श्याम मुसक्यो॥
वृक्षन माहिं देव दोय प्रगटे, खूब बखान करे जस को॥

(१७९)

निरखो री सजनी दरसन है कैसो कृष्ण मुरारी को॥ टेर॥
मात देवकी जायो नंदघर आयो यसुमति पूत कहायो।
श्यामल अंग कृष्ण मुरारी को॥ १ ॥
स्तन के जहर लगाई पूतना आई हरि को मारन धाई।
करदी है मुकत असुर की नारी को॥ २ ॥

माथे दधि की मथनि नाकमें नथनि ग्वालिन चली ज्यों हथनी।
जीवन धन मोहन सब ब्रज नारी को॥ ३ ॥

(१८०)

नागिनियाँ बनकर डसगइ मोहन तेरी बांसुरिया॥ टेर॥
मैं जमुना जल भरन जात मेरे सिरपर गागरिया।
पीछे से मारी कांकरि मेरी फोरी गागरिया॥ १ ॥
मैं दधि बेचन जात वृन्दावन रोकत डागरिया।
सब लूट लूट कर खावे री नहिं मानत सांवरिया॥ २ ॥
कामन गारी बाँसुरि तेरी कर दइ घायलिया।
मैं कैसे आऊँ मोहन मेरी बाजत पायलिया॥ ३ ॥
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में मिलगयो सांवरिया।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि हो गइ बावरिया॥ ४ ॥

(१८१)

परम धाम गोलोक छाँड़ि के, गोकुल में हरि आये री॥ टेर॥
ले वसुदेव पुत्र गोदी में, नन्द भवन पहुँचाये री॥ १ ॥
धन्य भाग्य है नन्द-यसोदा जिन्हहिं परम सुख पाये री।
फूले फिरत सकल बृज वासी, आनन्द उर न समाये री॥ २ ॥
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, देव पुष्प बरषाये री।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरणन चित लाये री॥ ३ ॥

(१८२)

छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल।
छोटो सो म्हारो मदन गोपाल॥ टेर॥
आगे आगे गैया, पीछे पीछे ग्वाल।
बिच-बिच चाले म्हारो मदन गोपाल॥ १ ॥

कैसे चाले गैया, कैसे चाले ग्वाल।
कैसे-कैसे चाले म्हारो मदन गोपाल॥
धीमी चाले गैया, नाचे कूदे ग्वाल।
ठुमकत चाले म्हारो मदन गोपाल॥ २ ॥
कित रहे गैया, कित रहे ग्वाल।
कित रहवे म्हारो मदन गोपाल॥
खिरक में गैया, झोंपड़ी में ग्वाल।
सन्तों के सँग म्हारो मदन गोपाल॥ ३ ॥
क्या खावे गैया, क्या खावे ग्वाल।
क्या खावे म्हारो मदन गोपाल॥
घास खावे गैया, दूध पीवे ग्वाल।
माखन खावे म्हारो मदन गोपाल॥ ४ ॥
क्या ओढ़े गैया, क्या ओढ़े ग्वाल।
क्या ओढ़े म्हारो मदन गोपाल॥
झूल ओढ़े गैया, लम्बी टोपी ग्वाल।
कारी कामर ओढ़े म्हारो मदन गोपाल॥ ५ ॥
कैसी कैसी गैया, कैसे कैसे ग्वाल।
कैसो है रंगीलो म्हारो मदन गोपाल॥
धोरी धुमरी गैया, नटखट ग्वाल।
अटपटियो म्हारो मदन गोपाल॥ ६ ॥
क्या सुने गैया, क्या सुने ग्वाल।
क्या क्या सुने मेरो मदन गोपाल॥
बंशी सुने गैया, मुरली सुने ग्वाल।
दीनों की टेर सुने मदन गोपाल॥ ७ ॥

(१८३) तर्ज—धमाल

सबड़को मार के कन्हैया थोड़ो दहीड़ो चखाय।
दहीड़ो चखाय थोड़ो माखन भी चखाय॥ सबड़को॥ टेर॥
नन्द महर का लाडला रे बलदाऊ का बीर।
तूँ मत खाई एकलो रे थाँरो म्हारो सीर॥ १ ॥
ऊँखल उलटो मेलदे-रे ऊपर तूँ चढ़ जाय।
हाँडी ऊपर छेद करदे धरणीं पर ढुर जाय॥ २ ॥
आँख्याँ फाड़्याँ देखताँ रे तूँ माखन गटकाय।
थोड़ी सी परसादी देदे, क्यूँ म्हानें तरसाय॥ ३ ॥
भोली दुनियाँ जाने कान्हों खाय पराया माल।
तूँ हीं बृज की गैया लाला, तूँ हीं गोपी ग्वाल॥ ४ ॥

(१८४)

छुप छुप आये श्याम लेके ग्वाल बाल है।
ऐसो री यशोदा ढ़ीट तेरो नन्दलाल है।
ऐसो री हटीलो मैया तेरो नन्दलाल है॥ टेर॥
ग्वाल बाल संग लेके, घर मेरे आ गये।
माखन को खाय मेरी मटकी गिरा गये।
अँगूठा दिखावे चाले टेढ़ी टेढ़ी चाल है॥ १ ॥
देख री यशोदा श्याम तेरो बड़ो रारी है।
डगर चलत मेरी गागर फोर डारी है।
फिर भी दिखावे मोहे आँखें लाल लाल है॥ २ ॥
तोसे कछु कहें तो तूं कान से निकार दे।
बार बार श्याम की बलैयाँ लेके टार दे।
द्वार पै पुकारे खड़े सभी गोप ग्वाल है॥ ३ ॥

बोली यूं यशोदा मोते कीमत धरायले।
एक एक गागर की सौ सौ तूँ भराय ले।
गारी मत दीजे मो गरीबनी को लाल है॥ ४ ॥

(१८५) तर्ज—गोरी सांझ

कहन लगी बाल कृष्ण से मैया॥ टेर॥
नन्दपोल चढ़ि टेरत जसुदा, ले ले नाम कन्हैया।
दूर खेलन मत जावो मेरे लाला, मारेगी काहू की गैया॥ १ ॥
अपने आँगन तुलसी को बिरवा, यहाँ खेलो दोनों भैया।
पायल पहन बाबा के सनमुख, नाचो थैया थैया॥ २ ॥
नन्दराय जी से बाबा बोलत, बलदाऊ से भैया।
अपने लाला को ब्याह रचूँगी, लाऊँगी नवल दुल्हैयाँ॥ ३ ॥
बहुत भाँति के खेल रचत है, दे देकर बिलुकैयाँ।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, यशुमति लेत बलैया॥ ४ ॥

(१८६)

कहन लगे मोहन मैया-मैया।
नन्द महर सौं बाबा-बाबा, अरु हलधर सौं भैया॥ १ ॥
ऊँचे चढ़ि चढ़ि कहति जसोदा, ले ले नाम कन्हैया।
दूर खेलन जनि जाहू लला रे, मारैगी काहू की गैया॥ २ ॥
गोपी ग्वाल करत कौतुहल, घर-घर बजत बधैयाँ।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस को, चरननि की बलि जैया॥ ३ ॥

(१८७)

आज मेरो कहाँ अटक्यो गिरधारी॥ टेर॥
खोजत-खोजत फिरत जसोदा, घर-घर करत पुछारी।
कारन कवन लाल नहिं आयो, कंसहु को भय भारी॥ १ ॥

झुण्ड-झुण्ड सखियाँ चलि आई, देत जसोदा को गारी।
नन्द नन्दन को जोर जुठौनो, खेंचत अंचल सारी॥ २ ॥
रुनक झुनक मोहन चलि आये, नीर नयन भरि बारी।
मुरली मेरी छीन लई है, इन सखियन मोहि मारी॥ ३ ॥
हँसि मुसुकावत कहत ग्वालिनी, दूषण नहिं है हमारी।
श्याम सुन्दर मैं तुम्हरे दरस को, 'चन्द्रसखी' बलिहारी॥ ४ ॥

(१८८)

प्यारो लागे री श्याम सुन्दरिया॥ टेर॥
कर नवनीत नैन कजरारे, उँगरिन सोहे मुँदरिया॥ १ ॥
दोय-दोय दसन अधर अरुनारे, बोलत बैन तुतरिया॥ २ ॥
पीत झँगुलिया तन पर सोहे, सिर पर केश भँवरिया॥ ३ ॥
गोल कपोल नासिका सुन्दर, भाल तिलक मन हरिया॥ ४ ॥
घुटुवन चलत नवल तन मण्डित, मुखमें मेले उँगरिया॥ ५ ॥
देख छबी भई मगन जसोदा, लग नहिं जाय नजरिया॥ ६ ॥
भूख लगी जब ठुनकन लागे, मैया की खेंचे चुनरिया॥ ७ ॥
जाको बेद पार नहिं पावे, ताको खिलावे गुजरिया॥ ८ ॥
धनि जसुमति धनि धनि बृज नायक, धनि धनि गोप नगरिया॥ ९ ॥

(१८९) तर्ज—ननदोई

ओ जी हो साँवरिया थाँरी, दासी बण ज्यावाँ जी।
दासी बणज्यावाँ थाँरे चरणाँ में रमजावाँ जी॥ टेर ॥
कहो तो साँवरिया थाँरा, कुण्डल बणज्यावाँजी।
कुण्डल बणज्यावाँ थाँरे, काना में रमजावाँ जी॥ १ ॥
कहो तो सांवरियाँ थांरा, कङ्कण बणज्यावाँ जी।
कङ्कण बणज्यावाँ थाँरे, हाथाँ में रमजावाँ जी॥ २ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, मुँदरी बणज्यावां जी।

मुँदरी बणज्यावां थारी, अँगुली में रमजावाँ जी॥ ३ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, माला बण ज्यावाँ जी।

माला बणज्यावाँ थारे, हिवड़े पर बसज्यावाँ जी॥ ४ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, मुरली बणज्यावाँ जी।

मुरली बणज्यावाँ थाँरे अधराँ पर रह ज्यावाँ जी॥ ५ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, पैंजणियाँ बणज्यावाँ जी।

पैंजणियाँ बणज्यावां थांरे, चरना में रमजावाँ जी॥ ६ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, कोयलियाँ बणज्यावाँ जी।

कोयलियाँ बणज्यावां थांने, मीठा सबद सुणावां जी॥ ७ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, मालिनियां बणज्यावां जी।

मालिनियां बणज्यावां थांरा गजरा गूँथर ल्यावां जी॥ ८ ॥

कहो तो साँवरिया थांरी, गोपी बणज्यावां जी।

गोपी बणज्यावां थरे, संग में रास रचावां जी॥ ९ ॥

कहो तो सांवरिया थांरी, राधाजी बणज्यावां जी।

राधाजी बणज्यावां थांरी, प्रेम धजा फहरावां जी॥ १० ॥

(१९०)

मोहन मोटो रे भगताँ रो भीड़ी भाँगे टोटो रे॥ टेर॥

कुल को देव सकल को दाता, नन्द घर बन गयो छोटो रे।

चोर चोर हरि माखन खावे ओ गुण मोटो रे॥ १ ॥

बलि के द्वारे जाचन चाल्यो, बठे तो बनगयो छोटो रे।

तीन पाँवड़ा जमी माँग कर, बन गयो मोटो रे॥ २ ॥

कालिन्दी में कूद पड्यो है, दियो दड़ी को दोटो रे।

मथुराजी में मामू मार्‍यो, पकड़्यो चोटो रे॥ ३ ॥

बनमें ऋषि पतन्या नें जाची, मोंगर खायो रोटो रे।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण, चरणाँ में लोटो रे॥ ४ ॥

(१९१)

बनि आये गोपी बनवारी।
बनि आये ग्वालिन बनवारी॥ टेर॥
पहिने घूमरदार घांघरो, ओढ़ चूनर भये नथ वारी॥ १ ॥
छुप गये कुण्डल मुकुट चन्द्रिका, बिंदली भाल लसत न्यारी॥ २ ॥
मोहिनि रूप धर्‌यो मनमोहन, मोह लिये सब नर नारी॥ ३ ॥
कहँ छोड़ी तेरे कर की लकुटिया, कहँ छोड़ी कामर कारी॥ ४ ॥
कहँ छोड़े तेरे ग्वाल-बाल सब, कहँ बछरा बछिया प्यारी॥ ५ ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरन कमल पर बलिहारी॥ ६ ॥

(१९२)

मधुवन में श्याम रची होरी॥ टेर॥
किन्ह के सँग में कुँअर कन्हैया, किन्ह के संग राधे गोरी।
ग्वाल-बाल संग कुँअर कन्हैया, सखियन सँग राधे गोरी॥ १ ॥
कितनी उमर के कुँअर कन्हैया, कितनी उमर राधे गोरी।
बारह बरस के कुँअर कन्हैया, सात बरस राधे गोरी॥ २ ॥
हिल मिल फाग परसपर खेले, अबिर गुलाल भरे झोरी।
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, चिरँजी रहो यह नित जोरी॥ ३ ॥

(१९३)

आज इन दोउन पै बलि जै हैं॥ टेर॥
अंग अंग सों छबि बरसत है, निरखत नैन सिरै हैं॥ १ ॥
रोम रोम सों छबि बरसत है, उपमा देत लजै हैं॥ २ ॥
नारायण या गौर श्याम को, हृदय निकुञ्ज बसै हैं॥ ३ ॥

(१९४)

दोउ जन भीजत अटके बातन॥ टेर॥
सघन कुंज के द्वारे ठाड़े अंबर लपटे गातन॥ १ ॥
ललिता ललित रूप रस भीजी बूंद बचावत पातन॥ २ ॥
जय श्री हित हरिवंश परसपर प्रीतम मिलवत रसि रस घातन॥ ३ ॥

(१९५)

सखी री यह बड़ भागी मौर॥ टेर॥
जेहि पंखन को मुकुट बन्यो है सिर धर नंद किशोर॥ १ ॥
यह बड़ भागी नंद यशोदा, पुन्य किये भर जोर॥ २ ॥
शिव विरंचि नारद मुनि ग्यानी, ठाड़े हैं कर जोर॥ ३ ॥
'परमानंद' दास को ठाकुर गोपिन के चित चोर॥ ४ ॥

(१९६)

वृन्दावन की सुन्दर जोरी॥ टेर॥
बिहरत हैं दोउ वंशीवट पै नँद नंदन वृषभानु किशोरी॥ १ ॥
कहा बरनउँ मैं रूप छटाको सुन्दर श्याम राधिका गोरी॥ २ ॥
जय श्री भट्ट कहा लगि बरनौं रसना एक नहिं लाख करोरी॥ ३ ॥

(१९७)

हमारौं मुरली वारौ श्याम।
बिन मुरली वनमाल चन्द्रिका, नहिं पहचानत नाम॥ टेर॥
गोप-रूप वृन्दावन-चारी, ब्रज-जन पूरन काम।
याही सौं हित चित्त बढ़ो नित, दिन दिन पल छिन जाम॥ १ ॥
नन्दीसुर गोवर्द्धन गोकुल, बरसानो बिसराम।
'नागरिदास' द्वारिका मथुरा, इनसौं कैसौ काम॥ २ ॥

(१९८)

हमारी सबही बात सुधारी।
कृपा करी श्री कुञ्ज विहारिनि, अरु श्री कुञ्जविहारी॥ टेर॥
राख्यो अपने बृन्दावन में, जिहिं थल रूप ऊजारी।
नित्य केलि आनन्द अखण्डित, रसिक सङ्ग सुखकारी॥ १ ॥
कलह कलेस न ब्यापत एहि थल, ठौर विश्व ते न्यारी।
'नागरिदासहिं' जनम जितायो, बलिहारी बलिहारी॥ २ ॥

(१९९)

जो सुख लेत सदा बृज बासी
सो सुख सपने हूँ नहिं पावत, जे जन हैं बैकुण्ठ निवासी॥
ह्याँ घर-घर व्हे रयो खिलौना, जगत् कहत जाको अविनाशी॥
'नागरिदास' विस्वते न्यारो, लगि गई हाथ लूट सुखरासी॥

(२००)

मैंने महँदी रचाई रे, कृष्ण नाम की।
मैंने बिंदियां सजाई रे, कृष्ण नाम की॥ टेर॥
मेरी चुड़ियां पै कृष्ण, मेरी चुनड़ी पै कृष्ण,
मैंने नथली घड़ाई रे, कृष्ण नामकी॥ मैंने॥ १ ॥
मेरे नैनों में गोकुल बृन्दावन,
मेरे प्राणों में मोहन मन भावन,
मेरे होटों पै कृष्ण; मेरे हृदय में कृष्ण
मैंने ज्योती जगाई रे, कृष्ण नाम की॥ मैंने॥ २ ॥
अब छाया है कृष्ण अङ्ग अङ्ग में
मेरा तन मन रँगा है कृष्ण रङ्ग में,
मेरा प्रीतम है कृष्ण, मेरा जीवन है कृष्ण,
मैंने माला बनाई रे; कृष्ण नाम की॥ मैंने॥ ३ ॥

(२०१)

चलो सखी दरसन करि आवैं प्रीतम प्यारे आते हैं॥ टेर॥
ग्वाल-बाल सब सखा साथ ले, गवू चरावन जाते हैं।
कर दरसन चित हो प्रसन्न अति, सुन्दर रूप लुभाते हैं॥ १ ॥
वृन्दावन में रास रचावत, मोहन नाच नचाते हैं।
शिव सनकादिक ध्यान लगावत, पार न कोई पाते हैं॥ २ ॥
कटि पीताम्बर हात बन्शरी, मोर मुकुट छवि छाते हैं।
श्याम बदन पर मकराकृत के, कुण्डल श्रवण सुहाते हैं॥ ३ ॥
जो शरणागत होवे उनकी, भवसागर तर जाते हैं।
'ललित किशोरी' कहकर जोरी, हरि चरणन चित लाते हैं॥ ४ ॥

प्रार्थना

(२०२)

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तनसे निकले।
गोविन्द नाम लेके, जब प्राण तन से निकले॥ टेर॥
श्री गंगाजी का तट हो, या जमुना बंशीवट हो।
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले॥ १ ॥
श्रीवृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसीदल हो।
विष्णु चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले॥ २ ॥
मेरा सांवरा खड़ा हो, मुरली में स्वर भरा हो।
तिरछा चरन धरा हो, जब प्राण तन से निकले॥ ३ ॥
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो।
यह ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले॥ ४ ॥
तन छोड़ जाऊँ सुख से, तेरा नाम निकले मुखसे।
बच जाऊँ घोर दुख से, जब प्राण तन से निकले॥ ५ ॥

रहे वासना न मन में, ममता रहे ना तन में।
रहूँ मस्त नाम-धुन में, जब प्राण तन से निकले॥ ६ ॥
यह दासकी अरज है, मानो तो क्या हरज है।
लिख के करूँ दरज है, जब प्राण तन से निकले॥ ७ ॥
उस वक्त जल्दी आना, मुझको न भूल जाना।
बंशी की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले॥ ८ ॥

(२०३)

अवधनाथ बृजनाथ तुम्हारा, सदा सदा मैं दास रहूँ।
जहाँ जहाँ पर जनमू जग में, पद पंकज के पास रहूँ॥ टेर॥
मणि पर्वत या गोवर्धन का तृण तरु मूल बना देना।
बृन्दावन या प्रमोद वनका, पत्ता फूल बना देना॥
सरिता या सरजू कालिन्दी का एक कूल बना देना।
अवध भूमि या ब्रज भूमि के, पथ की धूल बना देना॥
बने धनुष अरु बन्शी जिनसे, बनकर ऐसा बाँस रहूँ।
जहाँ जहाँ पर जनमू जगमें, पद-पङ्कज के पास रहूँ॥ १ ॥
ब्रज गोकुल की बाट बनू या अवधपुरी की हाट बनू।
कोशलेश का गुण गायक या नन्द भवन का भाट बनू॥
या मैं रामचरित मानस के, सरवर में अवगाहन करूँ।
या भागवत महापुराण का, श्रवणन से रसपान करूँ॥
ध्यान सहित मैं युगल नामका, जप करता प्रति स्वास रहूँ।
जहाँ जहाँ पर जनमू जगमें, पद-पंकज के पास रहूँ॥ २ ॥

(२०४)

थांरो भरौसो भारी, सुन मुरली वाला॥ टेर॥
अजामील गज गणिका तारी, तारी है गौतम नारी॥ सुन० १ ॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, लड़त लड़त गज हारी॥ सुन० २ ॥

जौ भर सूँड़ रही जल बाहर, तब हरि नाम पुकारी॥ सुन०३॥
गरुड़ छोड़ पैदल होइ भागे, गज को लीन्ह उबारी॥ सुन०४॥
द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो, होने ना दीन्ह उघारी॥ सुन०५॥
आगे भक्त अनेक उबारे, अबकी बेर हमारी॥ सुन०६॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल बलिहारी॥ सुन०७॥

(२०५)

सुनो श्याम सुन्दर बिनती हमारी,
तेरे दर पै आया है तेरा भिखारी॥ टेर॥
बीच भँवर में फँस गई नैया, तूं हीं बतादे अब कौन खेवैया।
कृष्ण कन्हैया गिरिवरधारी, हे नटनागर कुञ्ज बिहारी॥ १॥
हे नाथ आकर के अब तो सँभालो,
डूबती नैया मेरी पार लगालो।
तेरी शरण में आया हूँ नटवर,
तुझे लाज रखनी होगी हमारी॥ २॥
तुझ बिन मेरा न कोई जहाँ में,
तूं ही बतादे अब जाऊँ कहाँ मैं।
मेरी लाज जाये तो जाये भले ही,
मगर नाथ होगी हांसी तुम्हारी॥ ३॥

(२०६)

पलभर चैन नहीं अब मुजको, तुम बिन कृष्ण मुरारी रे।
हे जसोमति के कुँअर लाड़ले, दरशन दे बनवारी रे॥ टेर॥
धन जन मित्र कुटुम्ब सुत दारा, सबसे मन उकतावे है।
खान पान रस भोग जगत के, जहर समान लखावे है॥
ऊठत बैठत जागत सोवत, लागी लगन तुम्हारी रे॥ १॥

नकल प्रेम से तूँ नहिं रीझे, असल प्रेम मुजमे नाहीं।
तुहीं बतादे लाउँ कहाँ से, मिले नहीं बजार माहीं॥
नकली ने अब असल बनादे, हे पतितन हितकारी रे॥ २ ॥
लगा दिया है अब तो मैने, तेरे द्वारेपर डेरा।
क्यों तुम देरी करो श्याम अब तड़फ रहा है दिल मेरा॥
'श्यामसखा' मेरे जीवन धन तेरी मेरी यारी रे॥ ३ ॥

(२०७)

ओजी जसोदा लाडला थाँने किण बिध भूलाँ जी राज।
ओजी नंदका लाडला थाँने किणबिध भूलाँ जी राज॥ टेर॥
चीर बढ़ायो द्रोपदी को, राखी सभा बिच लाज।
कौरव दल संहारिया दीनो पाँडू पुतराँने राज॥ १ ॥
टेर सुणी गजराज की प्रभु, दौड़्या गरुड़जी ने छोड़।
भीषम को प्रण राखिया प्रभु अपणी प्रतीग्या तोड़॥ २ ॥
विष को प्यालो भेजीयो राणू राख्यो मेड़तणी सूं बैर।
गट गट मीराँ पी गई वाको इमरत कर दियो जहर॥ ३ ॥
करमां भोलीसी जाटणी ज्याँरे, घर आया रणछोड।
लूखो खीचड़ खाइया प्रभु, कर कर मनमें कोड॥ ४ ॥

(२०८)

नन्द के कन्हैया मैं तो लीन्हो तेरो आसरो॥ टेर॥
तूँ हीं मेरो माता पिता, तूँ हीं बन्धु अन्न दाता,
मेरे है भरौसो एक कमल निवास रो॥ १ ॥
रैन में ज्यों चन्द को है, भँवरे के सुगंध को है,
इन्द्रिन्ह के मन को है, तन के ज्यों साँस रो॥ २ ॥
प्रजा के ज्यों भूप को है, कबूतर के कूप को है,
गनिका के रूप को है, पशु के ज्यों घास रो॥ ३ ॥

नारी के ज्यों पति को है, कवि के ज्यों मति को है,
ऐसो बिसवास तो पै कृष्ण तेरे दास रो॥ ४ ॥

(२०९)

प्रिय प्राननाथ मनमोहन सुन्दर प्यारे,
छिनहूँ मति मेरे होहु दृगन ते न्यारे॥ टेर॥
घनश्याम गोप गोपी पति गोकुल राई,
निज प्रेमीजन हित नित नित नव सुखदाई।
प्रानहु ते प्यारे प्रियतम मीत कन्हाई,
वृन्दावन रक्षक बृज सरबस बल भाई।
श्री राधा नायक यशुदानन्द दुलारे,
छिनहुँ मति मेरे होहु दृगन ते न्यारे॥ १ ॥
तव दर्शन बिनु तन रोम रोम दुख पागे,
तव सुमिरन बिनु यह जीवन विष सम लागे।
तुम्हरे सँयोग बिनु यह जीवन दुख दागे,
अकुलात प्रान जब कठिन मदन मन जागे।
मम दुख जीवन के तुम हो इक रखवारे,
छिनहूँ मति मेरे होहु दृगन ते न्यारे॥ २ ॥
तुमहीं मम जीवन के अवलम्ब कन्हाई,
तुम बिनु सब सुख के साज परम दुखदाई।
तुम देखे ही सुख होत न और उपाई,
तुम्हरे बिनु सब जग सूनो परत लखाई।
हे जीवन धन मेरे नयनों के तारे,
छिनहूँ मति मेरे होहु दृगन ते न्यारे॥ ३ ॥
तुम्हरे बिनु इक क्षण कोटि कलप सम भारी,
तुम्हरे बिनु स्वर्गहु महानरक दुखकारी।

तुम्हरे सँग बनहू घरसों बढ़ि बनवारी,
हमरे तो सब कुछ तुम्हीं हो गिरधारी।
हरि चन्द हमारो राखो मान दुलारे,
छिनहूँ मति मेरे होहु दृगन ते न्यारे॥ ४ ॥

(२१०)

रस्ते चलते पड़े कानमें, श्री राधे को नाम।
प्यारो लागे वृन्दावन धाम॥
दिवारौं पै सुन्दर लिखा है राधा नाम॥टेक॥
वृन्दावन को तजकर कान्हा, एक पैंड नहिं जावे।
ब्रज गोपिन के घरपर लाला, छाछ माँगकर खावे।
श्री लछमी नारायण दोनों, बन गये श्यामा श्याम॥ १ ॥
घरबारी संन्यासी बोले, जय राधे श्री राधे।
पंडे और पुजारिन बोले, जय राधे श्री राधे।
मथुराजी के चौबे बोले, जय राधे श्री राधे।
अहिरन की बस्ती में बोले, जय राधे श्री राधे।
भक्त लोग मस्ती में बोले, जय जय राधेश्याम॥ २ ॥
दर्शन सदा बिहारीजीके, जमुनाजी को स्नान।
रास कीरतन भजन कथा का, करे रसिक रस पान।
वास करे नित वृन्दावन में, हो जगसे उपराम॥ ३ ॥
बाल वृद्ध अरु जवान बोले, जय राधे श्री राधे।
माता बहने भाई बोले, जय राधे श्री राधे।
दूध बेचने वाली बोले, जय राधे श्री राधे।
झाड़ू देने वाली बोले, जय राधे श्री राधे।
घर के दरवाजे पर बोले, जय राधे श्री राधे।
ताँगे रिक्शे वाले बोले, जय जय राधेश्याम॥ ४ ॥

गोकुल गिरि गोवर्धन मथुरा, बरसानो नँदगाम।
खेलत ग्वाल बाल के सँगमें, कृष्ण और बलराम।
ब्रह्मा शंकर इन्द्र देवता, करते दन्ड प्रनाम॥ ५ ॥
अंबर पै धरती पै गूँजे, जय राधे श्री राधे।
जलमें गूँजे थलमें गूँजे, जय राधे श्री राधे।
जमुना की धारामें गूँजे, जय राधे श्री राधे।
लता वृक्ष पत्तोंमें गूँजे जय राधे श्री राधे।
पक्षिन की बोलीमें गूँजे, जय राधे श्री राधे।
ब्रज भूमी का कण कण बोले, जय जय राधेश्याम॥ ६ ॥
ब्रज गोपिन के चरनन की रज, उड़कर लागे अंग।
राधा माधव के दरशन की, दिलमें उठे उमंग।
प्रियतम प्यारी के चरनन में, बढ़े प्रेम निष्काम॥ ७ ॥
शेष महेश गनेश पुकारे, जय राधे श्री राधे।
ब्रह्मलोकमें ब्रह्मा बोले, जय राधे श्री राधे।
उमा शारदा लक्ष्मि बोले, जय राधे श्री राधे।
प्रेमीजन सब मिलकर बोले, जय राधे श्री राधे।
कुंजबिहारी के मन्दिर में, जय जय राधेश्याम॥ ८ ॥

(२११)

यह विनय जग करतार को, अवतार लो अवतार लो।
यह प्रार्थना सरकार को, अवतार लो अवतार लो।
प्रभु सुनिये करुन पुकार को, अवतार लो अवतार लो।
आओ जगत उद्धार को, अवतार लो अवतार लो॥ टेर॥
सर्वत्र स्वार्थ अनीति है, नहिं धर्म कर्म में प्रीति है,
भूले हैं प्राणाधार को, अवतार लो अवतार लो॥ १ ॥

बढ़ रहा अत्याचार है, मच रहा हाहाकार है,
अब हरन भूमी भार को, अवतार लो अवतार लो॥ २ ॥
गायें धरनिपर कटरही, यह हिन्दूसंस्कृति मिटरही,
करो ध्वंश पापाचार को, अवतार लो अवतार लो॥ ३ ॥
सर्वत्र सद्व्यवहार हो, हरि भक्ति का विस्तार हो,
धरि सगुन वपु साकार को, अवतार लो अवतार लो॥ ४ ॥

(२१२)

निराला मुखड़ा निराली चितवन, निराली झाँकी दिखादे मोहन।
निराली लटकन निराली मटकन, निराली बंसी सुनादे मोहन॥ टेर॥
निराली अलकन निराली मुसकन, निराली धेनू निराली बेनू।
निराली ताने सुना सुना के, हमे दिवाना बनादे मोहन॥ १ ॥
सुनादे हमको वह तेरी गीता, बतादे हमको मुकाम तेरा।
पिला के अमरित जिलादे हमको, लगा के चुटकी जगादे मोहन॥ २ ॥
बिगड़ा जो ढाँचा इस देशका है, सब और दानवता बढ़ रही है।
पड़ी है उजड़ी ये सारी दुनियाँ, इसको तूं फिरसे बसादे मोहन॥ ३ ॥
कसर न कुछ भी है आज तुलसी, गैया तुम्हारी कहाँ गई है।
रही जो बाकी वे रो रही है, इन्हें तूँ धीरज बँधादे मोहन॥ ४ ॥

(२१३)

देखो देखो री नंदजी का छोना है,
सखी लागे ये कैसा सलौना है॥ टेर॥
छोटी छोटी बहियाँ नरम कलैयाँ, संतन का चित लेत चुरैया,
संसार इसका खिलौना है॥ १ ॥
सुनो सुनो ब्रजकी सब नारी, लग जाये ना नजर तुम्हारी
करना नहीं कछु टौना है॥ २ ॥

सुनो सुनो सबरे ब्रजबासी, हाँसी में नहिं हो जाय खाँसी,
लगादो इसके दिठौना है॥ ३ ॥
ब्रजमें घर घर धूम मचावे, लूट लूट दधि माखन खावे,
फोड़े दहीका बिलौना है॥ ४ ॥
आओ ब्रजवासी मिल आओ, केशर घोरो मटुका भराओ,
कन्हैया को रँगमें भिगोना है॥ ५ ॥
'श्यामसखा' प्रानन ते प्यारो, हम मोहन के मोहन हमारो,
दधि पीओ भर भर दौना है॥ ६ ॥

(२१४)

अब जागो गिरधारी मोहन, अब जागो गिरधारी॥ टेर॥
बछरा बछरी भये छुधातुर, गैया आगइ सारी॥ १ ॥
खिरकन भीतर गौ दोहन हित, आई सकल दुहारी॥ २ ॥
कोई सखी चौकी ले आई, कोउ भरलाई झारी॥ ३ ॥
कोई अँगोछा दाँतुन लाई, दरपन लाइ राधा प्यारी॥ ४ ॥
'सूर' कहे धन धन री जसोदा, जाग उठे गिरधारी॥ ५ ॥

(२१५)

गोपाल मेरो माँगत माखन रोटी॥ टेर॥
अपने लाल हित रोटी बनाऊँ इक छोटी इक मोटी॥ १ ॥
अपने लाल की झँगुली सिवाऊँ, हीरा लाल जरि टोपी॥ २ ॥
अपने लाल को ब्याह रचाऊँ, बड़े भूप की बेटी॥ ३ ॥
'सूरदास' प्रभु जसुमति आगे, रहे धरनि पर लोटी॥ ४ ॥

(२१६)

कान्हा लाडुड़ो सो ल्यो रे, मोहे दहिड़ो बिलोवन द्यो रे॥ टेर॥
माखन मिसरी सब रस मेवा, जो भावे सोइ ल्यो रे॥ १ ॥

लाडू पूरी और जलेबी, सीरो भी थोड़ो ल्यो रे॥ २ ॥
सोवा मेथी पालक धनियाँ साग सलूनो ल्यो रे॥ ३ ॥
'सूरश्याम' बलिहारी जसोदा, इतनो हठ न करो रे॥ ४ ॥

(२१७)

मोहि बडो कर ले री मैया, मोहि बडो कर ले री॥ टेर॥
मधु मेवा पकवान मिठाई, जब माँगौं तब दे री॥ १ ॥
बड़ो होउँगो टहल करूँगो, मारूँगो सब बैरी॥ २ ॥
मारूँ मल्ल अखाड़ा जीतूं, करौं कंस की ढ़ेरी॥ ३ ॥
'सूरदास' सुन मात जसोदा, मथुरा राज करौं री॥ ४ ॥

(२१८)

मात जसोदा दहिड़ो बिलोवे, सोय रया है नंदकुमार॥ टेर॥
गाय रही मोहन की लीला, उमड़ रयो हिय में अति प्यार।
थन महँ बहे दूध की धारा, नैनन सों बहे जल की धार॥ १ ॥
बेणी पुषप गिरे धरणी पर, तन की सुध बुध रही बिसार।
सुण्यो कान्ह जब रई को घमड़को, जाग गया जग सिरजन हार॥ २ ॥
छम छम करता दोड़्या आवे, बाजत नूपुर की झनकार।
जसोमतिजीकी चढ़्या पीठपर, दोउ भुजवैयाँ गल बिच डार॥ ३ ॥
सद माखन मोहि दे दे री मैया, अब तूँ क्यों कर रही अँवार।
कहत जसोदा ठहर कन्हैया, थोड़ी देर करो इँतजार॥ ४ ॥
नहिं मानत हठ करत लाडलो, पकड़ मथानी बारमबार।
अब ही माखन लेहुँ री मैया, भूख लगी है मोहि अपार॥ ५ ॥
धन्य जसोदा बाबा नँदजी, ज्याँ घर हरि लीना अवतार।
'श्यामसखा' प्रभु प्रेमकी महिमा, ले भक्तन हित नर तनु धार॥ ६ ॥

(२१९)

म्हारो वालो भूखो छे प्रेमनो रे,
नथी जोवे आचार बिचार, प्रेम देखे जठे ही वालो जीमले रे॥ टेर॥
काचा पाका ने मोटा मोटा रोटला रे, खायो करमानो लूखो खीच॥ १ ॥
आँने जाती पाँतीकी परवा नथी रे, वालो खायो छे भीलनी का बेर॥ २ ॥
ओ तो दुर्योधन का मेवा छौंडिया रे, ओ तो खायो विदुर घर साग॥ ३ ॥
ओ तो सुदामा रा काचा तंदुल खा गयो रे, छेल्या बिना ही कर कर स्वाद॥ ४ ॥
आं ने खाबा पिवा नी परवा नथी रे, ओ तो पोते तिरलोकीनो नाथ॥ ५ ॥
अचलराम कहे प्रभु बश प्रेमने रे, प्रेमी भगतां नो राखे छे मान॥ ६ ॥

(२२०)

म्हारा मदन गोपाल, म्हारा मीठोड़ा नँदलाल।
थाँरे बिना झूठो है जगत जंजाल॥ टेर॥
थाँरे खातर सोऊँ प्यारा थाँरे खातर जागूँ।
थाँरे खातर ऊठूँ बैठूँ थाँरे खातर भागूँ॥ १ ॥
थाँरी ही परसादी पाऊँ थाँरो ही जल पीऊँ।
थाँरे खातर साँस लेऊँ, थाँरे खातर जीऊँ॥ २ ॥
थाँरा ही तो टाबर टोली, थाँरो ही घरबार।
जठे जठे रहऊँ बाला, थाँरो ही दरबार॥ ३ ॥
थाँरे खातर आऊँ प्यारा, थाँरे खातर जाऊँ।
थाँरा ही भगताँ में बैठ थाँरा ही गुण गाऊँ॥ ४ ॥

(२२१)

हमारी वृन्दावन रजधानी।
ठाकुर नंदकिशोर लाड़िलो भानु सुता ठकुरानी॥ टेर॥

बिहरत नव निकुञ्ज महँ हरदम पावन प्रीत सुहानी।
अष्ट सखिन की सेवा निसदिन अमृत रस भरि बानी॥ १ ॥
रसिकन के सिरमौर श्यामघन श्यामा रस की खानी।
रस ही रस बरसात रहत नित दोनों रसके दानी॥ २ ॥
जाहि प्रीत हित जतन करत मुनि कठिन नियम व्रत ठानी।
साधत जप तप जोग समाधी बीति जात जिंदगानी॥ ३ ॥
सोइ प्रेम सुलभ या व्रजमें गोप सुता पहिचानी।
'श्यामसखा' चुप साधि शरन लै कहु कस जात बखानी॥ ४ ॥

(२२२)

धन धन वृन्दावन ब्रज बाला।
बडैं भाग्य जसुदा के सुत सौं, परगया इनते पाला॥
कूटत छानत पीसत पोवत, गावत हरिजस आला।
हरदम हियमहँ वास करत है, मोहन मुरली वाला॥
अखिल भुवन के नाथ कृष्ण सों, बतरावत कहि लाला।
'श्यामसखा' कहुँ तीन लोक ते, इनका भाग्य निराला॥

(२२३)

धन धन वृन्दावन के बासी।
आठौं पहर रहत या ब्रजमें राधा कृष्ण उपासी॥
इन के घरपर लेत मधुकरी वीतराग संन्यासी।
याकी महिमा सोई जाने दृढ़ श्रद्धा बिसवासी॥
जा वृन्दावन की रज परसत कटि हैं लख चौरासी।
'श्यामसखा' वृन्दावन रहिये सहज मिले अविनासी॥

(२२४)

धन धन वृन्दावन के बंदर।
खाने को कछु नायँ मिले तो घुसिजावे घर अंदर।
झपट लेत है हाथ लगे जो केला सेव चुकंदर।
'श्यामसखा' ये हैं ब्रजबासी करत प्रनाम पुरंदर।

(२२५)

धन धन वृन्दावनके सुअर।
सावधान सब इनते रहना जगत पिता के कुँअर॥
छूहत ही जमुना मैया में स्नान करावे दोवर।
'श्यामसखा' ये ब्रज के वासी रक्षक हैं राधावर॥

नाग-लीला

(२२६)

नागिन— कौन दिसा से आयो रे बालक, कहा तिहारो नाम है।
कौन सखी के पुत्र कहियत, कहाँ तिहारो गाँव है।
कृष्ण— पूर्व दिसा से आयो री नागिन, गोकुल हमरो गाँव है।
मात यशोदा पिता नँदजू, कृष्ण हमारो नाम है।
नागिन— कहँ बालक तूँ डगर भूल्यो, के घर नारि रिसाइयाँ।
के तेरे मन कछु क्रोध उपज्यो, के बैरिन भरमाइयाँ।
कृष्ण— ना नागिन मैं डगर भूल्यो, ना घर नारि रिसाइयाँ।
ना मेरे मन कछु क्रोध उपज्यो, ना बैरिन भरमाइयाँ।
नागिन— लेजा रे गल हार माला, सवा लख की बोरियाँ।
याहि लै घर जाओ रे बालक नाग सों दऊँ चोरियाँ।
कृष्ण— कहा करूँ गल हार माला, सवा लख की बोरियाँ।
वृन्दावन में गढ्यो हिंडोलो तेरे नाग की करूँ डोरियाँ।

नागिन— प्रभुके सनमुख कहत नागिन, जाओ रे बालक भाजि कै।
तेरो रूप देख दया जो उपजे, नाग मारे जागि कै।
कृष्ण— भाजूं तो कुल के दाग लागे, अब भाजे कैसे बने।
होनी होय सो होय नागिन, नाग तो नाथे बने।
समाजी—चौसट चोंप मरोर नागिन नाग जाइ जगाइया।
उठो हो बलवंत जोधा, बालक जूझन आइया।

(२२७)

ताण्डव गति मुंडनपर निरतत वनमाली॥ टेर॥
फं फं फं फननि ऊपर, चं चं चं चरन धरत
बिं बिं बिं बिनति करत, नाग बधू आली॥ १ ॥
बृं बृं बृं ब्रह्मादिक, सं सं सं सनकादिक
नं नं नं नारदादि, सबै देत ताली॥ २ ॥
'सूरदास' प्रभु की बानि, किं किं किनहू न जानि
पं पं पं पग पटकत, अभय भयो काली॥ ३ ॥

(२२८)

बादरवा गरजे घनन घनन॥ टेर॥
कुञ्जन श्याम राधिका शोभित, भ्रमर करत धुनि भनन भनन॥ १ ॥
सीतल मंद सुगंध सुहावनि, पवन चलत है सनन सनन॥ २ ॥
निरतत रास करत सखियन सँग, पायल बाजे छनन छनन॥ ३ ॥
बाजत ताल मृदंग शंख धुनि, झाँझ बजत है झनन झनन॥ ४ ॥
मुरली मधुर अधर बिच शोभित, वीणा बाजे तनन तनन॥ ५ ॥
झर झर कुसुम परत बेनिन सों, ठुमकत जुग पद ठनन ठनन॥ ६ ॥
'श्यामसखा' भये शिथिल नयन दोउ डगमगात लखि मनन मनन॥ ७ ॥

(२२९)

हमरौ ठाकुर नंगम नंगा, ब्रजकी धूल लपेटत अंगा॥ टेर॥
जाकी उपमा कहि न सके कोउ, सब जग बीच निराले ढंगा॥ १ ॥
नंदभवनमें धूम मचावत, श्यामल अंग सुललित त्रिभंगा॥ २ ॥
जाकी रति इनके चरननमें, उनके भाग्य बड़े हैं चंगा॥ ३ ॥
अद्भुत खेल सखन सँग खेलत, भैया हलधर शेष भुजंगा॥ ४ ॥
जाके चरन कमल से निकसी, भागीरथि जग पावनि गंगा॥ ५ ॥
सोइहि ब्रजकी गलिन गलिनमें, डोलत ज्यों उपवन विच भृंगा॥ ६ ॥
नंद जसोदा के आँगन में, मटुकी फोरत करत अड़ंगा॥ ७ ॥
याकी कृपा जीव एहि जानत, करत सदा संतन कर संगा॥ ८ ॥

(२३०)

ओ बंसी वाला साँवरिया थाँने काईं ओलमो द्यूँ॥ टेर॥
बलि के द्वारे जाचण चाल्या, छोटा बणग्या क्यूँ।
तीन पैंड में सब जग नाप्यो, लम्बा बढ़ग्या क्यूँ॥ १ ॥
कपि सुग्रीव मित्र कर राख्यो, प्रेम बढ़ायो क्यूँ।
बिरछन लारे छिपकर के बाली ने मार्‌यो क्यूँ॥ २ ॥
मथुरा में तो जनम लियो, गोकुल में आया क्यूँ।
ब्रज बासिन पर मोहिनि डारी, प्रीत लगाई क्यूँ॥ ३ ॥
अरध रैण के समय श्याम तुम बंसी बजाई क्यूँ।
छोड्यो कुटुम्ब शरण में आई अब बिसराई क्यूँ॥ ४ ॥
बन बन माहीं फिरी भटकती, आ निठुराई क्यूँ।
'चन्द्रसखी' थे छिप्या श्याम म्हाँने तरसाई क्यूँ॥ ५ ॥

(२३१)

तो पै जाऊँ रे साँवरिया सब कुछ वारना रे॥ टेर॥
मात पिता की बंध छुड़ाई, नंदराय घर धेनु चराई।
जसुमति भरम भुलाइ झुलावे पालना रे॥ १ ॥
जबसे जनम लियो हरि व्रजमें, सबके कष्ट हरे इक पल में।
बिष का अंचल लेय पूतना तारना रे॥ २ ॥
ईन्दर कोप कियो ब्रज ऊपर, कोइ न राखन हारो भू पर।
करी कृपा तुम नखपर गिरिवर धारना रे॥ ३ ॥
खेलत गेंद सखा सँग नटवर, उछल पड़ी जमुना के भीतर।
कूद पड़े कालीदह विषधर नाथना रे॥ ४ ॥
अघा बकासुर राक्षस मारे, कागासुर की चोंच उखारे।
चोटी पकड़ कंस को मार पछारना रे॥ ५ ॥
जब जब भीर परी भक्तन पर, तब तब स्हाय करी मुरलीधर।
'सूरश्याम' बलिहार चरन चित धारना रे॥ ६ ॥

(२३२)

करो मन नंदनंदन को ध्यान॥ टेर॥
यह अवसर तोहि फिर न मिलैगो, मेरो कह्यो अब मान॥
घूँघर वारी अलकैं मुख पै, कुण्डल झलकत कान॥
नारायण अलसाने नैना, झूमत रूप निधान॥

(२३३)

बसो मेरे नैनन में दोउ चंद॥ टेर॥
गौर बरनि बृषभानुनंदिनी, स्याम बरन नंद नंद॥

गोकुल रहे लुभाय रूप में, निरखत आनँद कंद॥
जै श्री भट्ट प्रेमरस बंधन, क्यों छूटे दृढ़ फंद॥

(२३४)

रे मन चल वृन्दावन धाम, रटेंगे राधे राधे॥ टेर॥
तूँ विषयों में क्यों डोले, क्यों पाप पुन्य को तोले,
सबतें पावन राधा नाम॥ १॥
तूँ डगर डगर क्यों भटके, क्यों लोभ मोहमें अटके,
कर ले राधा पद विश्राम॥ २॥
आशा के फूल खिलेंगे, तोहि श्यामा श्याम मिलेंगे,
हो दिन रैन सुबह अरु शाम॥ ३॥
जहँ बैठी कीर्तिकुमारी, सँग मोहन रसिक बिहारी
जहां पांव पलोटत श्याम॥ ४॥

(२३५)

ओ मेरे प्यारे नंददुलारे, सुरत तेरी दिखा रे,
एक दीन खड़ा तेरे द्वारे॥ टेर॥
तुम बिनु मेरा और न कोई, छूटे बंधन सारे।
क्यों इतनी अब देर भई है, आओ कृष्ण मुरारे॥ १॥
जोग ग्यान वैराग्य भक्ति कछु, साधन नहीं हमारे।
एक तिहारो बड़ौ भरौसो, जीवित तौर सहारे॥ २॥
तव दरसन की प्यास लगी है, आकर बेगि बुझा रे।
श्यामसखा अब कहा करूँ मैं, तूँ ही मोहि बता रे॥ ३॥

(२३६)

कान्हा थाँरो भगती देओ निषकाम।
किरपा ऐसी कीज्यो जी, ओजी घनश्याम॥ टेर॥
कान्हा थाँने सिंवरूँ आठों याम,
किरपा ऐसी कीज्यो जी, ओजी घनश्याम॥ १ ॥
कान्हा थाँरो जपूँ निरंतर नाम,
किरपा ऐसी कीज्यो जी, ओजी घनश्याम॥ २ ॥
कान्हा म्हारा लोभी ने ज्यूँ दाम,
ऐसा प्यारा लागो जी, ओजी घनश्याम॥ ३ ॥
कान्हा थाँरो सुन्दर रूप ललाम,
दरशण देता रीज्यो जी, ओजी घनश्याम॥ ४ ॥
कान्हा थाँरी पूजा करूँ आठों याम,
चाकर म्हाँने राखो जी, ओजी घनश्याम॥ ५ ॥
कान्हा थाँरो दिव्य वृन्दावन धाम,
म्हाँने ही दिखाओ जी, ओजी घनश्याम॥ ६ ॥
कान्हा थाँरे चरणामें पाऊँ बिसराम,
किरपा ऐसी कीज्यो जी, ओजी घनश्याम॥ ७ ॥